ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४०

अक्तूबर **2008** वर्ष २ अंक २

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए., एम. एम. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए. (हिंदी, पंजाबी), बीएड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव

धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303**

संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

यदि आपको 'गुरमति ज्ञान' नहीं मिला या आप चंदे सम्बंधी कोई जानकारी लेना चाहते हैं या अपना पता बदलवाना चाहते हैं या कोई और जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो मो: नं: 098148-98001 पर संपर्क करें।

विषय सूची

गुरबाणी विचार

कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥
दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥
दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥
अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥
नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥
नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥१२॥ (पन्ना ११०९)

बारह माहा तुखारी की इस पावन पउड़ी में पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी कार्तिक मास के वातावरण और भारत भू-खंड में इस मास की कृषि-क्रियाओं के दृष्टांत द्वारा जीव रूपी स्त्री को विषय-विकारों से मुक्ति प्राप्त करके जीवन का आध्यात्मिक उद्देश्य पूर्ण करने की दिशा में चलने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि हे भाई! जैसे प्रभु स्वामी को अच्छा लगता है अथवा जिस प्रकार का जलवायु एवं अन्य तत्व बोई फसल को उपलब्ध होने की स्थिति में कार्तिक मास में कृषक अपनी किरत-कमाई की फल फसल काटकर एवं उपज लेकर प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार जीव अथवा मनुष्य-मात्र अपने किये कर्मों का फल लेता है अर्थात किये कर्म जीव को संस्कारों के रूप में मिल जाते हैं। अच्छे कर्मों के बदले में तत्व प्रकाशमान हो जाता है और सहज मनोस्थिति एवं आत्मिक अवस्था की ज्योति प्रकाशमान हो जाती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जीव रूपी स्त्री के सुकर्मों रूपी से जागृत आत्मिक ज्योति उसको प्रियतम परमात्मा के साथ मिला देती है जो फिर जीवन भर चाव एवं रस की स्थिति को कायम रखती है, परंतु जो जीव स्त्री सुकर्म न कर पाई वह अवगुणों में फंस कर जीते जी मर गई। यदि वह भी प्रभु-गुणों का गायन व संचार करने की तरफ आ जाए तो उसके भी विकार नष्ट होने लगते हैं।

गुरु जी फरमाते हैं कि जिन जीवों को प्रभु कृपा-बख्शिश करके अपना नाम, अपनी भक्ति प्रदान कर देता है वे अपने वास्तविक घर में स्थिर होकर बैठते हैं, उनके भीतर सदैव प्रभु-मिलाप की इच्छा बनी रहती है और वे एक मात्र यही अरदास करते हैं कि हे मालिक! जो विकार आपको पाने के मार्ग में बाधा हैं वे सभी अपनी कृपा-बख्शिश करके दूर कर दो। बंद द्वार खोलकर 'नदरी नदरि निहाल' करो ताकि छः मास की कृषक जैसी हमारी किरत-कमाई हमारे दामन में बंध सके। कहीं हमारा यह जीवन प्रभु-मिलाप रूपी फसल उपज से हीन व्यर्थ ही न चला जाए!

आओ! 'गुरु मानीओ ग्रंथ' के अनुरूप शबद-गुरु को नतमस्तक होवें!

'शबद' मनुष्य-मात्र के कल्याण का आधार है। 'शबद' सात्विक ज्ञान का मूल स्रोत है। 'शबद' ज्ञान के प्रसार का माध्यम भी है। 'शबद' ही मार्ग और 'शबद' ही मंजिल है। 'शबद' का रहस्य समझ आ जाने पर मनुष्य-मात्र जिज्ञासु बन जाता है और 'शबद' पर गहन् चिंतन करके, 'शबद' में विद्यमान भाव का मनन करके मनुष्य-मात्र साधक बन जाता है। 'शबद' का अनुसरण करके, इसके अनुरूप जीवन-यापन करने से वह गुरमुख बन जाता है। गुरमुख की गुरु प्रति आस्था, निष्ठा, उसका गुरु के प्रति समर्पण मुकम्मल होता है। आस्था, निष्ठा एवं समर्पण के समक्ष कोई उलझन, कोई समस्या, कोई परेशानी आदि कदापि ठहर नहीं सकती। इसीलिए तो गुरु अथवा 'गुरु-शबद' द्वारा सृजित गुरमुख सरबत्त का भला करने को सक्षम होता है। जो स्वयं ही किसी उलझन, किसी समस्या, किसी परेशानी में फंसा है वह इसके लिए सक्षम कैसे हो सकता है!

भले ही प्राचीन काल में भी आध्यात्मिक अनुभवियों द्वारा 'शबद-शक्ति' तो प्रतीत किया गया और उनके द्वारा इसके बारे में कथन भी किये गए परंतु तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था ऐसी थी कि जनसाधारण 'शबद-शक्ति' से लगभग अपरिचित एवं अनजान ही रहा। स्थिति यहां तक थी कि जनसाधारण का एक बड़ा भाग तथाकथित अछूतों का था जिन्हें 'शबद' पढ़ने-सुनने की अनुमति तक न थी; यदि वे कहीं छुपकर इसको पढ़ते-सुनते हुए पकड़ लिये जाते तो उनकी जुबान खींच ली जाती, उनके कानों में सिक्का पिघलाकर डाल दिया जाता।

ऐसी स्थिति को मध्य काल में जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज के द्वारा परिवर्तित किया गया जिसके लिए आप जी की अपूर्व प्रतिभा, आपके अद्वितीय व्यक्तित्व के साथ-साथ आपके महान उद्यम क्रियाशील दृश्टव्य होते हैं। आध्यात्मिक संसार में गुरु पातशाह ही एक मात्र ऐसे महान पुरुष हैं जिनका 'शबद' से सीधा आदि-जुगादी संबंध परिलक्षित होता है। *"जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो"* और *"सबदु गुरू सुरति धुनि चेला"* जैसे गुरु-फरमान इसका स्पष्ट संकेत देते हैं।

गुरु जी ने अपनी चारों उदासियों के दो दशकों के अधिक के समय में असंख्य ही प्राणियों का 'शबद' के माध्यम से पार-उतारा किया, उनका अज्ञानता एवं भ्रम का अंधकार मिटाया। गुरु जी को अगंमी आवेश रूप 'शबद' उतरता, भाई मरदाना जी इस उतर रहे एवं गायन किये जा रहे 'शबद' को अपनी रबाब की धुनें देते। ऐसे सभी उपस्थित प्राणियों का कल्याण हो जाता। गुरु जी ने 'शबद' और सरल लोक-भाषा का संयोग किया जो गुरु जी से पूर्व कहीं भी दृश्यमान नहीं होता। गुरु जी ने उच्चारण किये 'शबदों' को पोथी में लिखकर, संभालकर भाई लहणा जी

को श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में स्थापित करते वक्त यह पोथी सौंपकर और 'शबद-बाणी' का प्रवाह सभी तरह निरंतर जारी रखने के बारे में अपने मुखारबिंद से कथन करके उस अपूर्व अध्यात्म-ज्ञान-भंडार 'शबद-गुरु' श्री गुरु ग्रंथ साहिब को रूपमान करने की दिशा में शुभारंभ कर दिया था जिसको श्री आदि ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप में मूर्तिमान करने का श्रेय पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी को और पावन दमदमी बीड़ के स्वरूप में संपूर्णता प्रदान करने और इसको देहधारी गुरु-परंपरा को विराम देते हुए 'शबद-गुरु' के रूप में बाकायदा स्थापित करने का श्रेय दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जाता है। गुरु साहिब ने ज्योति जोति समाने से पूर्व पावन दमदमी स्वरूप की परिक्रमा की और इसके समक्ष नतमस्तक हुए। सिख-पंथ को स्पष्ट आदेश-निर्देश प्रदान किया कि आज से आप ने केवल मात्र इस जुगो-जुग अटल 'शबद-गुरु' की ही निर्मल अगुआई में रहना है, किसी देहधारी के आगे नहीं झुकना। 'शबद-गुरु' सिख पंथ की हरेक सुख-दुख की स्थिति में पूर्णत: आदर्श व सर्वोच्च अगुआई करेंगे।

गुरु के नाम-लेवा सिख पंथ ने गत सदियों में गुरु-फरमान पर अमल करके अपनी हर मैदान फतह और हर तरह की कठिन से कठित स्थिति में भी अपनी चढ़दी कला सुनिश्चित की। आज भी ऐसे सिख हैं जो 'शबद-गुरु' पर ही पूर्णत: टेक रखते हैं, वे किसी भी स्थिति में हों वे इसका दामन पकड़कर उसमें से उज्जवल तथा अवरत होकर खुशी, आनंद, विस्मय का अनुभव करते हैं। लेकिन कुछ सिख कहलवाने वाले भी हम में ऐसे हैं जो 'शबद-गुरु' पर पूर्ण आस्था, श्रद्धा, विश्वास न रखकर अपनी मनमति को सामने रखकर कदम-कदम पर डोलते-डगमगाते हैं और तरह-तरह की उलझनों, समस्याओं में फंसते हैं। हम सबको यह भली-भांति समझना होगा कि 'शबद' कल्याणकारी है और उसको एकाग्रचित्त होकर सुनना, समझना, मानना तथा उसमें विद्यमान विचार, भाव अथवा अलाही फरमान के अनुरूप अमल या व्यवहार करना बहुत ही आवश्यक है। वास्तव में 'शबद-गुरु' के समक्ष नतमस्तक होना इसी का नाम है। वस्तुत: सुनना मानने का और मानना अमल व व्यवहार का रूप होना चाहिए। 'शबद-गुरु' श्री गुरु ग्रंथ साहिब की एक-एक पावन पंक्ति मंगलमय है, कल्याणकारी है इस तथ्य को 'शबद-गुरु' श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरुता-गद्दी की तीसरी शताब्दी के दुर्लभ अवसर पर जानना, पहचानना और व्यवहार में लाकर अपना, अपने परिवार, अपने प्रांत, अपने देश और समस्त विश्व का भी कल्याण कर सकता है। अत: आओ! सही अर्थों में इस शताब्दी के अवसर पर गुरु नानक-नाम लेवा सिख कहलवाने वाले हम सभी 'शबद-गुरु' श्री गुरु ग्रंथ साहिब को नतमस्तक होवें। अपनी सभी चिंताएं हम 'शबद-गुरु' के समक्ष पूर्ण समर्पण के साथ नतमस्तक होकर खत्म कर सकते हैं और सभी संसार को इसकी निर्मल ओट में लाने हेतु भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं, जो इस अवसर पर हमारे लिए गुरु-कृपा के पात्र बनने के लिए अनुकूल कदम हो सकता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : मानवीय सरोकारों से संगठित समाज का डिजायन

*-डॉ. कीर्ति केसर**

श्री गुरु अरजन देव जी ने आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन करके एक सार्वभौमिक विचारधारा को स्थापित किया है। यह विचारधारा मात्र आध्यात्मिक दर्शन या भक्ति-भावना से मोक्ष की कामना का व्यक्तिमूलक अध्यात्म-दर्शन ही नहीं है बल्कि सार्वभौमिकता के पूर्ण सत्य से उपजा हुआ वह चिंतन-विधान है जो मनुष्य-जीवन को जीने का ऐसा ढंग सिखाता है जिससे *"लोक सुखीए परलोक सुहेले"* हो जाता है अर्थात् जीने का ऐसा आचरण हो कि संसार में सभी सुखी, सुरक्षित और संतुष्ट होकर जी सकें। यहां जाति-संप्रदाय, रंग-भेद का कोई बंधन न हो क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सारे प्राणियों, जीवों और वनस्पति को एक ही ईश्वर से उत्पन्न, उसी में जीने और उसी में विलीन हो जाने वाला मानते हैं जिस मूल से इस सृष्टि की उत्पत्ति है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी का प्रारंभ मूल-मंत्र से है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

(पन्ना १)

एक ऐसा ऊर्जा-स्रोत जिसका नाम सत्य है, वह काल से परे है, अतः अकाल पुरख सत्य है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मत में भक्ति उस निरंकार अनंत को मनसा-वाचा-कर्मणा, समर्पण-भाव की है। ऐसा व्यक्ति भक्ति का अहं त्याग देता है। वह अपने आप को अकाल कर्ता का साधन मात्र मानता है। अपने सब कुछ को **'दाता'** की देन मान कर उसके बनाए लोगों को देने की बात सोचता है। अतः सारांश यह कि ईश्वर पूर्ण सत्य है, उसके हुक्म, उसकी रजा से सृष्टि बनती और मिटती है। उसी से मनुष्य का अस्तित्व है। उसके गुणों के अनुसार जीवन जीने वाला मनुष्य भी उसका स्वरूप हो जाता है। परन्तु जो अहंकार के पर्दे में अपनी **'मैं'** को विस्तृत करता है वह उससे दूर हो जाता है :

-हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥

(पन्ना १)

-मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ *(पन्ना २)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मत में ज्ञान वाद-विवाद नहीं है अंतःकरण तक समाया हुआ ज्योति रूप ईश्वरीय अहसास है, जिससे सच्चा भक्त हर पल, हर क्षण उस परम सत्य के साथ जुड़ा रहता है जिससे जीवात्मा का अस्तित्व हुआ है। मानवता के आदर्श पथ-प्रदर्शक श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी के अनुसार गुरु ही मार्गदर्शन करता है। गुरबाणी के अनुसार जीवन आचरण करने वाला व्यक्ति ईश्वरीय-विधान के अनुसार चलता है और वह विधान सद्-आचरण का है। गुरमति उसकी व्याख्या करती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के धर्म को साधने के लिए योगी-वैरागी, सिद्ध, तपस्वी, सन्यासी होने की आवश्यकता नहीं है। संसार के बीच रह कर सांसारिक दायित्वों को पूरा करते हुए, सांसारिक सुखों को *"तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा"* के भाव से भोगते हुए भी अपनी

****१०८६-E**, गोबिंदगढ़, जालंधर-१४४००१, फोन : ०१८१-२२२७४९७*

'सुरति' यानि अंत:चेतना को जो व्यक्ति '੧ਓ' के साथ जोड़े रखने की जीवन-जाच सीख लेता है वही 'सिख' हो जाता है। ऐसी स्थिति में लोभ, मोह, अहंकार जैसे नकारात्मक भाव जो मनुष्य से ऐसे काम करवाते हैं, जो दूसरों के लिए दुखों, यातनाओं और भय का कारण बनते हैं, अपने आप ही शांत हो जाते हैं। अखंड जीवन का साधन ही मनुष्य को जीवन-मृत्यु के खंडित सत्य से मुक्त करता है और उसे इस सृष्टि में परम सत्य का साक्षात्कार कराता है :

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥ *(पन्ना ७)*

और सारे ज्ञान, वेद, पुराण, योग, विष्णु, महेश, सिद्ध, पीर, पवन, पानी उस अनंत की महिमा गाते हैं अर्थात् परमात्मा ही सर्वोपरि है:

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ . . .
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ *(पन्ना ६)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के धर्म में मन की स्थिरता को बहुत महत्त्व दिया गया है। यहां तक कि *"मनि जीतै जगु जीतु"* की स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि मनुष्य का मन पवन की गति से भी ज्यादा तेज चलता है और दृश्य, स्वाद, श्रवण, स्पर्श के आकर्षणों के पीछे भागते-भागते मन शरीर को थका देता है। तृष्णाओं, महत्वाकांक्षाओं की अंतहीन दौड़ मन के कारण ही चलती है। इसके कारण मनुष्य सुख एकत्र करते-करते अनेक दुखों को आमंत्रित कर बैठता है और वह अपने आप को उत्तम गुणों, उत्तम कर्मों से, जीवन की सार्थकता से वंचित कर लेता है। अत: मन को स्थिर करने के लिए एक 'ध्यान-बिन्दु' होना ही चाहिए। ऐसा ध्यान-बिन्दु ੧ਓ के सार्वभौम पासार के सिवा और कोई स्वयं सिद्ध बिन्दु नहीं है। इस तरह व्यक्ति यदि चित्त को एकाग्र करके अपने सांसारिक काम करता रहे तो उसे कोई भय, लालच, वैर-विरोध, इच्छा, महत्वाकांक्षा, असफलता, निराशा जैसी नकारात्मक स्थितियां विचलित नहीं कर सकतीं। उसकी आंतरिक ऊर्जा बढ़ने लगती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जितने भी गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान, गुरु-घर के करीबी गुरसिखों की बाणी दर्ज है, उन सबका यही संदेश है। उन्होंने अपने जीवन को ही एक प्रयोगशाला बना लिया था। जब उनके प्रयोग सफल हो गए, उन्हें अपने यूनीवर्सल सत्य का ज्ञान हो गया, उन्होंने तभी अपनी करनी, कथनी के आचरण का सार लोगों को समझाने यानि अपनी कमाई दूसरे लोगों को देने का दायित्व पूरा किया। श्री गुरु नानक देव जी गृहस्थी भी थे और जनसाधारण का दुख-दर्द भी आत्मा की गहराई तक महसूस करते थे, इसीलिए सरबत्त के भले का प्रयोजन लेकर संसार में दैवी संदेश पहुंचाने के लिए निकल पड़े। उनके इस प्रयोजन से की गई उदासियां (सत्य-प्रचार-यात्राएं) उनके व्यक्तित्व के विराट विस्तार का समय था। गुरु जी जहां जाते रूढ़ियों, भ्रांतियों, पाखंडों, अंधविश्वासों और मानसिक कलेशों को दूर करने के लिए अपनी 'अखंड सत्य' पावन बाणी संगीत में व्यक्त करने लगते। बिना किसी की निंदा, वाद-विवाद के अपनी करनी और कथनी को श्रोता के मन में स्थापित कर देते। भक्त कबीर जी खड्डी पर ताना-बाना बुनते रहते पर 'चित्त की लौ' विराट ज्योति के

साथ जुड़ी रहती। भक्त रविदास जी जूतियां गांठते, शिष्यों को उपदेश भी देते पर *"रिदै राम गोबिंद गुन सारं"* की मन:स्थिति में कोई बाधा न आती। श्री गुरु अरजन देव जी निरंतर कर्मठ, कर्मशील व्यक्तित्व पर अपने 'कर्त्ता' के दिए 'पर हिताय' का काम भी करते रहते। आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन, 'गुरु के चक्क' को आबाद करना और सद्कामनाओं, सद्भावनाओं, सद्कर्मों के प्रेरक आलौकिक श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण उनके द्वारा दिए जाने वाले ऐसे रौशन मीनार हैं जो सदियों-सदियों, युगों-युगों तक मनुष्य-मात्र के मनों को दिव्य ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करते रहेंगे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने समूची मनुष्य जाति और प्राणी मात्र को आदि सत्य के साथ ही पहचाना है। यदि मनुष्य का वजूद, उसकी करनी-कथनी का स्रोत भी वही पूर्ण सार्वभौम सत्य है तो समाज में रहने वाले मनुष्यों की 'सुरति' भी वैसी ही होनी चाहिए :

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
(पन्ना ८)

इतना ही नहीं मनुष्यों के कर्मों का लेखा-जोखा भी वही सार्वभौम सत्ता ही करती है। *"करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि"* के अनुसार ही उसकी नियति तय होती है। उनमें से जो उस सत्य के प्रकाश में स्नान कर लेते हैं उनके मुख उज्जवल हो जाते हैं और उनके साथ एक नहीं अनेक अन्यों की भी मुक्ति हो जाती है अर्थात् उन्हें भी महानता प्राप्त हो जाती है। गुरबाणी ने एक प्रभु को सदैव स्मरण रखने की बात कही है जो सभी जीवों का कर्त्ता एवं स्वामी है :

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ *(पन्ना २)*

'इक दाता' को याद करते हुए सार्वभौम सत्य को मानने वाले समाज के लिए कुछ बुनियादी नियम भी बना दिए गए। विशेष ध्यान देने की बात यह है कि ये नियम सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिए समाज में रहने वाले व्यक्ति का आचरण तय करते हैं, जिनको अपनाकर मनुष्य अपने आप को पहचाने, जीवन को जाने और सामाजिक आचरण वाला भला मनुष्य बनने का सलीका **(The only religion to be a good human being)** सीख सके, जिससे सब लोग भाईचारे के साथ "जीवन की चढ़दी कला" के हकदार हो सकें। भली-चंगी जिंदगी पाने के लिए कोशिश करने के अवसर से कोई वंचित न रहे। बाकी *"करमी आपो आपणी"* के अनुसार ही फल मिलेगा। यही सामाजिक समानता की बुनियाद है।

"सभे साझीवाल सदाइनि" की परिकल्पना को सच करने के लिए गुरु नानक साहिब ने अपने सिखों के लिए 'संगत और पंगत' यानि 'समाज और अनुशासन' (सामाजिक समानता) का नियम बनाया। इस 'पंगत' के आधार को पक्का करने के लिए 'लंगर' की परंपरा शुरू की। इस 'लंगर' शब्द की भी पूरी एक संस्कृति है। किसान अपनी फसल का एक हिस्सा गुरु की संगत के लिए देगा। लंगर में किसी अमीर-उमराव, राजे-रजवाड़े का कोई दान-अनुदान नहीं, वह पूरी तरह संगत के योगदान और सहयोग, संगत की ही सेवा से बनता है। गुरु के घर आने वाले सभी स्त्री-पुरुष एक ही पंक्ति में बैठ कर भोजन करते हैं। इससे सामाजिक भाईचारे का ताना-बाना पक्का करने में बड़ी मदद मिली। आज तक गुरुद्वारों में यह परंपरा फलफूल रही है और हर सिख, संगत के साथ पंगत में बैठ कर लंगर छकने में गुरु की कृपा का प्रसाद पाने का सुख महसूस करता है। वह

इस परंपरा का आदर करता है। इससे छुआछूत अपने आप ही मिटती चली गई। गुरुओं की धरती पंजाब इस लिहाज से देश के अन्य भागों से कई सदियां आगे है।

तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने इस रिवायत को औपचारिक 'हुकमनामा' देकर और पक्का कर दिया कि गुरु जी का दर्शन करने की इच्छा रखने वाला श्रद्धालु पहले 'पंगत' में बैठ कर 'लंगर छके' फिर 'संगत' करे अर्थात् गुरु जी के दर्शन करे। इससे ऊंची जातियों में विनम्रता का संस्कार आया और नीची जातियों में आत्मविश्वास बढ़ा तथा गुरबाणी में दोनों की आस्था पक्की होती गई। इसका प्रभाव भी बढ़ने लगा। कई धर्मों-सम्प्रदायों के लोग 'गुरु-घर' से जुड़ने लगे और नया समाज सर्वभौम भावना के साथ जुड़ने लगा। यह 'सामाजिक संगठन' का संस्कार और आगे बढ़ा जब समाज की भलाई के लिए, समाज की हिस्सेदारी के लिए श्री गुरु रामदास जी ने अपने सिखों को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा देने के लिए प्रेरित किया। इससे भी सामाजिक लोगों में समाज के प्रति दायित्व-बोध भावनात्मक रूप से पक्का होने लगा। श्री गुरु रामदास जी ने 'गुरु का चक्क' इसी कमाई से बसाया, वहां दो सरोवर बनवाए और अन्य कई योजनाओं का प्रसार किया। श्री हरिमंदर साहिब की योजना भी उनकी ही थी। जीवन की चढ़दी कला के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए 'गुरु का चक्क' में आर्थिक विकास और विदेशी व्यापार पर विशेष ध्यान दिया गया। इस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म, भक्ति-आन्दोलन का हिस्सा होते हुए भी समृद्ध, सुखी, संतुष्ट समाज के संगठन के लिए स्वयंसेवी सिस्टम का विकास करने में सक्रिय रूप से जुटा था। यह प्रक्रिया छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की 'मीरी और पीरी' के रास्ते पर चलती हुई दसवें गुरु तक 'संत-सिपाही' भाव 'भक्ति और शक्ति' की ओर बढ़ती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के धर्म में 'साध-संगत' यानि ऊंचे-सच्चे रोशन रूह शुद्ध आचरण वाले सज्जनों और आम जन का बड़ा महत्व है। इसे बहुत कुछ ईश्वर रूप ही माना जाता है। गुरगद्दी के किसी भी हुकमनामे में, मर्यादा और सेवा में साध-संगत किसी न किसी रूप में सदा शामिल रहती थी। शब्द-गुरु साध-संगत और अकाल पुरख के बीच एक लयात्मक जुड़ाव गुरबाणी की सर्वभौम भावना और संगीत के संवेदन से स्थापित हो जाता था। हृदय-परिवर्तन **(Transformation of the soul)** का यह अद्भुत प्रयोग था और उसके सकारात्मक परिणाम श्री गुरु अरजन देव जी ने देखे होंगे। इसको विराट रूप देने के प्रयोजन से ही उन्होंने लम्बे समय की अनथक मेहनत से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में एक ही विचारधारा के संतों-भक्तों-सूफियों की बाणी एकत्र की और अनेक विरोधों-अवरोधों को पार करते हुए वाङ्मय के इस महासागर को श्री आदि ग्रंथ साहिब का रूप देकर श्री हरिमंदर साहिब में स्थापित किया। सारी बाणी को राग-रागनियों में बांध कर इसे जनसाधारण तक पहुंचने योग्य बना दिया। यह कलयुग में सतयुग की बुनियाद है जिसका सूत्र उन्होंने खुद ही अपने अनुयायियों के हाथ में दे दिया :

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥रहाउ॥
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥२॥
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥ *(पन्ना १२९९)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मत में 'भक्ति' का

स्वरूप भी बदल गया है। वह ठाली बैठे व्यक्ति का व्यक्तिगत एकांतिक कर्म नहीं है। इस भक्ति में सेवा (कर्म) का संकल्प अनिवार्य रूप से जुड़ गया है। गृहस्थ में रह कर 'नाम-सुमिरन' के साथ 'किरत करो, वंड छको' यानि मेहनत करके कमाओ और इस कमाई को भी 'वंड छको' अर्थात् बांट कर भोगो, अकेले नहीं। यहां व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड़ने या कहिए कि अपने भले में दूसरों के भले को भी जोड़ने की मर्यादा बनाई गई है जो समाज के संगठन को ही मजबूत करती है। सिख धर्म के विवाह संस्कार को भी बहुत सरल बना दिया गया। 'वाहिगुरु' का नाम सर्वोपरि है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमें यह बार-बार चेताते हैं और साधसंगत में ही वह 'वाहिगुरु' बरतता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमें इसका बार-बार अनुभव कराते हैं। इस अपूर्व ग्रंथ में अंकित है कि दिन, तिथि, वार, घड़ी, पल सब ईश्वर के अधीन हैं इसलिए सभी शुभ हैं अतः लगन, मुहूर्त, ग्रह, नक्षत्रों का कोई बंधन नहीं। बहुत वैज्ञानिक आधार है कि अच्छे के लिए सोचो, अच्छा करो, बुरे के लिए तैयार रहो। 'रजा में रहना', भाणा मानने का यही अर्थ है।

स्त्री को सम्मान देने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने तब कहा था जब मध्य-कालीन समाज की कुरीतियों से स्त्री की स्थिति बहुत दयनीय हो चुकी थी। श्री गुरु अमरदास जी ने सती-प्रथा पर रोक लगा दी, पर्दा-प्रथा का निषेध किया और स्त्री को पर्दे से बाहर निकल कर संगत और पंगत में बराबर का स्थान दिया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के धर्म में 'सेवा' और 'किरत' को मान्यता मिलने से 'श्रम और श्रमिक' को सम्मान मिला और मूल्य भी। 'सेवा' को मान्यता मिली पर, बेगार का निषेध किया गया। इससे 'संगत' की सेवा अर्थात् समाज की सेवा की अवधारणा संकल्प बनकर सिख मत के अनुयायियों के आचरण में ढलती गई। सेवा में संगत का योगदान तन, मन और धन यानि श्रम, भक्ति और साधनों से होता है। लंगर की सेवा, जल-सेवा, जोड़ों (जूतों) की सेवा, सफाई की सेवा, इमारतें, सरोवर, रास्ते, सड़कें आदि समाज की सेवा से ही बनते थे। यह अनोखे ढंग की 'कम्युन सर्विस' थी जिसका आधार लोकतंत्रात्मक-मूल्य थे। इससे समाज का स्वाभाविक रूपांतर हो रहा था यानि यह मात्र सुधार नहीं था, रूपांतर था, जो भीतर से बाहर आ रहा था पूरा संस्कार बन कर। इसके लिए गुरु साहिबान ने खुद 'संगत' में शामिल होकर सिख समाज को अपने निर्माण, अपने काम खुद अपने ही साधनों से करने की सीख दी। यह स्वतंत्रता और आत्म-निर्भरता के लिए सिखाया जाने वाला सबक था जो मुगलों के शासन काल में सिख समाज गुरु साहिबान से सीख रहा था। गांवों में कुएं, तालाब, पाठशालाएं, सराय, गुरुद्वारे, रास्ते, लंगर सब सामूहिक सहयोग से बनने लगे। यह विकास की तरफ उठाया गया आम-जनों का सामूहिक प्रयास था। यह परंपरा सिख संगत में आज तक चली आ रही है। इसके देखा-देखी 'कार सेवा', 'लंगर' अब दूसरे धर्म के अनुयायी भी अपनाने लगे हैं। अतः मध्यकालीन भारत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सिख धर्म अपनी महान परंपराओं से विकासशील आधुनिक समाज का निर्माण कर रहा था, जो साहूकार और जमींदारी अर्थ-व्यवस्था से, दरिद्रता से तथा अनेक प्रकार की कुरीतियों की जकड़बंदी से मुक्ति पाने के लिए कमर कस चुका था।

इस पंथ के जीवन-दर्शन में आंतरिक स्वच्छता पर बहुत जोर दिया जाता है। तभी हृदय में नाम का वास या सुमिरन पर विशेष

ध्यान दिया जाता है। जिस मन में ੴ का वास हो वह भटक नहीं सकता, उसमें दृढ़ता, एकाग्रता अपने आप आ जाती है। कर्मों की शुद्धि भी अन्तर चेतना की प्रेरणा से होने लगती है :

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ *(पन्ना ४)*

नाम को धारण करने वाली 'सुरति' (अंतर-चेतना) ब्रह्मांड की ऊर्जा में स्नान करती है, इसलिए स्वयं ही दीप्तिमान हो उठती है और उसके द्वारा प्रेरित-संचालित कर्म भी सात्विक होने लगते हैं। अब समस्या यह है कि चित्त में स्थिरता कैसे आए? इसका रास्ता श्री गुरु नानक देव जी ने खोज लिया था 'संगीत'। भारतीय संगीत की अनेक राग-रागनियां पास्कल के गणित की थियोरमस की तरह सद् नतीजे देने वाली हैं। ये अपनी लय, ताल, सुर और स्वर की ध्वनि-तरंगों से श्रोता के दृश्य-श्रवण और स्पर्श तीन इंद्रियों से सीधे चित्त में प्रवेश कर भाव को स्थापित करती हैं। संगीत की ध्वनि-तरंगों से केवल मनुष्य ही नहीं पेड़-पौधे, वायु, आकाश और जीव-जंतु भी तरंगित होते हैं। भारतीय संगीत-शास्त्र सारी प्रकृति को लयमय-संगीतमय मानता है। विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करता है। अत: श्री गुरु नानक देव जी जब सरबत्त के भले के अमल अथवा व्यवहार लिए घर से निकले तो रबाबी भाई मरदाना जी को साथ लेकर चले थे। जब भी इलाही बाणी उनके स्वर में उतरती, भाई मरदाना जी की तंत्री की झनकार भी अपनी मधुर तरंगों से वातावरण को गतिमान बना देती। भोले-भाले लोग आंखें बंद करके बैठ जाते और अपने भीतर किसी अनोखे आनंद का अनुभव करते और बाबे नानक के मुरीद हो जाते, कोई संदेह नहीं, कोई प्रश्न नहीं। कई मन एक ही लय में पिरोए जाते, जो गुणी-ज्ञानी, वादी-प्रतिवादी होते, बाबा जी उन्हें भी लयात्मक संवाद से ही अपना प्रयोजन समझा देते। अत: श्री गुरु नानक देव जी की इस पगडंडी को श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के उत्तम मानवीय संदेशों **(Super Human Sensibilities)** को राग-रागनियों में बांध कर श्रोताओं के मन को 'युनीवर्सल सत्य' के साथ जोड़ने वाली पक्की सड़क बना दिया और 'कीर्तन' का नाम दिया। 'जाप या सुमिरन' की आंत्रिक वास्तविक स्थिति को प्राप्त करने के लिए कीर्तन सबसे अधिक शक्तिशाली साधन है। आंखें बंद करके बैठा साधक कीर्तन में अपने अंदर अपने साथ बैठ कर अनजाने में ही अपने आप को पाने का प्रयास करने लगता है। इस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब केवल वाङ्मय ही नहीं संगीत का भी महासागर हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से संगीत और गुरबाणी की गुणात्मकता का प्रभाव भी पूरे पर्यावरण एवं जीवों पर बड़ा सकारात्मक होता है। प्रो. पूरन सिंघ ने किसी वैज्ञानिक का जिक्र करते हुए अपने एक लेख में बताया है कि श्री हरिमंदर साहिब की औरा में ऊर्जा का स्तर अन्य स्थानों की अपेक्षा बहुत ऊंचा है। अभी कुछ दिन पहले भी एक विदेशी पर्यावरण वैज्ञानिक ने भी इस बात की पुष्टि की थी। उसने यह भी कहा था कि कैंपस के अंदर आकर इसीलिए सुखद महसूस होता है। पश्चिमी जीवन-दर्शन में विज्ञान के आधार ज्यादा सक्रिय हैं। वहां आम जीवन में सकारात्मकता का बहुत अमल होता है। मानसिक और शारीरिक तौर पर अच्छी सेहत के लिए इसका आंतरिक केमिस्ट्री से सीधा सम्बंध है, क्यों नकारात्मकता शरीर की केमिस्ट्री में

जहरीले रासायन के रसाव को प्रेरित करती है और बायोलोजीकल संतुलन बिगाड़ती है, इसीलिए वे आम तौर पर सकारात्मक आचरण का पूरा अभ्यास बचपन से ही करते-कराते हैं। 'क्षमा कर दो, गुण को देखो, प्रशंसा करो', प्रेम, दया, परोपकार, दूसरों की मदद करना, चैरिटी, सेवा (रोगियों, अपाहिजों की) और कनफैशन जैसे आचरण पर बहुत जोर दिया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पूरा अमल ही इस वैज्ञानिकता पर आधारित है जिसे आज पहचानने की आवश्यकता है। यह सबसे नया धर्म नये युग की बात करता है। बस जरूरत है उसे पूरे वैज्ञानिक तरीके से समझने और समझाने की। कीर्तन और वह भी गुरबाणी का, साक्षात संजीवनी जैसा काम करता है। *"सरब रोग का अउखदु नामु"* में कोई गहरा वैज्ञानिक रहस्य है, इसकी इसी दृष्टि से खोज होनी चाहिए।

अमेरिका की कई युनीवर्सिटियों में रोमन कैथोलिक चर्च तथा अन्य संस्थायों द्वारा बाईबल की स्थापनाओं पर वैज्ञानिक प्रयोग करवाए जा रहे हैं। कैलिफोर्निया की स्टैंफर्ड युनीवर्सिटी इसमें सबसे अग्रणी है। इसकी प्रशंसा करते हुए हमें इसका अनुकरण करना उचित है। इस धर्म के आस्थावानों को मैं याद दिलाना चाहती हूं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म जन-साधारण के लिए है। कार्ल मार्क्स का कम्यून विधान तो आधा-अधूरा है पर बाबे नानक का कम्यून सिस्टम (perfect complete commune system) सम्पूर्ण है। इसे जीवन के बीच ही रहने दिया जाए, इसे जहां पर भी संभव हो सके बाहरी रूप एवं दिखावे से ऊपर अथवा निर्मल रखा जाए जो इसका मूल वास्तविक स्वरूप है। पूरे विश्व-समाज के हित में होगा। इसके लिए हमें उस धर्म को सर्वोपरि रखना होगा जिस धर्म की श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्तुति एवं व्याख्या की गई है। बाणे के साथ-साथ बाणी, इसके निर्मल संदेश को सदैव सम्मुख रखने की जरूरत है। जहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म हो वहां नशे, भ्रष्टाचार, हिंसा, अंधविश्वासों का तो सफाया हो जाना चाहिए। दुख से लिखना पड़ रहा है कि गुरुओं की धरती पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के विद्यमान होते हुए भी स्थिति दयनीय बनी हुई है।

देश में अमानवीय शक्तियां इस भारत-भूखंड को, समाज के मानस को फिर से रोगी बनाने को तैयार बैठी हैं। तथाकथित ऊंची जातियों की व्यवस्था मध्य-कालीन स्थितियों को वापस लाने की पूरी कोशिश कर रही है। परंतु एक अच्छी बात यह है कि लोग अब पढ़-लिख गए हैं, तर्कशील हो रहे हैं, अतः इस वैज्ञानिक धर्म की व्याख्या को चाहते हैं। अब सभी इच्छा वालों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन हेतु उपलब्ध कराना समय की मांग है। इसी से सब मानवता का कल्याण संभव है :

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ *(पन्ना १४२९)*

आज के संदर्भ में इस पावन ग्रंथ की व्याख्या श्री गुरु ग्रंथ साहिब के धर्म में विश्वास रखने वाले हर व्यक्ति को सदा याद रखने की जरूरत है, यानि आचरण के थाल में तीन वस्तुएं—सत्य, संतोष और विचार (Truth+ Consistancey+Intergrity of thought) को रखना चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के इस ३००वें गुरता-गद्दी दिवस पर इस उत्तम मानवीय धर्म की महान परंपराओं को अमल के लिए संकल्प सामूहिक तौर पर लिए जाएं। उनके लिए ऐक्शन प्लान फ्रेम किए जाएं जो समयबद्ध हों जिससे 'शोषण-मुक्त, निर्भय, निरवैर, निर्दोष

(शेष पृष्ठ १८ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्व-बन्धुत्व का संदेश

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी का मूल संदेश ही 'सरबत्त का भला' है। सिख की प्रतिदिन की प्रभु-चरणों में अरदास है, *"नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला"।* गुरु नानक पातशाह जी ने जिस एकमात्र पारब्रह्म, परमात्मा, समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामी अकाल पुरख जी का नाम-आराधन करने का मार्ग विश्व-मानव को सुझाया, उस नाम को आधार बना कर, भक्ति-साधना, सुमिरन करता हुआ व्यक्ति, निरंतर चढ़दी कला, सतत् विकासोन्मुख रहता है। प्रतिपल वह अपने अंदर नित नूतन स्फूर्ति, आशा, विश्वास, सुख व आनंद की अनुभूति करता है। प्रतिपल उसके अंदर की चैतन्य आस्था उसे प्रभु के भाणे, हुक्म, उसकी आज्ञा में विचरण करने की प्रेरणा देती है। जीवन के प्रत्येक पल में प्रत्येक कर्म, वह प्रभु-आदेशानुसार करता है और पूर्ण आस्था में बद्ध, ऊर्ध्वमुखी, नित प्रफुल्लित मानसिकता में जीता, वह सरबत्त के भले की कामना करता है। उसे यह विश्वास होता है कि चतुर्दिक उस सर्वशक्तिमान प्रभु का ही नूर ज्योतिर्मान है, सारी मानवता उस नूर से ही उत्पन्न है:

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

उदारचेत्ता व समदृष्टि मानव *"खालिकु खलक खलक महि खालिकु"* के दर्शन करता है, अनुभव करता है—*"सभ महि जोति जोति है सोइ ॥"* गुरु नानक साहिब जी का जिस युग में अवतरण हुआ उस युग में भारत की भूमि पर हिन्दू-तुर्क में आपसी द्वन्द्व चल रहा था। दोनों अपने-अपने मत को श्रेष्ठ मान कर परस्पर कलह-क्लेश में व्यस्त थे। हिन्दू-ब्राह्मण अहंकारी, पाखण्डी, कर्मकाण्डी आडम्बरों में उलझा था, मुसलमान कट्टरपंथी बना था। आपसी वैर-विरोध की दीवार साधारण जनमानस के लिए अशान्ति, निराशा और घोर संताप का कारण बनी हुई थी। गुरु साहिब ने नारा बुलंद किया—*"ना को हिंदू न मुसलमान।"* भाव सभी उस एक प्रभु की संतान हैं, जो कुल जगत का स्वामी है, पिता है—*"एकु पिता एकस के हम बारिक . . . ॥"* आपसी भेद-भाव को मिटा कर उन्होंने कुल मानवता के लिए प्रेम, मिलाप, भ्रातृभाव और सांझीवालता का मार्गदर्शन किया जो मानता है:

—ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ *(पन्ना ६७१)*

—ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ *(पन्ना १२९९)*

इस भाव को आधार बना मानव बन्धु-भाव को विकसित कर विश्व-बन्धुत्व की भावना को परिपक्व करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का शुभारंभ जिस मूल-मंत्र से किया गया है वह स्वयं में समग्र मानवता को एक कायनात के तले ला खड़ा करता है। गुरबाणी का मूल-मंत्र है : *"ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥"* अर्थात्

**१८०१-सी, मिशन कम्पाउण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर-२४७००१ फोन ०१३२-२७२२३७२*

समग्र सृष्टि का रचयिता एक है, उसी का नाम सत्य है, वह समग्र सृष्टि को रचने वाला कर्त्ता है, सर्वव्यापी शक्ति है, निर्भय है, उसका कोई शत्रु नहीं, वह कालातीत है, किसी काल की सीमा में बंधा नहीं है, वह अयोनि है, स्वयं प्रकाशित है, गुरु की अपार कृपा से उसे अनुभव किया जा सकता है।

ऐसी एकमात्र स्वत: स्वयं-भू शक्ति का सभी जाप करें और नित्य सुखों को प्राप्त करें। आपसी कलह-क्लेश को दूर कर उस समर्थ शक्ति के दिव्य गुणों को जानने का प्रयास करें, उसका नैकिट्य प्राप्त करने का प्रयास करें। परंतु प्रभु की निकटता, उसकी रहमत, उसकी बख्शिश हमें तभी प्राप्त होगी जब हम उस जैसे दिव्य गुणों के धारणी बनेंगे। प्रभु सत्य है, हम सत्यमार्गी बनें, वह निर्भय है, हम भी संकुचित भय की भावना से ऊपर उठें, नाम-सुमिरन द्वारा आत्मा को बलवान बनाएं; प्रभु निरवैर है, हम भी शत्रु-मित्र भावना से ऊपर उठें। सारी मानवता से प्रेम करें। कौन भला, कौन बुरा, इस ईर्ष्या-द्वेष-पूर्ण चर्चा का त्याग करें :

बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्हारे ॥ *(पन्ना ३८३)*

सभी जीव उसी परमात्मा के द्वारा बनाए गए, उसी के हुक्म में क्रियाशील हैं, इसलिए किसी को भी बुरा-भला कह कर उसका दिल न दुखाएं :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

ऐसा ज्ञान गुरु की कृपा से प्राप्त होता है। गुरु, ज्ञान का प्रकाश देता है, अन्त:चक्षुओं को खोल भ्रम दूर करता है :

—कहु नानक गुरि खोए भरम ॥
एको अलहु पारब्रहम ॥ *(पन्ना ८९७)*

गुरु बताता है :

—सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ *(पन्ना ९७)*

वर्तमान रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी ही *"प्रगट गुरां की देह"* है। सिख किसी देहधारी गुरु को नहीं मानता। गुरु का शब्द 'गुरबाणी' ही उसका गुरु है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जो विश्व का एक अद्वितीय संकलन है, स्वयं ही भेदभाव से दूर विश्व-बंधुत्व की एक विलक्षण मिसाल है, इस बाणी में विश्वात्मा की गूंज है। इसलिए यह किसी एक वर्ग या सम्प्रदाय के लिए नहीं है। उसकी सत्य-बाणी कुल जगत के एक मात्र स्वामी पारब्रह्म के आदेशानुसार भक्त-जनों के मुखारबिंद से निसृत है। यह धुर की बाणी, अमृत-बाणी प्रभु के हुक्म से ही संतप्त प्राणी मात्र को आत्म-जीवन, सुख-शांति एवं सुकून प्रदान करने के लिए रची गई है। यह इहलोक और परलोक दोनों पक्षों को संवारने-सजाने वाली बाणी छ: गुरु साहिबान, १२वीं सदी से लेकर १७वीं सदी के मध्य तक हुए प्रमुख १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान तथा प्रमुख गुरसिखों—भाई सत्ता जी और भाई राय बलडण्ड जी, भाई मरदाना जी के नाम पर महला पहला द्वारा उच्चारण और बाबा सुंदर जी के पावन बोल हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने इस पुनीत शब्द-संकलन को ही गुरु मानने का आदेश देकर इसे प्रत्यक्ष गुरु-रूप मान कर इसके आगे शीश झुकाने का हुक्म देकर सिद्ध कर दिया कि जात-पात, ऊंच-नीच, वर्ण, नस्ल, कुल सब बेमाने हैं, सर्वोपरि है प्रभु का यश-गायन। अकाल पुरख जी के चरणों से जुड़ी लिव की अनुभूति से निकले शब्द चाहे वे हिन्दू ब्राह्मण के हैं, खत्री के हैं, मुसलमान के हैं, सूफी भक्त के या जाट मिरासी के हैं, सब सम्मानयोग्य हैं। प्रभु-स्तुति के शब्दों का सत्कार

है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी, जो जुलाहे थे, उनकी बाणी है, शेख फरीद जी की बाणी और ब्राह्मण परिवारों से संबंधित भक्तों की बाणी भी है। महत्त्व बाणी का है, वर्ग, सम्प्रदाय या जाति का नहीं। विश्व धर्मों के इतिहास में ऐसी मिसाल कहीं भी प्राप्त नहीं होती। सिख धर्म का पूज्य ग्रंथ कुल मानवता की संपत्ति है, विश्व-बन्धुत्व का ज्वलन्त उदाहरण है।

सिख गुरु साहिबान को कोई फर्क नहीं पड़ता कि उस परम शक्ति को किसी भी नाम से पुकारा जाए। इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उस परम शक्ति को अनंत नामों से पुकारा गया है। गुरु साहिब का फरमान है :

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ (पन्ना ८८५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में परमात्मा के लिए कोई नाम रूढ़ नहीं है। उसे निराकार, निर्गुण, सकल ब्रह्मांड का स्वामी, अनन्त, अपार, अपरिमेय, अगम्य, अगाध, परम शक्ति माना गया है; जिसका न कोई रंग है, न रूप है, न वर्ण है, न नाम है। उस परम पिता परमात्मा को किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। हिन्दू संस्कृति में प्रचलित प्रभु के केशव, हरि, राम, गोपाल, गोविंद, मोहन, दामोदर, ओम, पारब्रह्म, नारायण, जगदीश, मधुसूदन, मुरारी, बनवारी, मुरली मनोहर, श्रीधर आदि अनेक नामों का प्रयोग गुरबाणी में किया गया है, तो वहीं मुस्लिम संस्कृति में प्रचलित नामों को भी स्थान दिया गया है। इसमें करीम, रहीम, खुदा, अल्लाह, परवरदिगार, साहिब, गरीब नवाज, मेहरबान, पाक, दिलावर, खालिक आदि संज्ञाओं तथा विशेषणों से भी प्रभु को याद किया गया है, यथा :

कारन करन करीम ॥
सरब प्रतिपाल रहीम ॥
अलह अलख अपार ॥
खुदि खुदाइ वड बेसुमार ॥१॥
ओं नमो भगवंत गुसाई ॥
खालकु रवि रहिआ सरब ठाई ॥१॥रहाउ॥
जगंनाथ जगजीवन माधो ॥
भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥
रिखीकेस गोपाल गुोविंद ॥
पूरन सरबत्र मुकंद ॥२॥
मिहरवान मउला तूही एक ॥
पीर पैकांबर सेख ॥ (पन्ना ८९६-९७)

कुल मानवता में बन्धुत्व की अनुभूति जागृत करने का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त क्या किसी अन्य धर्म-ग्रंथ में प्रयास प्राप्त होता है? गुरु साहिबान को राम और रहीम, अल्लाह और पारब्रह्म में कोई अंतर ही अनुभव नहीं होता। गुरबाणी में अनेक स्थलों पर यह स्पष्ट किया गया है कि संपूर्ण जगत के एक मात्र स्वामी के अनेक नाम हैं। इन असंख्य नामों का एक जिह्वा द्वारा तो कथन ही नहीं हो सकता :

—अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥ (पन्ना ११३५)
—तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ (पन्ना १०६७)

यही नहीं अन्य धर्म-संस्कृतियों के आपसी टकराव को मिटाने के सतत् प्रयास में परमात्मा की विराटता को कुदरत के प्रत्यक्ष प्रकट रूप में साकार सगुण करके दिखाया गया है। समग्र सृष्टि के अनंत जीवों के नेत्र, पाद, हस्त, मुख उस एक विराट के साकार रूप ही तो हैं। नाना प्रकार की वनस्पति, जीव-जन्तु, कुदरती नज़ारे, वन, पर्वत, सागर, समुद्र, सब अनन्त प्रभु का साकार स्वरूप ही तो हैं। कुदरत की विराटता के माध्यम से तमाम प्राणी मात्र को

एक ही स्रोत-सूत्र से बंधा दिखा कर परस्पर प्रेम-भाव से बांधा गया है। प्रभु हम सबका सांझा पिता है—*"तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥"* हम सबका रूप-स्वरूप उसी का रूप है—*"सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥"* और इसलिए वह हम सब की प्रतिपालना एक समान अत्यन्त प्रेम से करता है। वह भक्तवत्सल है, परम कृपालु है, दयालु है। साक्षात प्रत्यक्ष होकर अपने दासों-सेवकों की रक्षा करता है :

संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ (पन्ना ७८३)

भावना के स्तर पर ऐसे प्रेरणादायक मधुर बोल समग्र मानवता को एक स्तर पर निकट सम्बंधों में बांधते हैं। मानव-मात्र के हृदय में एक ही जैसी आशापूरित भाव-तरंगें हिलोरे लेती प्रतीत होती हैं और फिर बाणी को जो राग-संगीत में निबद्ध किया है यह तो गुरु साहिबान की एक अद्वितीय कला सिद्ध होती है कुल मानवता को भावनात्मक स्तर पर बांधने की। राग में वह अद्वितीय शक्ति है जो समग्र मानव मन को सहज ही प्रभावित करती है। संगीत और मानव-मन का सहज स्वाभाविक मौलिक सम्बंध है। मानव सभ्यता ने जन्म के साथ ही संगीत से नाता जोड़ा है। विश्व भर के प्राणी राग, नाद, संगीत को जीवन का अभिन्न अंग मान इसमें सुख, सुकून और आनंद की खोज करते हैं और फिर गुरबाणी-संगीत का तो अपना ही विशेष महत्त्व है। देश-विदेश के प्राणी-मात्र गुरबाणी-कीर्तन की महानता को स्वीकार करते हैं, इसे परम आध्यात्मिक शान्ति का स्रोत मानते हैं। आज विश्व भर में गुरबाणी-कीर्तन के अनन्त प्रेमी हैं। राग के साथ-साथ शबदों में जिन उच्च रूहानी प्रेम, विरहानुभूति की अभिव्यंजना हुई है, वह सहज ही मानव मन को विमोहित कर देती है। गुरु साहिबान, भक्त साहिबान तथा अन्य महपुरुषों की परमात्मा देव के प्रति जो अनन्य एकाग्रता, एकसुरता, प्रभु-चरणों में लिवलीनता, तन्मयता, तद्‌मयता की स्थिति में भाव-मणियां व्यक्त हुई हैं, विरह, प्रेम, मिलन की लालसा, उत्कंठा, प्यास, दर्द-तड़पन, प्रेम-विह्वलता की जो अभिव्यंजना हुई है उसने विश्व भर को अपनी कोमलता और मधुरिमा में बांधा है इसीलिए इसके काव्य पक्ष का विवेचन करते हुए विश्व के उच्च कोटि के साहित्य समीक्षकों ने **'Big Epic Poetry of the Age'** भाव युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य महाग्रंथ माना है। *"मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई", "मै नीरु वहै वहि चलै जीउ", "मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी", "मै बनजारनि राम की", "मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ"* जैसे विरह, प्रेम-सिंचित महावाक्य विश्व-मानव को भावना के सांझे स्तर पर ला खड़ा करते हैं।

विश्व-मानव ऐसी प्रेमसिक्त अनुभूतियों की सरलता से आनन्दानुभूति कर सके इसके लिए भाषा भी सरल, सहज व बोधगम्य अपनाई गई है। भाषा के प्रति गुरु साहिबान का कोई विशेष आग्रह नहीं रहा है। गुरु साहिबान का मकसद तो भटके प्राणी-मात्र को साधना, भक्ति और सत्य-मार्ग के साथ जोड़कर एक स्वस्थ चिंतन प्रदान करना था। मूल रूप से पंजाबी क्षेत्र की भाषा होते हुए भी इसमें विविध बोलियों और भाषाओं का प्रयोग हुआ है, जो विश्व स्तर पर आम जनसाधाराण को जोड़ता है। इसमें ब्रज भाषा, हिंदवी, संस्कृत, अरबी, फारसी आदि के साथ विविध क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मिश्रण है, इसीलिए इसे अंग्रेज विचारक ट्रंप ने 'बोलियों का खजाना' कहा है। भाषा के स्तर पर भी यह विश्व-मानव को जोड़ता है। 'गुरु ग्रंथ साहिब एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण' नामक ग्रंथ में डॉ.

मनमोहन सहगल का मानना है कि यह पुनीत बाणी विश्व संस्कृतियों का अनूठा संगम है। भारतीय संस्कृति के तो सभी संस्कारों, तीज त्यौहारों, रहन-सहन, पोशाक, खान-पान, साहित्यिक रुचियां, धर्म-ग्रंथ, इतिहास-मिथिहास आदि के विवरण इसमें मिलते ही हैं, भारतीय रुचि के व्यवसाय, व्यापार, खेती, उद्योग-धन्धे आदि के विशद विवरण भी इसमें प्राप्त होते हैं जो विश्व की संस्कृतियों को एक ही स्तर पर लाने में सहायक हैं।

मानव संस्कृति का, मूल व्यक्ति का सभ्य आचरण होता है। जिस समाज के लोग जितने अधिक ज्ञानवान, विवेकवान, शिक्षित होते हैं, सुरुचिपूर्ण, आचार-व्यवहार, बोल-चाल, परस्पर व्यवहार में शिष्ट व सहनशील होते हैं और वह समाज उतना ही अधिक उत्तम संस्कृतिवान माना जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी केवल परलोक सुधार, परमार्थ ज्ञान, आध्यात्मिक विकास के लिए ही निर्देश नहीं देती, सिख गुरु साहिबान का उद्देश्य तो इहलोक को भी संवारना था। वे एक सुंदर सभ्य संस्कृतिवान समाज बनाना चाहते थे इसीलिए उन्होंने उपदेश दिया कि सत्य की खोज, सत्य से साक्षात्कार, सचिआर बनने की जिज्ञासा एक उत्तम प्रयास है परन्तु इससे भी ऊपर है सत्य का आचरण करना :

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

सत्य-आचरण के लिए मनुष्य को दिव्य गुणों को अपनाना है। सेवा, परोपकार, सहानुभूति मानव-मात्र के प्रति प्रेम-भावना मनुष्य को उत्तम आचरणवान बनाती है। दरअसल यही उसका सच्चे कर्मयोगी का स्वरूप है। मानव-जीवन एक संग्राम-क्षेत्र है जहां मानव को अपना व्यक्तिगत जीवन भी संवारना है और धर्म-युद्ध के लिए भी तत्पर रहना है; अंदर की बुराइयों से जूझना है और समाज में फैली कुरीतियों से भी लड़ना है; प्रभु-प्रेम की गली में प्रवेश पाने के लिए समाज की सेवा करते हुए लोक-भलाई के लिए शीश-दान भी करने को तत्पर रहना है। यही सच्ची जीवन-मुक्ति है। केवल कर्मकाण्डी पाखंड पूरे कर मुक्ति के दावेदार बनने की यहां कोई गुंजाइश नहीं है। ऐसी वैज्ञानिक विचारधारा और तर्क की कसौटी पर खरी उतरी मान्यताएं, बिना किसी पक्षपात और कट्टरवाद के निश्चय ही समग्र विश्व मानव-समाज को एक ही घेरे में बांधती हैं।

Self realization- निज स्वरूप की पहचान उस परम सत्य को जानने और उस तक पहुंचने, भाव पूर्ण सचिआर बन कर परम विराट रूप में तदाकार होने के लिए हमें अपने चतुर्दिक वातावरण को साफ, सुथरा, खुशनुमा, गुणवत्ता वाला बनाना होगा। विश्व-मानव में ही प्रभु के रूप-स्वरूप के दर्शन हमें होंगे। ऐसी भावना से हम विश्व-मानव से जुड़ेंगे कि :

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥
(पन्ना ६७१)

परस्पर मित्र-भाव को विकसित करने के लिए गुरु साहिब हमें उपदेश कर रहे हैं कि हम ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, हउमै का त्याग करें अपने तमाम अवगुण धीरे-धीरे त्यागें और अहं भाव छोड़ कर दूसरों के गुणों को अपनाएं :

साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥
(पन्ना ७६६)

किसी के पास यदि गुण हैं तो हम भी उन गुणों की सुगन्ध लें :

गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥
(पन्ना ७६६)

क्षमा जैसे महान गुण को अपनाएं। क्षमा जैसा महान गुण और कोई नहीं है। किसी के

गुनाहों को नज़र-अन्दाज करने से मन हमेशा शांत और स्थिर रहता है और किसी प्रकार का तनाव नहीं रहता :

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ (पन्ना २२३)

और जो इस गुण से वंचित रहते हैं वे :

खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ (पन्ना ९३७)

बाबा फरीद जी तो यहां तक कहते हैं कि:

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८१-८२)

गुरु-उपदेश है :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुख नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

वस्तुत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन ही समग्र विश्व की कल्याण-भावना को दृष्टि में रख कर किया गया है। विश्व धर्मों के इतिहास में अन्य कोई धर्म-ग्रंथ उसके अपने प्रणेता व संस्थापक के द्वारा नहीं रचा गया है, परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब गुरु साहिबान के निज पावन हाथों से लिखी सच्ची रूहानी बाणी है, जिसे पंचम गुरदेव जी ने अपनी और पहले चार गुरु साहिबान के अलावा अन्य भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान और गुरसिखों की बाणी सहित भाई गुरदास जी से लिखवा कर सारे संसार को प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया है। ऐसी महान बाणी कामना करती है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
(पन्ना ८५३)

प्रेम की वर्षा समग्र संसार का स्पर्श करे, ऐसी गुरदेव जी की कामना है :

—किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ (पन्ना ६५२)
—सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥
(पन्ना १२५१)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी कुल संसार की आर्थिक विपन्नता दूर कर, दुख-संताप, दरिद्रता से समस्त संसार की मुक्ति की कामना करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी तो ऐसे मानव-समाज की परिकल्पना करती है जहां कोई किसी का गुलाम न हो, कोई किसी का शोषण न करे, सभी मानव पूर्ण आजादी से अपने मूलभूत अधिकारों का सुख उपभोग करें। मनुष्यता के लिए एक सर्वोत्तम संविधान प्रस्तुत करते हुए गुरु साहिबान तो ऐसे लोकतन्त्र की रूप-रेखा प्रस्तुत करते हैं जहां *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन"* की अनुभूति से स्वतन्त्र, स्वच्छन्द मानव विचरण करे :

हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा।
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥ (पन्ना ७४)

आज के इस पदार्थवादी युग में जहां मनुष्य मनुष्य के बीच खुदगर्जी की जंग छिड़ी हुई है, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक दृष्टि से कुल संसार पतनोन्मुख हो रहा है, परमाणु-शक्ति के इस युग में जबकि बड़ी और छोटी शक्तियों में परस्पर विचारों की जंग छिड़ी हुई है तथा अधिक से अधिक शस्त्र बन रहे हैं विश्व की शान्ति खतरे में है, मानव-जीवन असुरक्षित और भयभीत है, आतंकवाद मुंह फैलाए खड़ा है, आम आदमी का जीवन मौत की कगार पर है, ऐसे में बहुत जरूरत है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए। जैसा कि डॉ. जे. सी. आरचर ने भी कहा है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षा

विश्वव्यापी और व्यवहारिक है। इसमें दिए गए प्रेम और शान्ति के संदेश की आज निश्चय ही बहुत अधिक आवश्यकता है—**"It is a universal and practical religion. World needs its teachings of peace and love."**

हकीकत है कि पिछली पांच सदियों से इस पावन बाणी ने संसार भर को आत्मिक उन्नति, आध्यात्मिक विकास, सद्‌भावना और सदाचारगत मूल्यों के प्रचार-प्रसार, सामाजिक और राजनैतिक मूल्यों की प्रस्थापना द्वारा समग्र विश्व को अमन, प्रेम, शान्ति, विश्व बन्धुत्व और विश्व भाईचारे का जो संदेश दिया है उसने समग्र मानवता के सुख-सुधार में जो अहम भूमिका निभाई है। आज भी जब विश्व स्तर पर धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सद्‌भावनागत, आचरणगत मानव-मूल्यों का विघटन हो रहा है, मानव-जीवन अशान्त, अतृप्त, संतप्त भयभीत और असुरक्षित हो रहा है, ऐसे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन उपदेश ही हर क्षेत्र में हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं और विश्व-मानव को प्रेम के सूत्र में बांध सकते हैं। भटकी मानवता को एक योग्य और सक्षम गुरु ही सही दिशा का निर्देश दे सकता है। इसलिए तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने पुनीत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को *"प्रगट गुरां की देह"* कह कर पावन शब्द-गुरु के चरणों से सिख-पंथ को लगाया है। युगीन समस्याओं का समाधान शब्द-गुरु की शिक्षा ही कर सकती है। शब्द-गुरु से दूर रहने पर ही जग भटका हुआ है। शब्द-गुरु ही सब का स्वामी है। इसकी शरण में आकर ही हलत-पलत के सुखों की प्राप्ति होगी :

—सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ (पन्ना ६३५)

—इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ (पन्ना ९२२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब . . . *(पृष्ठ ११ का शेष)*

और निरोग' समाज की परिकल्पना को साकार करने के लिए रास्ते बनाए जा सकें और श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर जी ने जिस सर्वभौम भाईचारे के लिए कुर्बानियां दीं उसका संदेश धरती की चारों दिशाओं में फैलाया जा सके। बढ़ते टकरावों, भयानक रूप धारण करती बहुप्रकारी हिंसा और कत्लोगारत के भस्म सुर के बढ़ते कदमों को रोकने में सिख समाज बहुत सकारात्मक सक्रिय रोल अदा कर सकता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगठित प्रयासों की जरूरत है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परंपराओं का पालन किया जाए और ऐसा वातावरण बने कि विश्व-बंधुत्व की भावना से इस आरती का संगीत चारों दिशाओं में गूंजने लगे :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥
कैसी आरती होइ ॥
भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ (पन्ना १३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना

-डॉ अमृत कौर*

आधुनिक युग में मनुष्य चन्द्रमा तक जा पहुंचा है, परन्तु उसे इस पृथ्वी पर शान्तिपूर्वक रहना नहीं आया। गुरु नानक साहिब के युग की भांति आज भी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक संघर्ष, धर्म के नाम पर लड़ाइयां, झगड़े, कत्लेआम साधारण बात हैं। वर्ग-भेद, वर्ण-भेद, जाति-भेद, भाषाई-भेद, प्रान्तीयता की भावनाओं से ऊपर उठकर धार्मिक वैमनस्य और भेदभाव को मिटाकर सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोना ताकि राष्ट्र के नागरिक शांतिपूर्वक रह सकें, राष्ट्रीय एकता का आधार है। भिन्नता में अभिन्नता उत्पन्न करना राष्ट्रीय सद्भावना के लिए परमावश्यक है।

गुरु साहिबान ने अपनी बाणी व क्रियात्मक जीवन-दर्शन द्वारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, सुहृदयता, भ्रातृ-भावना का संचार करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। वे अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण चाहते थे कि सभी प्राणी सुखी हों, निरोग हों और किसी को किसी प्रकार का दुख न हो—*"नानक नाम चढ़दी कला। तेरे भाणे सरबत्त दा भला।"* यह सरबत्त के भले की कामना उनकी विश्व-बन्धुत्व की भावना को जन्म देती है। आप कथन करते हैं :

—सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ (पन्ना ६७१)

—ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

गुरु साहिबान के लिए कोई छोटा या बड़ा नहीं, ऊंचा या नीचा नहीं। उन्हीं के कथन के अनुसार सम्पूर्ण संसार उस परम पिता की संतान है :

एकु पिता एकस के हम बारिक . . . ॥ (पन्ना ६११)

जब सबका पिता एक परमात्मा है तो सभी समान हैं, सभी भाई हैं। कौन छोटा और कौन बड़ा?

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ (पन्ना १३४९)

संसार की सम्पूर्ण मानव जाति का निर्माण उस परम पिता परमेश्वर की ज्योति से हुआ है। उसके नूर से सम्पूर्ण संसार उत्पन्न हुआ है। अतः कौन भला और कौन बुरा, सब मानव बराबर हैं। किसी का भी हृदय दुखाने का, अधिकार छीनने का, शोषण करने का, दमन करने का किसी राष्ट्र या व्यक्ति को अधिकार नहीं। बाबा फरीद जी के शब्दों में किसी को भी अपशब्द कहने, कटु बोलने का अधिकार नहीं :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना को दृढ़ करने के लिए गुरु साहिबान ने कई क्रियात्मक कदम उठाए। उनकी बाणी में स्थान-स्थान पर मानव-एकता, प्रेम, प्राणी-

*१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना (जीरकपुर)-१४०६०३

मात्र की बराबरी और सांझीवालता पर बल दिया गया है:

सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ *(पन्ना ९७)*

वह परमात्मा एक है। लोग उसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं :

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ *(पन्ना ८८५)*

कोई राम कहे या रहीम कहे मतलब तो उसी की राह से है। मन्दिर और मस्जिद एक हैं। हिन्दू-पूजा और मुस्लिम-नमाज एक है। सभी इंसान एक हैं। सम्पूर्ण मनुष्यता एक हैं। भ्रम के कारण प्राणी अलग-अलग दिखाई देते है। *"मानस की जात सभै एकै पहिचानबो ॥"* अत: सम्पूर्ण भारत को राष्ट्रीय एवं साहित्यिक, भावनात्मक एकता में पिरोने के लिए श्री गुरु अरजन देव जी ने एक सांझे धार्मिक ग्रंथ का निर्माण किया जिसमें छ: गुरु साहिबान की बाणी के अतिरिक्त भक्त साहिबान तथा अन्य महापुरुषों की बाणी को शामिल किया जो विभिन्न जातियों, प्रांतों और धर्मों के थे। भक्त जैदेव जी ब्राह्मण थे और भक्त नामदेव जी छींबा नामक जाति से संबंधित थे। भक्त त्रिलोचन जी वैश्य थे। भक्त धन्ना जी जाट किसान थे। भक्त सैण जी नाई थे। भक्त कबीर जी जुलाहे और भक्त रविदास जी चमार थे। सभी भक्त साहिबान अलग-अलग क्षेत्रों से थे। भक्त नामदेव जी महाराष्ट्रीय और भक्त कबीर जी बनारस के रहने वाले थे। भक्त त्रिलोचन जी मुंबई के और भक्त धन्ना जी राजस्थान के थे। शेख फरीद जी और भक्त कबीर जी मुसलमान थे। ये सभी भक्त साहिबान मानवीय एकता, शांति और प्रेम के प्रचारक थे। इन भक्त साहिबान को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वही सम्माननीय स्थान प्राप्त है जो सिख गुरु साहिबान को। श्री गुरु ग्रंथ साहिब राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय एकता का प्रचारक एवं सर्वसांझा धार्मिक ग्रंथ है जो सम्पूर्ण मानवता को एक भावनात्मक सूत्र में पिरोने के लिए दृढ़ संकल्प धारण किए है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानवता और एकतावाद का संदेश देने वाला श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रचलित धर्मों का सांझा धार्मिक ग्रंथ है। इसमें धार्मिक पक्षपात, संकीर्णता और सांप्रदायिकता का कोई स्थान नहीं। उनकी बाणी हिन्दुओं, मुसलमानों, बौद्धियों और जैनियों आदि सभी को अपने-अपने धर्म के अच्छे उसूलों को न छोड़ने के लिए प्रेरित करती है। हुक्म, रजा, नदर, दरगाह, दीवान आदि शब्दों को अपना कर और सच्चा मुसलमान कौन होता है, की व्याख्या की। एक ही धर्म है और वह है सच्चाई और मानवतावाद। उनके जीवन भर के साथी भाई मरदाना जी मुसलमानों में मिरासी जाति से सम्बंधित थे। उस वैमनस्य के युग में जब हिन्दू मुसलमानों को मलेछ और मुसलमान हिन्दुओं को काफिर कहते थे, गुरु साहिबान ने दोनों धर्मों के बीच में पड़ी खाई को पाटने का भरसक प्रयास किया। श्री गुरु नानक देव जी मक्का, मदीना, बगदाद आदि मुस्लिम देशों में भी गए। वहां के शिलालेखों के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी इस्लामी साहित्य के गूढ़ ज्ञाता थे। मुसलमानों से मानवी आधार पर गुरु जी की इतनी सांझ बनी कि यह कहावत प्रसिद्ध हुई— *"नानक शाह फकीर, हिन्दू का गुरु मुसलमान का पीर।"* श्रीलंका के शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि बौद्ध भिक्षुओं से उन्होंने संस्कृत और पाली में चर्चा की। उनकी बाणी से स्पष्ट है कि वे कई प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में निपुण थे।

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय एकता के लिए भाषाई भेदभाव से ऊपर उठ कर विभिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना और संसार के महान ग्रंथों से परिचित होना भी आवश्यक है। इस दृष्टि से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन हमारा पथ-प्रदर्शन करता है। गुरु जी हिन्दी, संस्कृत और फारसी के महान विद्वान थे। उन्होंने अपनी पावन बाणी इन भाषाओं में उच्चारण की। उन्होंने निर्मले संतों को संस्कृत पढ़ने के लिए बनारस भेजा। इन निर्मले संतों ने संस्कृत शिक्षा के प्रसार में विशेष योगदान दिया। गुरु जी ने अपने दरबारी कवियों, लेखकों की सहायता से रामायण, महाभारत और अन्य पौराणिक कथाओं द्वारा राष्ट्रीय पुनर्जागरण और राष्ट्रीय भावनाएं जागृत करने के लिए जनता में आत्म-विश्वास और आत्मा-निर्भरता, निडरता पैदा करने के लिए हिन्दी-पंजाबी में अनुवाद करवाया। उनका जीवन विभिन्न भाषाओं की शिक्षा, भारतीय सभ्यता, संस्कृति द्वारा राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रसार करने का सर्वोत्तम उदाहरण है। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए जनता-जनार्दन की शक्ति को मान्यता प्रदान करना, उसे जागृत करना, उन्हें सम्मानित कर उनका आत्म-विश्वास जागृत करना और उनकी शक्तियों को राष्ट्रीय निर्माण के कार्य में लगाना राष्ट्रीय पुनर्जागरण के लिए आवश्यक है।

गुरु साहिबान साधारण जनता के मसीहा थे। उन्होंने संगत-पंगत के क्रियात्मक प्रयासों द्वारा जात-पात, छूत-छात, ऊंच-नीच के अंतर को मिटाने का प्रयास किया :

सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥
(पन्ना ६२)

उपरोक्त विचार को क्रियात्मक रूप देने के लिए ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सब भेदभाव मिटा कर अपने सिखों को एक बाटे से अमृतपान करवाया।

पंचम पातशाह जी का फरमान है :

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ *(पन्ना ७४७)*

श्री हरिमंदर साहिब के चार द्वार इस बात के सूचक हैं कि इस धर्म-स्थान के द्वार चारों वर्णों के लिए खुले हैं, जहां धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठ कर सबका स्वागत है, जहां जाति नहीं, ज्योति पहचानने पर बल है, जहां नेक कमाई और परिश्रम महानता का परिचायक है, जहां मलिक भागो को नहीं भाई लालो को सम्मानित किया जाता है, जहां गुरु अपने शिष्यों पर सब कुछ कुर्बान कर एक नवीन कौम का निर्माण करता है, जिस कौम के निर्भीक जांबाज सीस हथेली पर लेकर अपने देश और कौम के लिए बंद-बंद कटवाने के लिए तैयार हो जाते हैं। राष्ट्रीय एकता, रष्ट्रीय सम्मान के लिए जनता में देश-भक्ति की भावना का संचार करना आवश्यक है। एक स्वतंत्र देश ही सिर ऊंचा उठा कर जी सकता है। गुरु साहिबान के समय भारत देश परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। उन्होंने परतन्त्र भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए अनथक प्रयास किए और इस तरह देश-भक्ति की भावना का जन्म हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी की उस करुण-पुकार से जो उन्होंने बाबर द्वारा निःशस्त्र भारतवासियों की खून की होली खेली जाती देखकर की :

—पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ . . .
खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू

पाइ वे लालो ॥ (पन्ना ७२२)
—जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

आत्म-सम्मान गंवा कर जीना भी कोई जीना है? मुगलों के चंगुल से देश को स्वतन्त्र कराने के लिए हमारे गुरु साहिबान ने अपने आप को न्योछावर कर दिया। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी शहीदियों द्वारा इस स्वतन्त्रता के पौधे को सींचा और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक वीर कौम के निर्माण द्वारा भारत की परतन्त्रता की बेड़ियों को काटने में भरपूर सहयोग दिया। तभी तो पंडित मदन मोहन मालवीय कहते हैं कि "भारत यदि ताकतवर बनना चाहता है, उन्नति करना चाहता है तो प्रत्येक हिन्दू को अपना बड़ा लड़का सिख बनाना चाहिए।" *(सिख रीवियू, फरवरी २००२, पृष्ठ ३७)*

श्री गुरु नानक देव जी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए, प्रेम और सद्भावना का संदेश देने के लिए अपने देश के एक कोने से दूसरे कोने तक, कभी आसाम तो कभी बंगाल, कभी कश्मीर तो कभी लेह लदाख तक ही नहीं बल्कि तिब्बत, चीन, वर्मा, लंका, अरब, फ्रांस, मक्का, मदीना, बगदाद, तुर्किस्तान, मिस्र, अफगानिस्तान आदि पड़ोसी देशों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, विश्व-बन्धुत्व की भावना का संचार करने के लिए निरंतर घूमते रहे। गुरु जी अनथक यात्री थे। **(Walking-Talking Philosopher)** उन्होंने अपने जीवन के बीस साल देश-देशान्तरों में घूम कर जनता-जनार्दन को प्रेम, एकता, समन्वय, सौहार्द, भ्रातृत्व-भावना का दिव्य पाठ पढ़ाने के लिए निरंतर चलते रहे, चलते रहे। नदियां, नाले, पहाड़ कोई भी उनके पथ की बाधा न बन सके। वह धार्मिक सद्भावना उस युग की मांग थी और युग-युग की मांग रहेगी। नफरत की आग बुझाने के लिए, मोहब्बत का पाठ पढ़ाने के लिए जिसे हम कवि के इन शब्दों में प्रकट कर सकते हैं :

मौसम की बाहें दिशा और ये राहें,
सभी हमसे चाहें सद्भावना।
नफरत थमेगी, मुहब्बत रमेगी,
यह धरती बनेगी दिव्यांगना।

नफरत की आग बुझाने के लिए, मोहब्बत का पाठ पढ़ाने के लिए गुरु साहिबान ने अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी शब्द-गुरु का रूप धारण कर आधुनिक युग में भी विश्व-बन्धुत्व, राष्ट्रीय एकता एवं मानवतावाद का संदेश दे रही है।

केवल भारत में ही नहीं विदेशी विद्वान भी इसकी शिक्षा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। आरनोल्ड टायनबी के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब सम्पूर्ण मानवता का सार्वभौमिक आध्यात्मिक खजाना हैं, जिसका संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना चाहिए ताकि सिखों के अतिरिक्त शेष संसाार के लोग भी इसके अध्ययन से लाभ उठा सकें।[1]

एच. एल. ब्रॉडशा सिख धर्म को नये युग का धर्म **(Faith of New Age)** कहता है। उनके अनुसार सिख धर्म एक सार्वभौमिक, सार्वकालिक धर्म है, जिसमें सम्पूर्ण मानवता के लिए धर्म का सार है। आधुनिक अन्तरिक्ष युग में मनुष्य के लिए यह एक दैवी वरदान है क्योंकि आधुनिक युग में मनुष्य की सभी समस्याओं का उत्तर इस लासानी ग्रंथ में विद्यमान है।[2]

डोरथी फील्ड के अनुसार संसार के धर्मों में सिख धर्म का एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि

यह एक क्रियात्मक धर्म है, जिसने अपने प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के कारण बहुत कम समय में एक कौम का निर्माण किया। इसने निम्न वर्ग के साधारण अछूत लोगों को वफादार योद्धाओं में बदल दिया। साधारण जनता का उत्थान राष्ट्रीय निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।[३] यह एक मानी हुई बात है।

डॉ. डोनाल्ड जी दवे कहता है कि आधुनिक युग में श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं की विशेष सार्थकता है। उन्होंने संगत और पंगत द्वारा ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जात-पात के भिन्न-भेद को मिटाकर मानवीय एकता के धार्मिक आदर्श को क्रियात्मक समाजवादी स्वरूप प्रदान किया और इस मानवीय एकता का समाजवादी स्वरूप राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संवेदना की आधारभूत कड़ी है।[४]

भारत की आधुनिक परिस्थितियों में धार्मिक सद्भावना और राष्ट्रीय एकता समय की मांग है। अनेकता में एकता पैदा करना समय की मांग है। भारत में अनेक धर्मों, जातियों और प्रांतों के लोग रहते हैं। इस भिन्नता में अभिन्नता उत्पन्न करना राष्ट्रीय एकता के लिए परमावश्यक है। सिख धर्म मानवीय भिन्न-भेदों से ऊपर उठ कर एकेश्वरवाद के संदेश द्वारा सम्पूर्ण मानवता को एक धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है। यही एक मात्र धर्म है जो धार्मिक भिन्न-भेद से ऊपर उठ अपने सर्वोच्चय धार्मिक स्थान श्री हरिमंदर साहिब की नींव एक मुस्लिम सूफी फकीर से रखवाता है। भाई कन्हैया जी का उदाहरण सिख इतिहास का सुनहरी पन्ना है। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की फौज में सिखों के साथ-साथ मुसलमानों को धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठ कर भर्ती किया जाता था।

१. आरनोल्ड टायनबी, दा सिलेक्शनज़ फ्राम दा सेकरड राइटिंगज़ आफ दा सिखज़, यूनेसको १९६०, पृ. ९-११

२. एच. एल. ब्राडशा, गुरबख्श सिंघ यूनीवर्सल मैसेज, रिचार्डसन १९९१ पृ. ८

३. डोरथी फील्ड, रीलिजन आफ दा सिखज़, लंडन-१९१४, पृ. ९

४. डॉ. डोनाल्ड जी . दवे, गुरु नानक कोमेमोरेटिव वाल्यूम, सम्पादक डॉ. गुरबचन सिंघ तालिब, प. यू. पटियाला, १९६९, पृ. ११३-११४

गुरु ग्रंथ जीओ की शोभा न्यारी

गुरु ग्रंथ जीओ की शोभा न्यारी।
नतमस्तक हूं मैं जाऊं बलिहारी।
अमृत-बाणी हर तरह जीवन-कल्याणी।
घट-घट अंतर सदैव समानी।
साच समाहित शांत रस बरसे।
जो भी जिज्ञासु इसको परसे।
मन तन अघाए परमपद पाए।
शबद साच मन माहि समाए।
जीवन नैया बाहर भंवरों से आए।
शबद की महिमा अखंड अलाए।
सभी मानस एक साथ मिलाए।
क्यों कोई नीच शूद्र कहलाए?
नारी को ऊंचा सम्मान दिलाया।
नया उजाला ले सूरज आया।
नवजीवन की उज्जवल राह दिखाई।
समाजी क्रांति की युक्ति बनाई।
गुरु ग्रंथ जीओ की शोभा न्यारी।
नतमस्तक हूं मैं जाऊं बलिहारी।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ पत्तन वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदसपुर। मो. ९४१७१-७५८४६

न

सभी गुणों का आधार : क्षमा गुण

-डॉ. परमजीत कौर*

आज उन्नति के सम्पूर्ण साधनों के होते हुये भी चारों तरफ अशांति का साम्राज्य है, ज्ञान का प्रकाश होते हुये भी मनुष्य रास्ते से भटक गया है। हृदय की विशालता, उदारता, त्याग, सहनशीलता के स्थान पर संकीर्णता, स्वार्थ, ईर्ष्या, क्रोध तथा अहंकार की भावना का प्रावल्य देखा जाता है। भ्रातृभाव के अभाव ने अधर्म तथा अकल्याण को बढ़ाया है। स्वार्थ तथा ईर्ष्या के कारण मनमुटाव बढ़ते हैं तथा नजदीकियां समाप्त हो जाती हैं। क्षमा-भावना का अभाव ही इसका मूल कारण है। दूसरों की गलतियों को अनदेखा करने का स्वभाव मनुष्य को क्षमाशील बनाता है। क्षमा करने की भावना से स्वभाव में मधुरता तथा विनम्रता आ जाती है तथा मनुष्य सहनशील हो जाता है। दूसरों के उग्र व्यवहार पर वह एकदम क्रुद्ध नहीं होता बल्कि उनके इस व्यवहार के कारण पर विचार करता है तथा उन्हें क्षमा कर देता है।

क्रोध तथा अहंकार परस्पर बढ़ते वैर-विरोध के मुख्य कारण हैं। क्रोध विवेक को नष्ट कर देता है तथा अहंकार से बुद्धि नष्ट हो जाती है। अपने पद, अपने ज्ञान, अपने सौन्दर्य, अपनी सम्पत्ति आदि पर गर्वित रहने वाले मनुष्य में विनम्रता का अभाव होता है। ऐसा व्यक्ति न कभी अपनी गलती को स्वीकार करता है तथा न ही दूसरों को क्षमा कर सकता है। ऐसा मनुष्य सदा दुखी तथा अशांत रहता है। भक्त फरीद जी का कथन है कि यदि तुम्हें कोई दुख दे तो तुम उससे बदला मत लो, उसे दुखी मत करो, उसे क्षमा कर दो। ऐसा करने से तुम सदा शांतचित रहोगे :

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥
(पन्ना १३७८)

क्षमा कर देने से दूसरों का भला करने से मन क्रोध रहित हो जाता है, जिससे शरीर के रोग समाप्त हो जाते हैं :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८२)

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं :

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ (पन्ना २२३)

गुरु की शरण में आने से शरीर को विकारों से बचाने की सूझ प्राप्त हो जाती है, अहंकार, तृष्णा, क्रोध आदि समाप्त हो जाते हैं। सन्तोष, दया आदि गुण विकसित होते हैं तथा मनुष्य क्षमा को धारण कर लेता है :

—गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥
हउमै त्रिसना सभ अगनि बुझई ॥
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥ (पन्ना २३३)
—सत संतोखि रहहु जन भाई ॥
खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ (पन्ना १०३०)

गुरु-उपदेश के अनुसार जीवन बनाने का प्रयत्न करना ही गुरु की शरण में आना है। गुरु की मति पर चलने से, नाम-सुमिरन करने से अंदर क्षमा, विनम्रता आदि आत्मिक गुण पैदा हो जाते हैं। श्री गुरु रामदास जी समझा रहे हैं कि हरि के नाम का शृंगार बनाओ तथा क्षमा की पोशाक पहनो :

*अध्यक्ष संस्कृत विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कालेज, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)

हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ (पन्ना ६५०)

श्री गुरु अरजन देव जी विस्तारपूर्वक समझा रहे हैं कि जिसने गुरु-दर से क्षमा का स्वभाव ग्रहण कर लिया तथा नाम-धन एकत्र कर लिया उस पर प्रभु की कृपा सदैव बनी रहती है :

-खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥
खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥
(पन्ना २५३)

-खिमा गही सचु संचिओ खाइओ अंम्रितु नाम ॥
खरी क्रिपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥
(पन्ना २६१)

श्री गुरु नानक देव जी का पूरा जीवन विनम्रता का उदाहरण है। अपने संसार का भ्रमण करते हुये, असंख्य लोगों को क्षमा-दान देते हुये, उन्हें अपराधों से मुक्त कर सही मार्ग दिखाया। श्री गुरु अंगद देव जी ने भी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित आदर्शों को जीवन का लक्ष्य बनाया। जब बादशाह हुमायूं पंजाब की ओर आता हुआ खडूर साहिब पहुंचा तो ऊंच-नीच में भेद न करने वाले श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा शाही स्वागत न करने पर हूमायूं ने क्रुद्ध होकर तलवार निकालने की कोशिश की तो श्री गुरु अंगद देव जी ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा तथा कहा कि शूरवीर की तलवार रणभूमि में ही म्यान से निकलती शोभा देती है। इस तरह क्षमादान देकर बादशाह को शांत कर दिया।

'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में उल्लेख है कि श्री गुरु अमरदास जी ने अपने सिखों को उपदेश दिया :

सहिन शीलता छिमा धरीजै।
किस के संग न द्वैष रचीजै। . . .२९॥
(रासि १, अंसू ४०)

जब भाई मक्खन शाह लुबाणे द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी को गुरु के रूप में सिख संगतों में प्रकट किया तो धीरमल जी के मसंद सीहे ने गुरु जी पर बंदूक का प्रहार किया। निशाना चूक जाने पर अपने साथियों सहित गुरु-घर को लूट कर धीरमल के साथ करतारपुर चला गया तो श्री गुरु तेग बहादर जी ने उसे क्षमा कर दिया। बंदूक की आवाज सुनकर घटना-स्थल पर आये हुये सिखों तथा मक्खन शाह द्वारा धीरमल का पीछा कर लूटा हुआ सामान तथा 'आदि बीड़' वापस ले आने पर श्री गुरु तेग बहादर जी ने सारा सामान और 'आदि बीड़' वापिस भेज दी तथा भाई मक्खन शाह और अन्य सिखों को उपदेश दिया :

करनी छिमा महां तप जान।
छिमा करनि ही दैबो दान ॥
छिमा सकल तीरथ असनान।
छिम करति नर की कलिआन ॥
छिमा समान आन गुन नांही।
या ते छिमा धरहु मन मांही ॥
(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ)

भक्त कबीर जी के मत में जिस हृदय में क्षमा है वहां परमात्मा का निवास होता है :

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥
(पन्ना १३७२)

क्षमा का स्वभाव आत्मा का आभूषण है इससे सुसज्जित जीव-स्त्री परमत्मा को प्रिय लगती है तथा परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर लेती है :

—मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥
खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ (पन्ना ३५९)

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

वंड छको के आधार पर उसरा श्री गुरु ग्रंथ साहिब का गुरमति फलसफा

*-श्रीमती शैल वर्मा**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक महान ग्रंथ हैं। इस ग्रंथ में तमाम आदर्श विचारों के अतिरिक्त विश्व-बंधुत्व के तत्व पर्याप्त पाये जाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकारों की बाणी पूर्ण रूप से मानवतावाद पर आधारित है और मानवतावाद की आवश्यकता तो पूरे विश्व को है। यह बाणी जिनके लिये लिखी गयी वे पात्र पूरे विश्व में व्याप्त हैं, अत: यह पावन ग्रंथ पूरे विश्व के लिये है। प्रचार-प्रसार तो अलग बात है। जो एक बार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में आया वह जीवन-मुक्त हुआ; आनंद ही आनंद, लड़ाई-झगड़े की जगह ही कहां? गुरु साहिब ने बाणी को जांच-परख कर संकलित किया। श्री आदि ग्रंथ साहिब के रूप में गुरु साहिब ने जो अमूल्य वस्तु समस्त विश्व को दी उसकी आवश्यकता विश्व को आज भी है। यह ग्रंथ ऐसा है जो मांगता है प्रेम, श्रद्धा, समर्पण और देता है संतोष तथा प्रभु का दीदार।

इस लासानी ग्रंथ का, विश्व-बंधुत्व का तत्व-अध्यात्म, जपु जी, मन खुराफात से दूर ध्यान में नैसर्गिक सुख। जुल्म, अन्याय, पाखंड, आडम्बर, बनावटीपन के विरुद्ध आवाज। परिवार, स्त्री-पुरुष बराबर, मेहनत से कमाओ, बांट कर खाओ।

यह बांट कर खाना ही अनोखी बात है। किसी अन्य धर्म में इतना नहीं जोर दिया गया इस बात पर जितना जोर सिख धर्म ने दिया। यही बांट कर खाने वाली बात विश्व-बंधुत्व का प्रमुख तत्व है। यही पूरे विश्व को जोड़ने का काम करता है। अन्य धर्म भी कहीं-कहीं विश्व-बंधुत्व की शिक्षा देते हैं। कठोर अनुशासन एवं व्यवस्था के होते हुये भी कालांतर में बुराइयों ने प्रवेश पा लिया। लालच, स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वैष के चलते बहुत सारे युद्ध होते रहे। साम्प्रदायिकता का परिणाम भोगना पड़ा। कुछ धर्म-ग्रंथों में लोगों ने अपना मत मिला कर, अपने मतलब की बातें करके इन्हें दूषित कर दिया।

धन्य हैं श्री गुरु अरजन देव जी, किसी व्यक्ति विशेष, जाति विशेष को महत्व न देकर विशेष व्यक्तियों के शब्द को, चिंतन को, सत्यता को, जोड़ने वाली शक्ति को महत्व दिया। अनेकता में 'एक' को देखा-परखा और वह 'एक' सब में विद्यमान है। सिख धर्म का त्रैसूत्रीय सिद्धांत—'नाम जपना, किरत करना, वंड छकना' इसकी सफलता का प्रमुख कारण है।

नाम जपना और कुछ कार्य करते रहना बहुत पहले से चलते आ रहे हैं, प्राय: सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में हैं, लेकिन संसार में सिख धर्म ही है जिसमें सिखाया जाता है 'वंड छकना'। यही मौलिकता विश्व-बंधुत्व की मुख्य चाबी है। कर्म का उपदेश गीता में भी है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'किरत' करने को महत्व दिया। नाम जपने पर भी गीता में चर्चा है। गुरबाणी अथवा श्री गुरु ग्रंथ साहिब का चिन्तन, व्यक्ति से समुदाय की ओर तथा समुदाय से विश्व की ओर बढ़ा। यही इसकी विलक्षणता का

४८/८, सागर सदन (पुलिस चौकी के पीछे), गांधी नगर, बस्ती (उ. प्र.)-२७२००१

राज है। 'वंड छकना' से लाभ यह है कि सामाजिक व्यवस्था और अधिक आसान हो गयी। मांगने, छीनने, ईर्ष्या की आग में जलने की प्रवृत्तियां समाप्त होने लगीं। भौतिक जीवन-मूल्य और सामाजिक जीवन-मूल्य के बीच आध्यात्मिक जीवन-मूल्य (नाम जपना) भारतीय सांस्कृतिक धारा का ही अंग है। प्रत्येक वर्ग को समान समझने की भावना ही विश्व-बंधुत्व का भाव है। बांट कर खाना, संतुष्ट रहना, किसी पर जुल्म न करना ही तो विश्व को बंधु बना देता है।

अर्जित पूंजी को अन्य जरूरतमंदों में बांटने की बात सिख धर्म में बहुत जोर से की गयी है। इसी एक तत्व की अभिवृद्धि से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की जीवन-शैली में न केवल एक क्रान्ति आई बल्कि सुरक्षा की भावना को भी बल मिला। भूख ही सारी बुराइयों की जड़ है। बांट कर खाने की बात ने इसे आदर्श, प्रभावी और वासुदेव-कुटुम्बकम वाले सिद्धांत के निकट ला दिया है। गुरु साहिबान के क्रम में तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने लंगर-प्रथा को अत्यधिक बढ़ावा दिया। इससे एक तरह का समता-भाव लोगों के आचरण में आने लगा। स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार श्री गुरु अमरदास जी ने दिलवाए, सती-प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई, बाईस मंजियों की स्थापना कर, हर क्षेत्र के लिये एक प्रचारक नियुक्त किया। इनमें से कुछ प्रचारक स्त्रियां भी थीं। विश्व-बंधुत्व का इससे बढ़ कर उदाहरण क्या हो सकता है?

एक ही व्यक्ति पूरी व्यवस्था नहीं संभाल सकता। सहयोगी तो चाहियें ही। श्री गुरु अमरदास जी ने इस माध्यम से प्रचार-प्रसार करवाया। आज प्रचार-साधन अपरिमित है। बाणी का फैलाव हमारा उद्देश्य है। दुनिया के लोग भी सच्चाई की खोज में हैं।

विश्व-बंधुत्व के लिये एक बात और उल्लेखनीय है। केवल ब्राह्मण ही धार्मिक नेता हो सकता है ऐसी बात नहीं। गुरु के बहुत से मसंद जाट थे। गुरु साहिबान ने सब जातियों को एक किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कई भाषायें हैं और अनेकों उप-भाषायें हैं। भारत के सब भागों से सब जातियों के, धर्मों के बाणीकारों की बाणी इसमें सम्मिलित है। केवल सिख ही नहीं समस्त मानव-मात्र भटकने न पाये, सबको राह दिखाने का कार्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा हो रहा है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्व-बंधुत्व के तत्व भरे पड़े हैं। राजपूत काल में छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई-झगड़े, वैमनस्यता बढ़ती रही जिसका परिणाम विदेशी आक्रमण हुआ। छुआ-छूत से एकता विनष्ट हो गयी। लोग खंड-खंड होकर पाखंड में फंसते गये। आने वाली पीढ़ी गुलामी की जंजीरों में जकड़ी गयी। द्वैत की भावना लड़ाई-झगड़े का कारण बनती है। श्री गुरु नानक देव जी ने संवाद द्वारा मतभेदों का अंत करने का सुझाव दिया। हम मानते हैं कि हमारे अन्य धर्म-ग्रंथों में वे कई अच्छी नीतियां हैं जिनकी आवश्यकता थी किन्तु वे ग्रंथ किस काम के जो जनसाधारण के लिये दुरूह थे? सबके लिये उपयोगी हुआ तो सुलभ श्री गुरु ग्रंथ साहिब।

जनसाधारण तराजू के मेढ़क होते हैं। इन्हें इकट्ठा करना आसान नहीं और तब जब परिवहन के साधनों, संचार के साधनों का अभाव हो। मानव-स्वभाव आसानी की ओर आकृष्ट होता है। एक आसान रास्ता जनसाधारण को मिला। वे गुरु की शरण में यानी श्री गुरु

ग्रंथ साहिब जी की शरण में आते गए, गुरु-भाई बढ़ते गए, गुरु-भाई यानी विचारों की एकता और बंधुत्व का रहस्य होती है विचारों की एकता।

अब थोड़ा संगीत पर चर्चा करें। डॉ. प्रेम प्रकाश सिंघ जी ने इस विषय पर अपने लेख में बहुत कुछ लिखा है जो 'पंजाब सौरभ' विशेषांक में प्रकाशित है—"गुरु ग्रंथ साहिब में जो ३१ रागों का विधान है उनमें से अधिकांश के नाम प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय प्रांतों के नामों के आधार पर रखे गये हैं। गउड़ी, गूजरी, सोरठि, तिलंग, मारू, तुखारी, कानड़ा, देवगंधारी, गौंड प्राचीन भारत के प्रांत बंगाल और उड़ीसा को कहा जाता था। मालवा या मालव प्रदेश उज्जैन नगर के इर्द-गिर्द का इलाका था। गूजरी या गुर्जर आधुनिक गुजरात प्रांत का पुराना नाम है। सोरठि, सौराष्ट्र प्रांत वर्तमान गुजरात का एक आंचल है। तिलंग, तिलंगाना का पंजाबी रूप है। तिलंगाना वर्तमान आंध्र प्रदेश के आस-पास फैला हुआ क्षेत्र था जिसके नाम के अनुसार वहां की भाषा का नाम तेलगू पड़ा है। यह द्राविणी भाषा है। राग मारू, मरु देश के नाम पर प्रचलित हुआ। मरू भूमि राजस्थान को कहा जाता है। तुखारी नाम का आधार तुखार या तुषार प्रांत था। तुखार पंजाब के उत्तर भारतीय प्रांत का कानड़ा कन्नड़ प्रदेश का नाम है, जहां आजकल कर्नाटक राज्य स्थापित है। गंधारी का नाम गंधार प्रान्त पर पड़ा है। गंधार अफ़गानिस्तान का वर्तमान कंधार ही है।"

इस आधार पर राष्ट्रीय एकता का दर्शन हमें आसानी से मिल जाता है। इस महान ग्रंथ में भारत में प्रयोग होने वाली तमाम बोलियां, अनेक भाषायें और उप-भाषायें सम्मिलित हैं। श्री गुरु नानक देव जी की दृष्टि में प्रकृति का विस्तार ही ईश्वर का सगुण रूप है। ईश्वर अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिये कण-कण में विद्यमान है। प्रकृति के रूप में हम हर क्षण दर्शन करते हैं। यह प्रकृति संपूर्ण विश्व में है। श्री गुरु नानक देव जी के पास सर्वव्यापी सोच तथा विश्व दृष्टिकोण की विशालता थी। गुरु साहिबान के दृष्टिकोण को अपना कर विश्व की जटिल समस्याओं का निवारण बिना युद्ध-विनाश के कर सकते हैं। गुरु जी ने सर्वव्यापी कल्याणकारी सिद्धांत हमें प्रदान किये, इसका उपयोग आज के परिवेश में अत्यन्त आवश्यक है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित सिद्धांत हमें विश्व-बंधुत्व की ओर जोड़ते हैं। यह पावन ग्रंथ केवल जोड़ने का मार्गदर्शन देता है। जोड़ने में और जुड़े रहने में एकता की शक्ति निहित है।

आपका पत्र मिला

सरदार भगत सिंघ का बेमिसाल त्याग

अगस्त २००८ अंक प्राप्त हुआ जिसे अघोपांत अध्ययन किया, गद्य और पद्य कृतियां ज्ञानवर्धक लगीं। सबसे बड़ी बात जिस पर सम्पूर्ण राष्ट्र को गर्व है कि स्वतंत्रता संग्राम में भारत को आजादी दिलाने में सिख समुदाय का अतुलनीय योगदान रहा है। अनेकों वीर सेनानियों के त्याग-बलिदान की गाथायें भारतीय युवा पीढ़ी को राष्ट्र-भक्ति की प्रेरणा देती हैं। शहीदे-आज़म सरदार भगत सिंघ का बेमिसाल त्याग, बलिदान, स्वाधीनता प्राप्ति के लिये कीर्तिमान है, जिनकी प्रेरणा से भारतीय आधुनिक पीढ़ी सजगता से संभलने को अग्रसर है।

-प्रेमचंद्र विद्यार्थी, संपादक, साप्ताहिक रेड लाईन, पी. के. प्रिंटर्स, पंलदी चौक, दमोह।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन-जुगत एवं जीवन-दृष्टि

*-बीबा मनप्रीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब भारतीय साहित्य और संस्कृति की गौरव गाथा है, मनुष्य जाति के लिए सांझा रूहानी खजाना है। इसके माध्यम से तत्कालीन समाज का सांस्कृतिक वातावरण सम्पूर्ण रूप में चित्रित हुआ है। इस पवित्र ग्रंथ की आधारशिला गुरु नानक साहिब की पावन बाणी है। जो संकल्प श्री गुरु नानक देव जी ने निर्धारित किये उसी की विस्तृत व्याख्या शेष गुरु साहिबान ने की।

इस पवित्र ग्रंथ का संपादन पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा हुआ और इसे अंतिम रूप तथा पुनर्संपादन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रदान किया। मनुष्यों के प्रति प्यार का रिश्ता स्थापित करने का जो संदेश इस पवित्र ग्रंथ में मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। १४३० पन्नों के इस पवित्र ग्रंथ में ३१ रागों में ३६ बाणीकारों की बाणी शामिल है, जिनमें ६ गुरु साहिबान, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान और ४ गुरसिख प्रेमी शामिल हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित गुरबाणी केवल ब्रह्म, जीव, सृष्टि, माया आदि आध्यात्मिक विषयों पर ही अपना मत व्यक्त नहीं करती बल्कि सामयिक एवं शाश्वत सत्य का समन्वय भी प्रस्तुत करती है। तत्कालीन ऐतिहासिक यथार्थ का जैसा स्पष्ट और निर्भीक उल्लेख गुरबाणी में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

यह संसार का पहला ऐसा धार्मिक ग्रंथ है जिसमें न केवल अलग-अलग धर्मों का बल्कि अलग-अलग सभ्यता, बोली और जाति के मनुष्यों को स्थान देकर मानव-सम्मान को शिखर तक पहुंचाया है। पवित्र ग्रंथ में बाणी अंकित करने की एक ही कसौटी थी श्री गुरु नानक देव जी की सर्वहितकारी विचारधारा से मेल खाते विचार, न कि जाति विशेषता। यहां जन्म विशेषता को नकारा गया और बौद्धिक ज्ञान को स्वीकार किया गया है, शूद्र और ब्राह्मण का भेद मिटाया गया। इस पवित्र ग्रंथ के माध्यम से नैतिक मानव-मूल्यों की स्थापना हुई है, क्योंकि आज संसार का प्रत्येक जीव किसी न किसी ढंग से अशांत है, निरंतर भागदौड़ कर रहा है तो भी उसे मानसिक शांति प्राप्त नहीं है। इसका एक ही कारण है कि हम सभी कहीं न कहीं परमात्मा के अस्तित्व को भूल कर अपनी अक्ल का अधिक प्रयोग करने लग गये हैं।

जिंदगी में व्यक्ति को क्या मिलना है क्या नहीं, यह केवल इंसान की कोशिश मात्र से ही नहीं होगा। कर्म करना जीव का धर्म है। फल की प्राप्ति (मनचाहा फल) परमात्मा की 'नदरि' पर है और भक्त फरीद जी कहते हैं :

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥ *(पन्ना १३८४)*

संसार-सागर में विचरण करते हुए जीव यह मान ले कि संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह परमात्मा की मर्जी से ही हो रहा है। परमात्मा सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, उसका प्रत्येक कार्य प्रेम और दया से भरपूर है। जिंदगी की कुछ बातें हमें बाहरी स्थूल दृष्टि से देखने

**१६४-ए, शास्त्री नगर, माडल टाऊन, लुधियाना। मो ९८१४६-१११६४*

पर दुखदायी प्रतीत होती हैं पर उनके पीछे भी परमात्मा की मर्जी होती है। हमारे सामने तो असलियत का छोटा सा हिस्सा होता है और अगर कहीं हमारे सामने अपने पूर्व जन्म के किये कर्मों की तस्वीर हो तो आज हमें जो भी सुख-दुख मिल रहा है हम उसका कारण समझ सकते हैं। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है:

केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥ *(पन्ना ५)*

सुख-दुख हमारे पूर्व जन्म के किये कर्म हैं। सुख को हम परमात्मा की बख्शिश मानते हैं तो दुख को भी उसी का हुक्म मानना चाहिए, क्योंकि परमात्मा तो कर्त्ता है और कर्त्ता की बनाई प्रत्येक वस्तु **'The Best'** ही होगी। हां, यह जरूर है कि सही और गलत की समझ भी परमात्मा स्वयं ही देता है। परमात्मा का सच्चा भक्त भी वही बन सकता है जिसे परमात्मा स्वयं बनाता है :

दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥
विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥
आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से ॥
(पन्ना ४८८)

इसका आसान सा ढंग है कि ऐसे गुरमुखों की संगत की जाये जो सम्पूर्ण हों :

जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥
(पन्ना ४८८)

इस संसार में जितने भोग हैं उतने ही रोग हैं और जितने रोग हैं उतने ही सोग हैं, तभी तो श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं:

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ . . . ॥ (पन्ना ४६९)

हम सुख में परमात्मा को भूल जाते हैं और आज्ञनवश ऐसे कर्म करते हैं जिनसे हमारा लोक और परलोक दोनों नष्ट हो जाते हैं। हम अपने जीवन मनोरथ के रास्ते से दूर हो जाते हैं। अगर हम सभी यह जीवन-युक्ति अपना लें:

'सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥
सो जाणै जिनि दातै दीए ॥' *(पन्ना १०३०)*

तो ऐसा करने से हम निर्मल ज्ञान की दृष्टि से देखने लगेंगे और समझ जायेंगे कि यह सारी रचना परमात्मा की अपार शक्ति, उसके ज्ञान, उसकी रजा और उसकी रहमत को प्रकट करने का साधन मात्र है। इसके निर्माण के लिए उसे (परमात्मा को) किसी प्रयत्न की आवश्यकता नहीं। केवल *'कीता पसाउ एको कवाउ'* एक इच्छा हुई और सम्पूर्ण सृष्टि का क्रम प्रवाहमान हो गया, लेकिन इस क्रम को और कोई नहीं जानता, केवल परमात्मा ही जानता है :

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
(पन्ना ४)

गुरमति का सिद्धांत है कि परमात्मा ने अपनी शक्ति द्वारा यह खेल रचा है, सारी सत्ता उसी की है। संसार का प्रत्येक कार्य उसके हुक्म के अधीन है। हुक्म में ही सभी कर्म और कर्म-फल निर्धारित होते हैं :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

परमात्मा के हुक्म से ही जीव को इस सांसारिक मोह-माया की अग्नि से छुटकारा मिल सकता है। भक्त फरीद जी कहते हैं :

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥
सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझां आहि ॥ *(पन्ना १३७८)*

हम लाख कोशिश कर लें तो भी यह दात परमात्मा ने अपने हाथों में रखी हुई है। श्री गुरु अमरदास जी फरमाते हैं :

दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ *(पन्ना ६०४)*

परमात्मा की प्रसन्नता को, उसकी 'नदरि' को उसके सिवाय कोई नहीं जान सकता। संसार का प्रत्येक जीव केवल अपनी कोशिश से ही सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसमें अनन्त प्रभु की कृपा शामिल न हो :

गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥
मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥
(पन्ना ६३७)

जीव परमात्मा से केवल कृपा करने के लिए प्रार्थना कर सकता है क्योंकि :

आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ *(पन्ना १३७८)*

संसार में जीव को अपने सभी शारीरिक अंग परमात्मा से दात रूप में मिले हैं। किसी एक अंग की कमी को वही जानता है जिसके पास किसी एक की कमी है। इसलिए जरूरी है कि अगर हम मानसिक शांति पाना चाहते हैं तो जो हमें मिला उसके लिए परमात्मा का शुक्र करते रहें और जो नहीं मिला उसकी शिकायत न करें। सुखमनी साहिब में भी कहा गया है:

दस बसतू ले पाछै पावै ॥
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ *(पन्ना २६८)*

हम सांसारिक जीवों को यह मान लेना चाहिए कि परमात्मा अपनी रजा का मालिक है। उसकी दात मूल्यवान है। वह सभी पर अपनी रहमत की बख्शिश करता आया है, करता है और करता ही रहेगा। संसार में जो भी कुछ हो रहा है वह सभी परमात्मा की रहमत और रजा का खेल है।

सभी गुणों का आधार : क्षमा गुण

(पृष्ठ २५ का शेष)

—जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥
सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥
पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ *(पन्ना ७८६)*
—खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ *(पन्ना ८३६)*

जो जीव-स्त्री क्षमा का आभूषण पहन लेती है वह लोक-परलोक में शोभा प्राप्त करती है तथा सारा संसार उसकी इज्जत करता है। क्षमा से हीन प्राणी दुविधा में पड़कर भटकते रहते हैं तथा मानसिक शान्ति के अभाव में आत्मिक मौत मर जाते हैं :

खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ *(पन्ना ९३७)*

संक्षेप में कह सकते हैं कि क्षमाशील प्राणी ही 'सरबत्त के भले' के लक्ष्य को जीवन का आधार बना सकता है । क्षमा ही परोपकार के रास्ते पर चलना सिखाती है। क्षमा ही उच्च आत्मिक अवस्था का आधार तथा मानसिक शान्ति का मूल है। क्षमा कर देने की भावना वैर-विरोध को दूर करके परायों को भी अपना बनाने में सहायता करती है। इसलिये दुविधा में न पड़कर, कर्मकाण्ड के झंझटों को छोड़कर क्षमा गुण धारण करना चाहिए :

दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥
करम धरम की सूल न सहहु ॥
(पन्ना ३४३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सर्व-सांझीवालता के तत्व

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

अकाल पुरख जी समूची मानव-जाति और ग़ैर मानव-जाति के रचनहार पिता हैं। पूरा विश्व और ब्रह्मांड उसी की रचना है। उसके हुक्म के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। प्रभु-पिता ने तो सभी को समानता देकर इस संसार में जन्म दिया है परन्तु माया और हउमै के कूड़ परदे ने रब्बी ज्योति और संसारी रचना में एक दीवार/परदा बना लिया है। इस कूड़ की दीवार ने पूरी मनुष्य-जाति को विभिन्न प्रकारी मजहबों, नस्लों, ऊंच-नीच, जात-पात आदि में विभाजित कर दिया है। समय-समय पर हर धर्म में धार्मिक आगू मानवता को प्रभु का परोपकारी संदेश देते रहे हैं। हर धर्म के धार्मिक ग्रंथ अपने-अपने स्थान पर महान हैं पर जो हार्दिक सत्कार, सर्व-सांझीवालता, प्रमाणिकता और विश्व भाईचारे को सर्वसांझा उपदेश 'धुर की बाणी', 'शबद-गुरु', श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है, वो दुर्लभ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी धुर-दरगाही प्रभु-हुक्म है। यह व्यक्तिगत कृति नहीं है। इसीलिए इसको 'गोबिंद की बाणी', 'खसम की बाणी', 'धुर की बाणी' आदि के विशेषणों के साथ अलंकृत किया गया है। गुरबाणी ऐसी रब्बी शक्ति है जो 'हरि-जन' को 'हरि' में अभेद करने की अथाह शक्ति रखती है। गुरबाणी का महान कथन है :

हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥
(पन्ना ४४९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व-बंधुत्व भावना का महान ग्रंथ है। इसमें सरबत्त के भले का पावन संदेश है। इसमें किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं बल्कि इसमें बिना किसी भेदभाव के सभी व्यक्तियों के लिए एक जैसा उपदेश दिया गया है। इसमें जैनियों, बोधियों, ईसाइयों, मुल्लाओं, काजियों, योगियों, हिन्दुओं, सिखों, पारसियों, यहूदियों आदि सभी को प्रेम के साथ और मिलजुल कर जीवन सफल करने तथा अच्छे इंसान बनने का समान संदेश प्रदान किया गया है। इसमें सभी को नाम-सुमिरन, प्रेमा-भक्ति, धर्म की किरत और शुभ अमल करने के लिए ऐसा उपदेश प्रदान किया गया है कि *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* हैं। चिंता की बात तो यह है कि ऐसे निर्मल उपदेशों के होते भी विश्व-भाईचारे में, मनुष्य, मनुष्य के साथ भेदभाव क्यों कर रहा है?

—सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ (पन्ना ६७१)

—जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ (पन्ना ५६६)

—सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ (पन्ना ३७९)

जहां पर सरबत्त का भला हो वहां पर किसी का भी बुरा नहीं मांगा जाता। आज की एक गंभीर समस्या यह है कि दुनिया में हर कोई केवल अपना ही भला चाहता है पर अपने पड़ोसी का भला मांगने वाले दुर्लभ हो रहे हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसा विलक्षण ग्रंथ है जिसमें उपदेश है कि हे मनुष्य! अगर तू सदीवी सुख लेना चाहता है तो किसी का बुरा अपने मन में कभी न सोच :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

इसीलिए हर गुरसिख प्रतिदिन अपने महान

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

गुरु से जहां 'नाम-सुमिरन' की दात मांगता है, वहां उसके साथ ही 'सरबत्त के भले' की अरदास भी करता है:

नानक नाम चढ़दी कला ॥
तेरे भाणे सरबत्त दा भला ॥

सरबत्त का भला मांगने से अपना भला भी बीच में ही आ जाता है। गुरबाणी में कहीं भी व्यक्तिगत भले की बात नहीं की गई। अकाल पुरख से सभी जीव-जंतुओं पर कृपा करने, पूरे विश्व को खाने के लिए भोजन, पानी, वस्त्र देने और सब प्रकारी परस्पर कलह-क्लेश, वैर-विरोध, इर्ष्या आदि मिटाने और पूरी दुनिया के लिए सुख-शान्ति की अरदास की जाती है :

सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥
अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥
लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥
नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥
(पन्ना १२५१)

पूरा विश्व दुखों, क्लेशों, विकारों और हउमै की अग्नि में जल रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कर्ता पुरख के आगे पुरजोर विनती की गई है कि जैसे भी हो, हे प्रभु जी! इस जल रहे संसार ऊपर कृपा करके ठंड पहुंचाओ जी!

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
(पन्ना ८५३)

सभी का सर्वसांझा पिता प्रभु है। एक माटी से ही उसने हाथी, चींटी, वनस्पति, मनुष्य, पक्षी आदि की सृजना की है। सभी में वो प्रभु आप ही व्यापक है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥ (पन्ना ९८८)

अगर सभी में खुदा का ही निवास है, सभी समान हैं, उसके बिना कोई है ही नहीं तो फिर इंसान ही इंसान का दुश्मन क्यों बना बैठा है? वैर, विरोध, ईर्ष्या, झगड़े, मुकद्दमे, मन- मुटाव, अंतर्राष्ट्रीय झगड़े, तोपें, बारूद, परमाणु शक्ति के पदार्थ सभी किसके लिए मनुष्य ने बनाए हैं? क्यों मनुष्य ही मनुष्य का दुश्मन बने बैठा है? श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विश्व-दृष्टि इतनी विशाल है कि यह विश्व-स्तर पर शान्ति, एकता, परस्पर प्यार तथा खुशियां और सरबत्त मानव की खुशहाली चाहती है। जो व्यक्ति दूसरों का बुरा सोचते हैं अथवा करते हैं और परोपकार से दूर हैं, वो कभी भी गुरु-पिता को अच्छे नहीं लगते। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के निर्मल उपदेश के प्रकाश में हमें स्पष्ट हो जाना चाहिए कि बुरे कर्मों का प्रभु-दरबार में लेखा देना ही पड़ेगा।

गुरबाणी में जहां पर बेगाना हक खाना अथवा छीनना पूर्णत: वर्जित है वहां पर ईमानदारी की किरत करने को उत्साहित किया गया है। अगर मनुष्य ने प्रभु-कृपा की वास्तविक सूझ प्राप्त करनी है तो यह केवल अपनी नेक कमाई (किरत) में ही है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का विश्व भर के सभी लोग सत्कार करते हैं, क्योंकि ऐसा सर्व-सांझा महान ग्रंथ और कोई है ही नहीं जो समूचे विश्व को बिना किसी प्रकार के भेदभाव के, सांझीवालता का बराबर संदेश प्रदान करता हो। गुरमति-मार्ग में न ही कोई बैरी है और न ही कोई बेगाना है, सभी एक प्रभु-पिता के ही पुत्र एवं पुत्रियां हैं। इसलिए अगर हम लोग पूरे विश्व में प्यार, शान्ति और सांझीवालता चाहते हैं, तो हमें ऐटमी शक्ति का सहारा छोड़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षा के अनुसार जीवन सफल करना चाहिए।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का सिद्धांत

*-बोस्की मैंगी**

सिखों के पवित्र धार्मिक ग्रंथ में धर्म, दर्शन, समाज के साथ-साथ अध्यात्मवाद और भौतिकवाद जैसे विषयों पर भी विचार किया गया है। बाहरी रूप से चाहे अध्यात्मवाद और भौतिकवादी विचारधारा में विरोधाभास दिखाई दे परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए तो दोनों एक-दूसरे के पूरक दिखायी देंगे क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दोनों का उद्देश्य मानव-कल्याण बताया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में यद्यपि भौतिकवादी आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल दिया गया है लेकिन भौतिक जीवन में दिलचस्पी को लेकर उसके पीछे दीवाना होकर दौड़ने की अनुमति नहीं दी है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार भौतिकवाद का तात्पर्य है 'पहले बांटो, फिर खाओ'। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्शाया गया है कि समस्त दुनिया कर्मशील इच्छा से फलीभूत होती क्रियाओं का रूप है। इससे पता चलता है कि गुरु जी सकारात्मक इच्छाओं और मूल आवश्यकताओं की पूति के विरोधी नहीं थे। उनके अनुसार मूल आवश्यकाताएं पूरी करने में कोई बुराई नहीं है परंतु उनकी पूर्ति के लिए हमें गलत अमानवीय ढंग नहीं अपनाने चाहिए।

सामान्यत: जब हम भौतिकवाद की बात करते हैं तो व्यक्ति का जीवन-स्तर केन्द्र-बिन्दु में रहता है। श्री गुरु नानक देव जी का यही विचार था कि लोगों का जीवन-स्तर अच्छा हो। उन्होंने कहा कि जो लोग अपने जीवन में शुभ गुणों को वरीयता देते हैं वे 'गुरमुख' कहलाते हैं। दूसरी तरफ 'मनमुख' उन्हें कहा गया है जो लोग अपने भौतिक कल्याण एवं भौतिक सुख-सुविधाओं हेतु सम्पत्ति जोड़ते हैं। वास्तव में गुरु जी ने 'गुरमुख' के बारे में समझाते हुए साथ-साथ 'मनमुख' के बारे में भी चिंतन किया है। गुरमुख का एक गुण यह है कि वह अपनी मूल आवश्यकताएं अपनी मेहनत से पूरी करता है परंतु न समाप्त होने वाली इच्छाओं का गुलाम नहीं बनता। आप जी का विश्वास है कि उचित शिक्षा के उपरान्त मनमुख भी गलत मार्ग छोड़ कर मनमुख नहीं रहेगा और गुरमुख बनकर मानव-कल्याण में सहयोग कर सकेगा।

गुरबाणी के चिन्तन उपरान्त इस बात की पुष्टि होती है कि गुरु जी सुख-सुविधाओं का लाभ ले रहे अमीरों के विरुद्ध नहीं हैं, बशर्ते कि वे गरीबों की आवश्यकताओं की यथासंभव पूर्ति का भी ध्यान रखें :

गुरमुखि सभ पवितु है धनु संपै माइआ ॥
हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥
जो हरि नामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥
गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥
(पन्ना १२४६)

इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने भी अपनी मेहनत की किरत-कमाई में से एक हिस्से के दान पर बल दिया है :

**D/o श्री अशोक मैंगी, न्यू ग्रेन मार्कीट, धारीवाल (गुरदासपुर)।*

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

उनका विचार था कि यह संसार भौतिकवादी वस्तुओं का प्रयोग करे परन्तु उसे अपनी सम्पत्ति न समझ कर बल्कि, इन सबको परमात्मा की सम्पत्ति ही समझे।

भौतिक वस्तुओं के प्रयोग का विरोध न करने वाले गुरु साहिबान कभी नशीले पदार्थों के सेवन के समर्थक नहीं थे जैसे कि श्री गुरु अमरदास जी का कथन है:

माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥
(पन्ना ५५४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान द्वारा साधू-संतों के घर-गृहस्थी से नाता छोड़ कर वन में रह कर मुक्ति प्राप्त करने की धारणा का भी डट कर विरोध किया गया है और इस प्रकार जरूरतों के लिए उपभोग एवं उत्पादन के की जरूरत को माना है। मानव को मुक्ति भौतिक संसार अथवा मानव समाज में रह कर और इसमें आपसी संतुलन स्थापित कर प्राप्त हो सकती है।

भौतिकवादी मत की पुष्टि इस बात से भी स्पष्ट होती है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उन सन्यासियों को घर-त्याग न करने के लिए दिशा-निर्देश दिया गया है जो मानवीय आधारभूत आवश्यकताओं को आध्यात्मिक विकास में रुकावट मानते थे :

अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥
बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥
(पन्ना ४६७)

अध्यात्म पुरुष आध्यात्मिकता के मार्ग पर आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी अनिवार्य मानते हैं, जैसे :

भूखे भगति न कीजै ॥
यह माला अपनी लीजै ॥ (पन्ना ६५६)

सिख मत में अमीरी और गरीबी में सामंजस्य स्थापित करने की बात कही गई है। निर्धनता दूर करने हेतु जहां भौतिकवादी तत्वों के उपभोग को स्वीकार किया है वहीं अनैतिक, बेईमानीपूर्ण जीवन की अपेक्षा निर्धन रहने पर बल दिया है :

संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥
ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥
(पन्ना ८११)

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने अनुयायियों को जहां भौतिकवादी मूलभूत आवश्यकताओं की प्राप्ति हेतु व्यापार-वाणिज्य में शामिल होने पर बल दिया वहीं गलत साधनों द्वारा धन एकत्र न करने का उपदेश भी दिया क्योंकि वे इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि भौतिकवादी आवश्यकताओं की अतिशय इच्छा, पतन का कारण बन सकती है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि सिख मत में मूल तत्व तो आध्यात्मिकता ही है परंतु इसके साथ-साथ जीवन के सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों और समस्याओं जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर भी सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया गया है। सिख विचारधारा ने अपने अनुयायियों के लिए भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रसंग में एक आदर्श समतोल स्थापित किया है।

मानवता के धर्म-ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब

-प्रो डॉ दीनानाथ 'शरण'*

आज यह आम बात है कि लोग गर्व से कहते हैं कि एक से बढ़कर एक दूरगामी विमानों, मोबाइलों, सेल-फोनों और इंटरनेट के आविष्कारों से 'सारी दुनिया मुट्ठी में' है, लेकिन बारीकी और गहराई से विचार करें तो यह सरासर झूठ है, दिग्भ्रम हैं, क्योंकि जिन्दगी की कड़वी सच्चाई से लोग कन्नी काट रहे हैं। सच तो यह है कि लोगों का अपना परिवार ही मुट्ठी में नहीं है। परिवार में दादा-नाना की तो छोड़िये, मां-बाप की भी इज्जत, मान, लाज-लिहाज मिट्टी में मिलती जा रही है। आज दाम्पत्य लुप्त होती जा रही है। इसीलिये आज की जिंदगी में तनाव है, **tension, hypertension** है, हृदयाघात का रोग बढ़ता जा रहा है और तथाकथित वैज्ञानिक विकास के नाम पर मानवता विनाश की ओर दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है; दुनिया भर में अशांति है, उपद्रव है, अलगाववाद और घोर आतंकवाद है। है कोई उपाय इससे निपटने का? हां है। इन विस्फोटक विनाशकारी परिस्थितियों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में व्यक्त 'विश्व-बंधुत्व' के तत्वों को जानना, समझना और व्यवहार में लाना अत्यंत-प्रासंगिक, आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

सिख धर्म का उदय ही जात-पात, धर्म-मजहब के भेदभावों से ऊपर उठकर सारी मानवता के कल्याण के लिये हुआ था। यहां जात-पात का कोई भेद-भाव नहीं है। यहां सबका स्वागत है। सिखों में निम्न कहलवाने वाली जातियों से लेकर उच्च कहलवाने वाली जातियों के भी लोग शामिल हैं और हर आदमी को 'भाई' शब्द से संबोधित किया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ही देखा जाये तो जाहिर है कि हिंदू-मुस्लिम सभी संतों-फकीरों की बाणी को संकलित किया गया है। यहां जात-पात की कोई भेद-भावना नहीं। संतों-महात्माओं में ब्राह्मण, शूद्र, भट्ट आदि सभी की बाणी संकलित है। साफ तौर से कहा जाये तो अन्य 'धर्म ग्रंथ' तो धर्म-विशेष के ग्रंथ हैं, परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब धर्म-विशेष के भाव गुरु नानक नाम-लेवा सिखों के धर्म-ग्रंथ होने के साथ-साथ सारी मानवता के भी धर्म-ग्रंथ हैं। यह अद्वितीय ग्रंथ मानव-धर्म का ग्रंथ है। वस्तुत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन, संपादन एवं प्रस्तुतीकरण सारी मानवता के कल्याण के लिये किया गया। इसीलिये इसमें विश्व-बंधुत्व के तत्व सदा विद्यमान हैं। इसकी बाणी में हर युग के मानवों के लिये सह-अस्तित्व, आपसी भाईचारे और प्रेम-भाव के संदेश हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी की भी बाणी है जिनका पावन कथन है:

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
(पन्ना १३४९)

कलयुगी जीवों का उद्धार करने और भवसागर से पार कराने का उत्तरदायित्व गुरु नानक पातशाह की रब्बी ज्योति को मिला और श्री गुरु अरजन देव जी ने सभी बाणीकारों की आत्मिक ज्योति की, दिव्य प्रकाश-रूपी बाणी को 'ग्रंथ' रूप में समाहित कर, सारी मानवता को भवसागर पार करने के लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब रूपी जहाज बनाकर संसार को सौंप दिया:

भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु ॥

*दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)

कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ॥ *(पन्ना १४०८)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के तीन मुख्य संदेश

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के तीन मुख्य संदेश हैं—नाम जपना, किरत करना और वंड छकना। इन तीनों में विश्व-मानव के लिये कल्याण-भावना है। हर आदमी को परम प्रभु, सृष्टि-नियंता, कर्त्ता के प्रति आस्थावान्, श्रद्धावान होना ही चाहिये। किरत करना अर्थात् स्वयं परिश्रम करना हर आदमी के लिये जरूरी है। इससे देह-हाथ भी ठीक-ठाक रहें, अर्थोपार्जन भी हो ताकि आदमी को अपने जीवन-यापन में कोई कठिनाई न हो और दूसरों की धन-सम्पति लेने या हड़पने की इच्छा भी न जगे। अंत में वंड छकना—जिसका तात्पर्य है कि हर आदमी मिल-बैठकर, बांटकर खाये। इससे आपसी भाईचारे की भावना मजबूत होती है।

विश्व-बंधुत्व की भावना, मानव-मात्र की भलाई की भावना से ही प्रेरित होकर 'लंगर' की व्यवस्था शुरू हुई, स्कूल-कॉलेज और अस्पताल बने तथा सरायों की स्थापना हुई। मुझे अपना एक व्यक्तिगत अनुभव है कि जब सन् २००५ में मैं अमेरिका की यात्रा कर रहा था, न्यूयार्क के गुरुद्वारे में मुझे स-सम्मान 'परशादा' छकाया गया और ठहरने की बाबत पूछा गया। आपसी भाईचारे की भावना, जो गुरु साहिबान का संदेश है, कितने ही सिख-भाइयों में देखने को मिलती है। यहां न जातीय-संकीर्णता है, न पुरोहितगिरी।

इस प्रसंग में स्त्रियों के सम्मानपूर्ण स्थान की चर्चा भी आवश्यक है। कितने ही देशों में, धर्मों में, जातियों-वर्गों में स्त्रियों को समाज में अपने सम्मानपूर्ण स्थान के लिये संघर्ष करना पड़ा, पश्चात्य देशों में मैडम-द-बउआर का आंदोलन चला, अपने हिन्दुस्तान में भी हिंदू एवं मुस्लिम समाजों में स्त्रियों को दोयम समझा गया, इतिहास के दो-दस उदाहरण तो अपवाद मात्र हैं, परन्तु अधिकांश स्त्रियों को समाज में हेय-दृष्टि से ही देखा जाता रहा। उन्हें अवगुणों की खान तक कहा गया। उन्हें प्रताड़ना के ही लायक समझा गया, मर्दों के पैर की जूती समझा गया; मगर धन्य हैं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी और गुरु साहिबान की शिक्षा जिन्होंने स्त्रियों को समाज में सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान किया। श्री गुरु नानक देव जी ने उद्घोषणा की :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

(पन्ना ४७३)

नारी समाज का आधा हिस्सा है। जब आधे हिस्सा की उपेक्षा हो और हेय-दृष्टि से देखा जाये तब भाईचारे, परस्पर प्रेम, अपनेपन की भावना कैसे संचारित हो सकती है? अत: स्त्रियों को समाज में सम्मानपूर्ण स्थान दिलाने का यह महत्त्वपूर्ण और महान् कार्य करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने क्रांतिकारी मोड़ उपस्थित किया।

हम डॉ. जसबीर सिंघ साबर के मत से पूर्णतया सहमत हैं कि "आज का मानव विश्व स्तर पर अपनी बात कहने का इच्छुक नहीं, बल्कि हरेक ढंग के साथ उसे मनवाने का आदी बनता जा रहा है, चाहे उसकी बात उचित है या अनुचित। वह दूसरे की बात न तो सुनने के लिये तैयार है और न ही अपनी बात लागू करवाने के समय दूसरों के जज़बातों और हालात की परवाह ही करता है। परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार ऐसी रुचि को स्वीकार नहीं करते। इन बाणीकारों का विश्वास और कार्यशैली तानाशाही या शास्त्रार्थ वाली नहीं, बल्कि इनकी नींव संवाद है। बिना सोच-समझ के नस्ली, मजहबी या राजनैतिक कटुता के कारण किसी के साथ घृणा करना पाप मानते हुए ये बाणीकार *"हम सभना के साजन"* और *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* का स्वर-संगीत छेड़ते अथवा शुरू करते हैं। इसीलिये इस पावन ग्रंथ के प्रमुख बाणीकार श्री गुरु नानक देव जी ने अनुराग, सहनशीलता और शांति-स्थापना के लिये विश्व-मानव को संदेश दिया कि:

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ *(पन्ना ६६१)*

दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जिन्होंने सिख समुदाय को श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पूर्ण गुरु के रूप में मानने का आदेश दिया, ने भी मानव-मात्र की समानता पर जोर देते हुए विश्व-बंधुत्व का ही संदेश अपनी पावन बाणी में दिया :

हिंदु तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥ . . .
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥५॥८५॥
(अकाल उसतत)

बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की

*-डॉ मनजीत कौर**

सर्व-धर्म-समन्वय का पाठ पढ़ाए,
दीन-दुखियों को गले से लगाए,
पतितों से जो पुनीत बनाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
अंधों को मार्ग दर्शाए,
पिंगलों को पर्वत पर चढ़ाए,
कर्मकांडों से भी बचाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
विनम्रता को गुणों का सार बताए,
मोह से हटाए प्रेम जगाए,
विकारों पर जो विजय दिलाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
हृदय को परिवर्तित करवाए,
बैरी को जो मीत बनाए,
दुखों-क्लेशों से मुक्त कराए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
एक ईश्वर पर विश्वास दृढ़ाए,
सतिगुरु की महिमा बतलाए,
सेवा-परोपकार का जीवन बनाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
वहमों-भ्रमों से है बचाए,
भूले-भटकों को राह दिखाए,
मनुष्य-जीवन का सार बताए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
सतसंग का महत्व समझाए,
सब मनुष्यों को एक दर्शाए,
मानवता का जो पाठ पढ़ाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
कथनी-करनी एक कराए,
नारी-पुरुष समन्वय दर्शाए,
नीचों को जो उच्च कराए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
हक छीनना पाप बताए,
और संयमी जीवन बनाए,
युक्ति जीवन की जो सिखाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
प्रकृति से करना प्रेम सिखाए,
जीवों पर जो दया कमाए,
'मन जीतै जगु जीतु' दृढ़ाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।
शुभ कर्मों की ओर लगाए,
श्वास-श्वास सुमिरन करवाए,
लोक-परलोक सफल बनाए,
बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ फोन: ०१४१-२६५०३७०*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का ग्लोबल संदेश

*-स. गुरदयाल सिंघ 'दयाल'**

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब समूची मानव जाति का सांझा आत्मिक भंडार है।"

-सेक्रेड राइटिंगज ऑफ दा सिखज़' की भूमिका से।

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्व-सांझीवालता व भाईचारे के प्रतीक हैं।"

-साधू टी. एल. 'वासवानी'।

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब मनुष्यता व सांझीवालता की अगुआई करता है।"

-संपादक, 'लोकमत' (कोलकाता)

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही तब उसके संविधान का आधार होंगे जब कभी विश्व सरकार बनी, क्योंकि यही एक-मात्र सर्व-सांझा ग्रंथ है।"

-युनेस्को।

ऊपर दर्शाये सभी अधिकारिक टिप्पणियों में से जो सबसे विशेष व खास बात उभर कर सामने आयी है, वो है बिना मेर-तेर व पक्षपात के पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब का दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति व समाज के प्रति एक सोच व नज़रिये का रखना, क्योंकि उनके सद्‌गुणी विचारों की गिणती एक से प्रारंभ होकर एक पर ही समाप्त होती है। दूसरे या तीसरे अंक का उन्हें ज्ञान ही नहीं, उनकी उन्हें पहचान ही नहीं या यूं कह लें कि बराबरता के आगे के भेदभाव व फर्के-तिफर्के वाले कुटिल तथा जटिल अंक उनकी मति के हिसाब में ही नहीं, उनकी मर्यादा के दिमाग में ही नहीं क्योंकि अति कृपालु व दयालु सतिगुरु की मेहर व दया भरी दृष्टि सबके लिए एक समान है।

जैसे सूर्य रोशनी देते वक्त यह नहीं देखता कि उसे किस-किस क्षेत्र को रोशन करना है और किस-किस को नहीं, हवा बहते समय यह नहीं सोचती कि उसे किस-किस जीव की प्राण-रक्षा करनी है और किस-किस की नहीं, पानी चलते वक्त यह नहीं जानता कि उसे किस-किस खेत की प्यास बुझानी है और किस-किस की नहीं और फूल सुगंध बिखेरते समय यह नहीं पहचानता कि उसे किस-किस भंवरे को मोहित करना है और किस-किस को नहीं, ठीक वैसे धन्न-धन्न श्री गुरु ग्रंथ साहिब, जो सिख-जगत में 'शबद-गुरु' के रूप में माने व जाने जाते हैं, कतई-कतई नहीं बीचारते के **ੴ** के सुंदर तथा पवित्र स्वरूप वाली अलाही बाणी, रब्बी बाणी का सात्विक एवं निर्मल, ज्ञान रूपी उपदेश देकर उन्हें किस-किस मनुष्य का उद्धार करना है और किस-किस का नहीं, क्योंकि वे तो हैं ही सर्व-सांझे गुरु कुल दुनिया के सांझे। उनकी नज़र में सब बराबर हैं, न कोई छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब या अपना-बेगाना है बल्कि *"सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन"* की मर्ममयी उक्ति के अनुसार वे सबके और सब उनके हैं अर्थात वे सबको चाहने वाले हैं और स्वयं सबके चहेते :

—ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

—सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)

आज जातिवाद, नसलवाद और मुल्कवाद के नाम पर आदमी-आदमी को लड़ाने तथा

**गुरुद्वारा साहिब कालोनी, चास (बोकारो), झारखंड, मो. ०९८३५५-६८७२५*

बांटने का कार्य हो रहा है, जिसके चलते दंगों व जंगों में गांवों, शहरों एवं मुल्कों के करोड़ों-अरबों लोग कूड़ी नफरत की बलिवेदी पर चढ़ चुके हैं व चढ़ रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* के शुभ बचन के मुताबिक सिख धर्म व पंथ के महानायक श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने बाणी रूपी अपने शुद्ध तथा निरोल धार्मिक-सामाजिक उत्थान के आदेशों-उपदेशों द्वारा तमाम मतभेदों एवं फर्कों-तिफर्कों को सिरे से नकार कर बिखरे मोतियों की तरह बिखरे, भटके संसार के कुल लोगों को, वे चाहे एशियन हैं या यूरोपियन, गोरे हैं या काले, स्त्री हैं या पुरुष, परस्पर मेल-मिलाप तथा प्यार-सत्कार की अटूट व मजबूत माला में पिरोने का काम किया है और कर रहा है ताकि मनुष्यता-सभ्यता से कटे हुओं को यह अहसास हो जाए, आभास हो जाए कि हम सभी हिन्दू हैं या मुसलमान, सिख हैं या ईसाई, बोधी हैं या यहूदी, पारसी हैं या जैनी और फिर चाहे ब्राह्मण हैं या शूद्र, क्षत्रिय हैं या वैश्य, एक ही पिता परमेश्वर की संतान हैं, अंश हैं, फिर आपसी भिन्नता वाला अंतर कैसा?

—अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*
—सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना ६६३)

आज पूरा विश्व सिकुड़ कर एक गांव का रूप ले चुका है, जिसे हम विज्ञान का चमत्कार ही कहेंगे कि जिसकी तेज चाल व रफ्तार के चलते यह सब संभव हुआ। अब क्योंकि दुनिया भर के लोग नौकरी अथवा बिजनेस आदि के सिलसिले में अपने-अपने देशों से हट कर दूसरे मुल्कों में सैटल हो रहे हैं तो स्वाभाविक है कि वे अपनी-अपनी धार्मिक-सामाजिक पहचान वाली रुचियां-कृतियां भी साथ ले जा रहे हैं और वहां वे उनका खूब प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, जिससे सिख-पंथ भी अछूता नहीं। गुरु नानक नाम-लेवा सिख भी जहां-जहां गए हैं वहां-वहां ही अति दर्शनीय गुरुद्वारा सहिबान में बड़े ही जाहो-जलाल से युगो युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सुशोभित हुए हैं।

मुद्दे की बात, जब 'शबद-गुरु' के रूप में बाणी के बोहिथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज जिन-जिन स्थानों पर पधारे हैं तो निश्चय ही उन-उन इलाकों में खालसाई नियमों व उसूलों का बोलबाला हुआ है, केसरी निशान ने आसमान को छुआ है अर्थात 'गुरु-घर' की अति उच्च व पवित्र रहत-मर्यादा वाली सीधी तथा सपाट जीवन-शैली को देख-बूझ कर धर्म-कर्म की जड़ एवं मूल सच्चाइयों से अनजान, बेखबर लोगों में भी सिखी धारण करने की इच्छा जगी है, खंडे-बाटे का अमृत छकने की प्यास लगी है, जिसका फौरी लाभ यह होगा कि गुरसिखी व गुरबाणी पर आधारित रहन-रीति व पठन-पाठन के विश्वव्यापी चलन-प्रचलन से कौमी एकता एवं भाईचारे की नींव इस कदर मजबूत और पक्की होगी कि उस पर आसमान छूती बुलंदियों वाली अमन-शांति व समृद्धि-खुशहाली की 'बे-गमी इमारत' बड़ी आसानी से खड़ी हो सकेगी, जो शबद-गुरु के ज्ञान-प्रकाश का 'रूहानी मीनार' भी साबित होगी तथा नये युग 'ग्लोबल युग' का उगता सुहाना तारा भी :

—गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ *(पन्ना ६७)*
—धंनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥ *(पन्ना १६८)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की स्थापना, आवश्यकता और इतिहास

-डॉ. रीटा रावत*

बाणी-सृजन, भक्त-बाणी इकट्‌ठी करने और फिर इस सारे संग्रह का एक प्रस्तावित ग्रंथ तैयार करने की योजना और अगले गुरु साहिबान तक पहुंचाने का विचार, नि:संदेह श्री गुरु नानक देव जी का था। इस विचार ने ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्पादन की नींव रखी। इसके अतिरिक्त भारत के वेद-पुराण, शास्त्रों, स्मृतियों, धर्म-ग्रंथों की भाषा संस्कृत थी जो आम लोगों की समझ से बाहर थी। केवल विद्वान लोग ही इसे समझ सकते थे। गुरु जी ने अपनी इलाही बाणी के उपदेश आम लोगों की बोलचाल वाली भाषा पंजाबी में दिए हैं।

प्रो. साहिब सिंघ ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि गुरबाणी का संग्रह पहले से होता चला आ रहा था। श्री गुरु नानक देव जी अपनी बाणी के संग्रह के प्रति सजग थे। कहते हैं कि उनके पास अपनी बाणी के संग्रहीत रूप में एक पोथी विद्यमान थी। दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी और तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी के पास श्री गुरु नानक देव जी की बाणी उपस्थित थी। तभी तो श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी में साधारण समानता है। इसी प्रकार श्री गुरु अमरदास जी ने भी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रयुक्त १९ रागों में से १७ रागों में अपनी बाणी उच्चरित की है। उनके पास श्री गुरु नानक देव जी के १९ राग आदर्श रूप में उपस्थित थे तभी तो उन्होंने इन रागों में अपनी बाणी उच्चरित की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जैसे सर्वभारतीय महापुरुषों के विचारों के प्रतिनिधि ग्रंथ की स्थापना का विचार संकेत रूप में प्रथम गुरदेव श्री गुरु नानक देव जी का ही था। आपने अपनी रचना का संग्रह किया और साथ ही अपने विशाल भ्रमण के समय में कोने-कोने से भारतीय महापुरुषों के वचनों को सम्भालने और संग्रह करने का यत्न किया। श्री गुरु अंगद देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने इसी दिशा में अनथक परिश्रम किया। उन्होंने अपनी बाणी सम्भाली और भक्तों की बाणी एकत्रित की। श्री गुरु रामदास जी ने इस संग्रह के साथ अपनी बाणी शामिल की और इस तरह सारी बाणी श्री गुरु अरजन देव जी तक पहुंचाई, जिन्होंने पांचों गुरु साहिबान की बाणी समेत अपनी बाणी एकत्रित की। तत्पश्चात सारी बाणी के साथ-साथ भक्त-बाणी, भट्‌ट बाणी व अन्य बाणी को एकत्रित कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन आदि स्वरूप के रूप में १६०४ ई. में सम्पादित किया। केवल गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन बाणी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाद में शामिल की और आदि ग्रंथ साहिब की संपादना सम्पूर्ण की। १७०८ ई. में इस पवित्र ग्रंथ को प्रकट-गुरु का दर्जा देकर आपने व्यक्ति-रूप गुरु-परम्परा को बंद कर दिया। आपने स्वयं भी बहुत मात्रा में पावन बाणी की रचना की जो 'दसम ग्रंथ' नामक ग्रंथ में प्राप्त है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जो सम्पादकीय प्रबन्ध विद्यमान है यह विशेष रूप में श्री गुरु अरजन देव जी की ही देन है। इस तरह आप

*लेक्चरार हिन्दी, जे. एन. जे. डिगरी कालेज, गुरने कलां, संगरूर (पंजाब)-१४८०३१

पंजाबी साहित्यिक क्षेत्र में सर्वप्रथम सम्पादक भी निश्चित होते हैं। समूचे तौर पर देखा जाए तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सम्पादकीय प्रबन्ध इस प्रकार है :-

संपादना : सारी बाणी तीन भागों में बंटी हुई है जिसमें से ३१ रागों के नाम ३१ भारतीय प्राचीन रागों पर रखे गए हैं। पहला भाग सिख नित्तनेम की बाणियां—जपु (श्री गुरु नानक देव जी), सो दरु (गुरु नानक साहिब, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी के संग्रहित शब्द) और सोहिला (श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी के संग्रहित शब्द) की हैं, जो गुरु ग्रंथ साहिब के १३ पावन पन्ने बनते हैं। रागों का भाग पावन पन्ना १४ से १३५२ तक है और तीसरा भाग जिसमें अधिकतर भक्त फरीद जी, भक्त कबीर जी और गुरु साहिबान के श्लोक तथा ११ भट्टों के सवैये शामिल हैं, पन्ना १३५३ से १४३० तक हैं। इससे स्पष्ट है कि अधिकतर भाग ३१ रागों के ही हैं।

इतनी सारी बाणी को किसी क्रम में बांध सकना अपने आप में एक करिश्मा है। सच्ची बाणी को यूं पावन ग्रंथ में अंकित करने से कच्ची बाणी से अलग करने की सामर्थ्य-साकार हुई। यह पावन ग्रंथ रागों की गहरी सूझ का आदर्श रूप है, काव्य-शैलियों और छंदबंदी का व्यापक भण्डार है। किसी विशेष रूप में राग के हर काव्य-रूप की बाणी को बांध सकने के लिए भारी परिश्रम की आवश्यकता होती है। भक्त-बाणी एकत्रित करने के लिए बहुत संघर्ष की आवश्यकता थी। गुरु नानक साहिब के नाम पर काफी सारी कच्ची बाणी प्रचलित हो चुकी थी। पर श्री गुरु अरजन देव जी ने ऐसी ही बहुत सारी रचना का अध्ययन करके निर्णय लिया कि यह महला पहले की रचना नहीं है। इस कार्य के लिए अनथक परिश्रम किया गया।

आवश्यकता : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सारी पावन बाणी १२वीं से १७वीं सदी के भारतीय जीवन की समस्याओं का समाधान-रूप थी, जो कि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। ये समस्याएं आत्मिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक हैं। इन समस्याओं की उत्पत्ति बहुत कुछ देश की सामाजिक और राजनैतिक, आन्तरिक गिरावट द्वारा और बहुत कुछ विशेषकर उत्तरी भारत में मुसलमानी आक्रमण तथा मुसलमानी राज्य स्थापित हो जाने के बाद पैदा होने वाली स्थितियों में से हुई। भारत में विशेषकर दक्षिण भारत में, उत्तरी भारत और अन्य में भी ऐसी दशा थी। गिरावट के मुख्य कारण वर्ण आश्रम, दूसरे धर्मों के विरुद्ध घृणा-भावना, जात-पात, साम्प्रदायिक झगड़े, कर्मकाण्ड और त्याग के तरीके थे। सम्प्रदाय अनेक हो गए, जात-पात का जोर हो गया। शंकर, रामानुज, माधव, वल्लभ, चैतन्य ये सम्प्रदाय विशेषकर त्यागी प्रकृति के थे। इनका गृहस्थ की ओर से मुंह फिर गया, सच्चा ज्ञान भूल गए; भाव देश नाश हो गया, पाखण्ड सीमा पार कर चुका था। बोधी, जैनी, योगी, सन्यासी, उदासी, वैरागी सब गृहस्थ से भाग गए और समाज-प्रबन्ध बिगड़ने लगा। देशी राजा कुकर्म में फंस गए, वे चरित्र से गिर गए। उत्तरी भारत में भोग-बिलास, ऐशप्रस्ती बढ़ी और अपने सभ्याचार, बोली एवं और धर्म का त्याग होने लगा। प्रजा नये मुगल शासकों को प्रसन्न करने के लिए सभ्यता और अपने धर्म का त्याग करने लगी। देश में ऐसे समय पर पदार्थवादी रुचियों का बढ़ना स्वाभाविक था। यही मनुष्य को कुकर्म की ओर अग्रसर करती हैं। इस गिरावट को सारे देश में अनुभवी और सूझवान लोगों ने महसूस किया। अपनी सभ्यता-संस्कृति को बचाने के उद्देश्य से सारे देश में भिन्न-भिन्न भक्ति- लहरें उत्पन्न हुईं। सारे देश में भक्त साहिबान उठ खड़े हुए।

इन्होंने कुछ सांझे उद्देश्य देश के सामने रखने शुरू किए। ये सांझे उद्देश्य एक ईश्वर की पूजा, जात-पात रहित मानवता का विचार आदि थे। इन सांझे उद्देश्यों का सारे देश में प्रचार हुआ। महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब आदि सभी एक खतरे को अनुभव करके सांझे विचारों का प्रचार करने लगे।

देश को लीडरों की आवश्यकता हमेशा ही रहती है। आम तौर पर राजा ही देश का नेता होता था। पर आन्तरिक गिरावट करके राजा शिथिल हो चुके थे। वे देश का नेतृत्व नहीं कर सकते थे। राजाओं में नेकी, अच्छाई, साहस, चरित्र का अभाव हो चुका था। अब लीडर केवल साधारण लोगों या पिछड़े हुए लोगों में से ही आ सकते थे और ऐसा ही हुआ। सारे देश में साधारण ब्राह्मणों, क्षत्रियों और निम्न जातियों में से भक्त साहिबान और गुरु साहिबान के रूप में आदर्श अध्यात्मक नेता उठे। भक्त नामदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त रामानंद जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, श्री गुरु नानक देव जी सक्षम अगुआ थे। इन संतों, भक्तों ने मानव समाज की बागडोर सम्भाली। इन्होंने देश का पुनर्गठन भक्ति के सिद्धांतों के द्वारा करना शुरू किया। देश में एकत्व के स्थापन के लिए एक सांझे ईश्वर और एक मानवता का संदेश दिया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब, भक्त साहिबान और गुरु साहिबान १२वीं सदी से १७वीं सदी तक के ऐसे आदर्श सामाजिक नेता थे, जो देश के निकृष्ट, पाखंडी ब्राह्मणों, राजाओं से देश की बिगाड़ी जा रही स्थिति को सुधार रहे थे और ये लोग देश को पुरातन कर्मकाण्डी, जात-पात के फंदों से निकाल रहे थे। इसलिए पुरातन नेतृत्व खत्म हो रहा था और नए नेता पैदा हो रहे थे। देश की यह स्थिति पूर्ण रूप से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रकट है। देश के नए नेताओं ने शुद्ध और निर्मल जीवन के नारे लगाए। गुरु साहिबान और भक्त साहिबान ने देश के धार्मिक, राजसी, सभ्याचारक स्तर को स्थिर और शुद्ध करने के यत्न किए।

समाज का रोग नए नेताओं ने अनुभव किया। ये रोग ऐश्वर्यपूर्ण जीवन, स्वै-सत्कार की कमी, अपने सभ्याचार, धर्म, समाज और भाषा के गौरव की कमी, अपनी खुदगर्जी के लिए अन्याय करना, उदासी, वैरागी, सन्यासी, योगी आदि बनना, राजसत्ता का अंहकार और शुद्ध चरित्र पर बल न दिया जाना आदि था। इस सारी गिरावट को मध्यकालीन गुरु साहिबान और भक्त साहिबान ने 'नाम-हीन' जीवन कहा है। इसके विपरीत शुद्ध पवित्र जीवन 'नाम वाला' जीवन कहा है। इस प्रकार इन महान पुरुषों ने मिलकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में देश की समकालीन गिरावट को दूर किया और मनुष्य को स्वै-सत्कार वाला बलवान जीवन जीने के लिए प्रेरणा दी। ये नए उद्देश्य देश के सामने रखे। इन स्थितियों में से इन पांच सदियों से अधिक समय में भक्ति-काव्य उपजा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब उस बाणी का प्रतिनिधि-संग्रह है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सारी बाणी को श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी निगरानी अधीन भाई गुरदास जी के हाथों गुरमुखी लिपि में पावन आदि ग्रंथ साहिब के रूप में लिपिबद्ध किया।

लिपिबद्ध करने के समय में ही बाणी की सारी बोली को व्याकरणिक नियमों के अनुसार शब्द-जोड़ दिए गए। ये व्याकरणिक नियम संस्कत, प्राकृत और अपभ्रंशों की व्याकरण पर आधारित हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के व्याकरणिक नियम को ढूंढने का ढंग अलग-अलग प्रयोग किया है, पर पहुंचे एक ही परिणाम पर हैं। प्रो साहिब सिंघ और प्रो तेजा सिंघ ने एक ही समय

पर एक दूसरे से स्वतंत्र रूप में निश्चित किया है। दोनों ने व्याकरणिक नियम को ढूंढने का ढंग अलग-अलग प्रयोग किया है, पर पहुंचे एक ही परिणाम पर हैं। प्रो. साहिब सिंघ ने संस्कृत व्याकरण के नियमों को गुरबाणी से घटाया है और प्रो. तेजा सिंघ ने गुरबाणी के रूप को देखकर बीच में से ही नियमों को ढूंढा है।

व्याकरणिक नियमों को एकरूप करके भी भक्त-बाणी और गुरबाणी में एकरूपता उत्पन्न हो गई है, शब्द-जोड़ एकसार हो गए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से शब्द जो बहुत हद तक वैज्ञानिक और टकसाली स्वरूप के हैं और अब भी पंजाबी बोली के शब्द-जोड़ों को निश्चित करने के लिए पूरा नेतृत्व कर सकते हैं, बल्कि यही शब्द-जोड़ पूरी तरह अपना लेने चाहिएं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन १६०४ ई में पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा किया गया। सारी बाणी को एकत्रित करना, फिर उसको क्रमवार करना, सारी बाणी के व्याकरण को एकसार करना, कुछ बाणियों पर सिरलेखों को निश्चित करना, वारों के साथ श्लोकों को सम्बन्धित करना, सारी बाणी को संगीतात्मक एकसारता प्रदान करना, सच्ची और कच्ची बाणी को अलग करना, भक्तों की बाणी में गुरु-आदेशों के अनुसार सृजना के लिए कहीं-कहीं टिप्पणी करना, यह सारा सृजनात्मक कर्त्तव्य, एक सम्पादक होने के नाते श्री गुरु अरजन देव जी ने आप किया था। जो स्वरूप श्री गुरु अरजन देव जी ने तैयार किया, उसको लिखित रूप उस समय के प्रसिद्ध विद्वान भाई गुरदास जी ने दिया।

इतिहास में यह स्पष्ट है कि पोथी साहिब के तैयार होते ही १६०४ ई को इसका श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश कर दिया गया। 'शबद' गुरु है का सिद्धांत तो श्री गुरु अरजन देव जी के समय में काफी प्रचण्ड हो चुका था और जब शबद-ज्ञान से संवारे और रचित पोथी साहिब का श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाश किया गया, तो श्री गुरु अरजन देव जी ने उसे उच्च स्थान पर स्थापित करके, अपने सिखों सहित पोथी साहिब को माथा टेककर साबित कर दिया कि 'बाणी' ही 'गुरु' है, क्योंकि इसमें परमात्मा का शुद्ध और सम्पूर्ण प्रकाश है। श्री गुरु अरजन देव जी के समय 'शबद-गुरु' का सिद्धांत तो सिखों में प्रकट हो चुका था, पोथी साहिब को गुरु-हस्ती का संकेत भी स्वीकार किया जा चुका था। १७०८ ई में दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी गुरु-ज्योति का अधिकारी और वारिस किसी व्यक्ति को नियुक्त करने की बजाय 'दस पातशाहियों' की ज्योति श्री गुरु ग्रंथ साहिब को स्थापित करके, सारे पंथ को इस पावन ग्रंथ साहिब के अनुसार रहने का हुक्म दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही सिख जीवन की क्रिया के हर क्षेत्र में 'गुरु' का रोल अदा कर रहे हैं और कर सकते हैं। युगो-युग अटल और सदा जागृत रहने वाली 'गुरु-ज्योति' केवल 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' जी ही हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में वह सामर्थ्य है जिसमें सिखों और पंजाबियों को संसार के हर क्षेत्र में पहली पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया है। इसकी अमृत प्रेरणा किसी अन्य को भी सिखों की भांति समर्थ और शक्तिशाली बना सकती है। यह लासानी ग्रंथ संसार के आध्यात्मिक साहित्य में ऊंचे सत्कार का हकदार है।
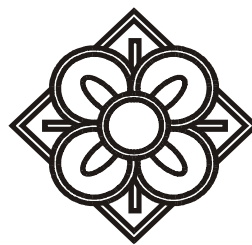
गुरु ग्रंथ साहिब

-श्री सुरजीत 'दुखी'*

सिखों का मार्गदर्शन करने को,
गुरबाणी की रचना बहुत ज़रूरी थी।
प्रिथी चंद जो 'नानक' नाम से कच्ची बाणी लिखवा रहे थे,
वो रचना निराधार और अधूरी थी।
पांचवें गुरु अरजन देव ने विचार किया,
गुरु ग्रंथ साहिब रचने का बीड़ा उठाया।
गुरु नानक, गुरु अंगद और गुरु अमरदास की
बाणी को बाबा मोहन के पास पाया।
भाई गुरदास जी को भेजा सैंचियां लाने,
उसने बाबा मोहन को सिमरनलीन पाया।
भरसक प्रयत्न कर भी जगा न सके,
बाबा मोहन ने उनको खाली हाथ लौटाया।
गुरु अरजन ने फिर आदेश दिया बाबा बुड्ढा जी को,
गोइंदवाल जाकर सैंचियां ले आने का।
समाधिस्त बाबा मोहन को जगाया नहीं समाधि से,
बाबा बुड्ढा जी को भी सौभाग्य नहीं मिला सैंचियां लाने का।
तब गुरु अरजन अरदास कर सिखों सहित
नंगे पांव गोइंदवाल साहिब आए।
समाधिस्त बाबा मोहन के चौबारे के नीचे,
गुरु जी ने अमृत वेले राग गउड़ी में शब्द गाए।
पावन गुरबाणी का कीर्तन सुन बाबा मोहन
तब समाधि से बाहर आए।
जब नीचे देखा आपने चौबारे से,
तो गुरु अरजन देव के दर्शन पाए।
पिता गुरु अमरदास की बाणी को याद कर,
पोथियां ले मोहन जी नीचे चले आए।
गुरु जी के चरणों में नतमस्तक हो गए,
और गुरु अरजन देव पोथियां ले वापिस आए।
गुरु नानक, गुरु अंगद और गुरु अमरदास
की बाणी इन पोथियों में समाहित पाई।
और भाई गुरदास जी से लिखवाई।
पंद्रह भक्तों और ग्यारह भट्टों की बाणी इसमें अंकित है।
गुरसिखों की बाणी भी इसमें संकलित है।
मानवता आधार लिया जीवन की शैली सिखलाई।
ऊंच-नीच का भेद मिटा '੧ੴ' की भक्ति समझाई।
दशम गुरु गोबिंद सिंघ ने आत्म-शक्ति से,
कंठ से फिर बाणी उचराई।
भाई मनी सिंघ के सहयोग से,
तख्त दमदमा साहिब में नई बीड़ लिखवाई।
१४३० पन्ने और ५८७४ शब्दों वाले 'ग्रंथ' को
संग्रहित किया और नई घटना तब घट पाई।
नांदेड़ सचखंड हजूर साहिब में,
गुरु ग्रंथ साहिब को मिली गुरिआई।
गुरु-घर की रीति मुताबिक,
गुरु गोबिंद सिंघ ने शीश झुकाया।
घोषणा कर सिखों को आदेश दिया,
गुरु ग्रंथ साहिब को ही सदीवी गुरु बतलाया।
गुरु ग्रंथ साहिब का सम्मान जरूरी है,
इसके ज्ञान बिना इंसान की जिन्दगी अधूरी है।
आओ! इसका श्रवण, मनन और निधि-ध्यासन कीजिए।
गुरु मानते रहिए इसे और जीवन का उद्धार कीजिए।
इसमें जीवन का हर पहलू समझाया गया है।
रूहानियत तक पहुँचने का ढंग भी सिखाया गया है।
अपनी जीवन-शैली को इसके आदेश अनुकूल बनाइये।
खुद जीने का ढंग सीखिए 'दुखी', दूसरों को भी बताइए।

*३३२/९, गली जट्टां, अन्दरून लाहौरी गेट, अमृतसर।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ सम्बंधित हवाला-स्रोत सूचना

*-संग्रहकर्त्ता स. गुरमेल सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ सम्बंधित इसके सम्पादन-काल (१६०४ ई) से लेकर २००६ ई तक भिन्न-भिन्न पक्षों पर अनेक प्रकार का कार्य हो चुका है, जिसका सारा सर्वेक्षण और मूल्यांकन करना (श्री गुरु ग्रंथ साहिब-अध्ययन : सर्वेक्षण और मूल्यांकान) किसी बड़ी और जिम्मेवार संस्था का काम है। हस्त-ग्रहित यह कार्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की आ रही गुरगद्दी की तीसरी शताब्दी को सामने रख कर तैयार किया गया है, ताकि नए नौजवानों खोजकारों/लेखकों को गुरबाणी के साथ संबंधित और अधिक गहरी खोज करने में मदद मिल सके। हवाला-ग्रंथ किसी साहित्य/विषय या धर्म-ग्रंथ आदि के बारे में खोज करने के आरम्भिक औजार होते हैं। इनके बिना खोज/अध्ययन के बारे में विचार नहीं किया जा सकता।

सीमाएं

१. सूचना गुरमुखी अक्षर-क्रमानुसार है और यहां पर सिर्फ पंजाबी (गुरमुखी) में प्राप्त हुए कार्यों को ही शामिल किया गया है।

२. गुरबाणी के 'सम्पूर्ण रूप' को सामने रखकर किए गए कार्यों को शामिल किया गया है, इतर (विकलोतरे) कार्यों को नहीं, जैसे कि डॉ. काला सिंघ (बिदी) की हवाला पुस्तक "गुरू नानक शबद रतनाकर" सिर्फ श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को ही अपने दायरे में लेती है। इस तरह के कार्यों को यहां शामिल नहीं किया गया है।

३. पंजाबी शब्द-रूप/जोड़-मूल वाले ही रखे गए हैं।

४. हवाला ग्रंथों/स्रोतों की सूचना 'बौधिक और समय-सीमा' के सामने है, इसलिए कई कार्यों का छूट जाना स्वाभाविक है, फिर भी इसकी सूचना देने वाले का धन्यवाद होगा।

५. फुटकल सिरलेख के नीचे दी गई सूचना (किसी क्रम के बिना) पूरी तरह से डॉ. हरनाम सिंघ शान की पुस्तक "श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दी कोषाकारी" (भाषा विभाग, पटियाला, १९९४) के ऊपर आधारित है। अन्य सुझावों का इंतजार रहेगा—

अकाली कौर सिंघ, श्री गुर रतन प्रकाश (तुक ततकरा), भाषा विभाग, पटियाला १९६३ (दोबारा प्रकाशन)।

अतर सिंघ (ज्ञानी)., श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पर्याय, संगरूर, १९०४.

अमर सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब तुक-ततकरा, भाषा विभाग, पटियाला, १९९९.

सतबीर सिंघ 'प्रिं', श्री गुरु ग्रंथ साहिब दा सार-विस्तार (३ भाग), न्यू बुक कंपनी, जालंधर, १९८५ (अधूरा)

संता सिंघ तातले, गुरबाणी तत्त-सागर (६ भाग), गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर, १९९५.

शबदारथ पोथीआं श्री गुरु ग्रंथ साहिब (४ भाग), शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, १९८६ (चौथी बार)।

साहिब सिंघ (प्रो.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण (१० भाग), राज पब्लिशर्ज, जालंधर,

**प्राजैक्ट फैलो, धर्म अध्ययन विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।*

१९७१ (दूसरी छाप)।
शाम सिंघ (भाई), पर्याय आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के, द ऐंगलो, उर्दू और गुरमुखी प्रेस, अमृतसर, १९०६.
सुते प्रकाश (संत), पर्याय आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब (२ भाग), वजीर हिंद प्रेस, अमृतसर, १८९८
सुरिंदर सिंघ (कोहली) (डॉ.), गुरबाणी अखाण अते अखौतां, भाषा विभाग, पटियाला, जुलाई, १९७२.
सेवा सिंघ सेवक, गुरबाणी संखिआ कोश, सिंघ बादर्स, अमृतसर, मई १९७१.
सोहण सिंघ शीतल (ज्ञानी), गुरबाणी विच पुराणिक भगत ते पातर, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, १९८५.
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के मद्ध पर्याय फारसी पदां के, चश्मा-ए-नूर, अमृतसर, १९५२.
हरप्रीत कौर—गुरमेल सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचलीआं परिभाषावां दा कोश, प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, २००३.
हरबंस सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरशन निरणै सटीक (१३ भाग), गुरबाणी सेवा मिशन, पटियाला, १९९२.
काहन सिंघ नाभा (भाई), महान कोश, भाषा विभाग, पटियाला, १९९९ (छठी बार)।
गुरमत मारतंड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९६२.
किरपाल सिंघ (गि.), सम-अर्थ कोश, भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, अमृतसर-१९६२.
कृपाल सिंघ (संत), सम्प्रदाय सटीक श्री गुरु ग्रंथ साहिब (१० भाग), भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, अमृतसर, १९८१.
गंगा सिंघ ग्रंथी (भाई), इंडैक्स श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी (तुक-ततकरा), इन्द्रा प्रेस, शिमला, संवत् नानकशाही ४४६/१९१४ ई.
गुरचरन सिंघ (डॉ.), शबद अनुक्रमणिका श्री गुरु ग्रंथ साहिब (२ भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९४ (द्वितीय संशोधित संस्करण)
उपरोक्त, श्री गुरु ग्रंथ कोश (२ भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००३.
उपरोक्त, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचले फारसी-अरबी मूलक शबदां दा कोश, प्रो. साहिब सिंघ ट्रस्ट, पटियाला, २००६ (शुद्ध रूप)।
गुरनाम सिंघ (डॉ.), आदि ग्रंथ-राग कोश, पवित्र प्रमाणिक प्रकाशन, पटियाला, १९८३.
गुरबखश सिंघ केसरी, संखिआ कोश, पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना, सितंबर, १९६१.
गुरबखश सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दा गणित कोश, खालसा प्रचार प्रेस, तरनतारन, १९४०.
गुरबाणी पाठ निरणै अर्थात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे कुझ पाठां दा पर्यावां सहित संग्रह, मालवा प्रेस मोगा, १९४९.
गुरमुख सिंघ निरमला, श्री गुरु ग्रंथ साहिब बाल बोधवी अर्थमाला, अमृतसर, १९४५.
गोबिंद दास उदासीन (संत), पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब (५ भाग), अमोलक प्रेस, अमृतसर, १९२८.
चंदा सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पर्याय (पत्थर छाप), अमृतसर, १९०७.
चंदा सिंघ (पंडित), सगम प्रिया श्री गुरु ग्रंथ साहिब, गुरमति प्रचार जत्था, गुरमुखी प्रेस, अमृतसर, १८८७.
चरन सिंघ (डॉ.) बाणी बियोरा, खालसा ट्रेक्ट सोसायटी, अमृतसर-१९०२ (निरगुणीआरा पत्रिका, विशेष अंक)।
जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा (ज्ञानी), गुरू ग्रंथ साहिब बाणी बियोरा, (पहला भाग), सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर, १९९२.
तारा सिंघ नरोत्तम (पंडित), गुरू-गिराग्थ

कोश (२ भाग), राजिन्द्रा प्रेस, पटियाला, १८८५.

तेजा सिंघ सोढी, श्री गुरबाणी प्रकाश कोश (या) गुरबाणी सफेवार पदां दे अर्थ (२ भाग), शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, १९३३.

देवा सिंह (पंडित), निरमला, पर्याय भगत बाणी के ते श्री गुरु ग्रंथ साहिब के, अमृतसर, १८९६.

नरैण सिंघ मुजंग वाले (गि.), श्री गुरू ग्रंथ साहिब सटीक (१० भाग), सदर बाजार, लाहौर छावनी, १९३९.

निहाल सिंघ सूरी अकाली, श्री गुरमति भउ प्रकाशनी टीका श्री गुरु ग्रंथ साहिब, कलगीधर प्रेस, रावलपिंडी, १९३० (अधूरा)।

परमिंदर कौर क्रांति, गुरबाणी कथन-कोश, लोकगीत प्रकाशन, २०००.

परमिंदरजीत सिंघ, श्री गुरू ग्रंथ साहिब विचले प्रश्न-उत्त रां दा कोश, प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, २००३.

प्यारा सिंघ पदम (प्रो.), गुरबाणी कोश, सरदार साहित्य भवन, पटियाला, जनवरी १९६०.

उपरोक्त, गुरू ग्रंथ विचार कोश, पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, सितंबर १९६९.

उपरोक्त, श्री गुरू ग्रंथ संकेत कोश, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, जनवरी १९७७.

उपरोक्त, श्री गुरू ग्रंथ महिमा कोश, नानक प्रकाश पत्रिका, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला जिल्द-१६, अंक-१, जनवरी-जून १९८३.

प्रताप सिंघ जोतशी (ज्ञानी), अनेक अरथी गुरू ग्रंथ साहिब—इक नाम अनेक नामावली कोश, भाई लाभ सिंघ एण्ड सन्ज, अमृतसर १९१६.

पर्याय आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब, (पत्थर छाप), गुरमति प्रेस, अमृतसर १९०७.

प्रताप सिंघ (ज्ञानी), आदि श्री गुरू ग्रंथ दा कोश, भाई बूटा सिंघ प्रताप सिंघ, अमृतसर, १९५८.

बदन सिंघ (ज्ञानी), टीका श्री गुरू ग्रंथ साहिब (फरीदकोटी टीका), (४ भाग), भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९७०.

बलवीर सिंघ (डॉ.), निरुकत श्री गुरु ग्रंथ साहिब (२ भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७५ (चल रहा प्रोजेक्ट)।

बिशन सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब सटीक (८ भाग), भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, अमृतसर १९२८-४८.

बूटा मल चौधरी, कोश श्री गुरु ग्रंथ साहिब-प्राचीन साम्प्रदायिक, यन्त्रालय गुलशन पंजाब, रावलपिण्डी, तिथि नहीं।

भगवान सिंघ (ज्ञानी), आदि श्री गुरू ग्रंथ साहिब पदारथ कोश, मियां चिरागदीन लाहौर १९०१.

महिताब सिंघ (मास्टर), श्री गुरू ग्रंथ साहिब विच आए ऐतिहासिक/मिथिहासिक नावां-थावां दा कोश, सिंघ ब्रादर्स, अमृतसर १९९५ (पांचवीं बार)।

मनी सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरू ग्रंथ साहिब सिधांतक टीका (८ भाग), गली शहीद बुंगा कौलसर, श्री अमृतसर, १९८०.

मोहन सिंघ वैद (भाई), गुरमति अखौतां, तरनतारन, १९२७.

रण सिंघ बेदी, पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे, अमृतसर, १८७२.

रतन सिंघ जग्गी (डॉ.), श्री गुरू ग्रंथ विश्व कोश, (२ भाग) पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००२.

राम सिंघ बडाला (ज्ञानी), गुरबाणी अदुत्ती कोश, भाई प्रताप सिंघ सुंदर सिंघ, अमृतसर, १९२१.

लाल सिंघ संगरूर (ज्ञानी), गुरू ग्रंथ सिद्धांत संग्रह, गुरमति प्रेस (बावा बुध सिंघ प्रेस,

अमृतसर, अप्रैल, १९५३).

वीर सिंघ (भाई), गुरबाणी संथिआ पोथीआं, (७ भाग), (संपा.) डॉ. बलबीर सिंघ, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, १९६३ (अधूरा, सोरठि राग तक)।

उपरोक्त, श्री गुरू ग्रंथ कोश, खालसा ट्रैक्ट सोसायटी, अमृतसर, १९८३. फुटकल (बिना किसी क्रम में)।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के पर्याय, भाषा विभाग, पटियाला, (हस्तलिपि-२३७ नं.)

उपरोक्त, खालसा कालेज, अमृतसर, (हस्तलिपि-**SHR**-१४७३).

उपरोक्त, सिख रेफरेंस लाइब्रेरी, अमृतसर, हस्तलिपि-६१२३ (अब नष्ट)।

उपरोक्त, पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़, (नं. ३६८, सुरक्षित)।

उपरोक्त, सेंट्रल लाइब्रेरी, पटियाला (नं. २७१८, सुरक्षित)।

पर्याय श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी दे अरबी-फारसी पर्याय, डॉ. चंनण सिंघ चन्न यू. के. के पास, **RL**-५२३, सुरक्षित।

भक्त गंगा राम सिंधी, पर्याय गुरबाणी के, देहरादून, डॉ. बलवीर सिंघ साहित्य केन्द्र, (नं. २९५ सुरक्षित)।

दया सिंघ भाई), पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब के (केवल हवाला ही प्राप्त है अन्य कोई विवरण नहीं)।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब प्रश्न-उत्तर व्याख्या, डॉ. चंनण सिंघ यू. के. के निजी संग्रहालय में।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के अर्थ, गि. करतार सिंघ के द्वारा १९३० ई में किसी पोथी से की गई नकल, डॉ. चन्न के निजी संग्रहालय में।

अंतिका

पहले दी गई हवाला स्रोत-सूचना के बारे में विस्तृत, वर्णनात्मक, भण्डार-स्थान, अध्ययन, विश्लेषण और दूसरे अनेक विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए नीचे दी गई पुस्तकों/कार्यों को देखा जा सकता है :

अशोक, शमशेर सिंघ, पंजाबी हसत लिखतां दी सूची (२ भाग), भाषा विभाग, पटियाला, १९६१, ६३.

अमरजीत सिंघ डॉ. (संपा.), टीकाकारी, इतिहासकारी ते पत्रकारी : कुझ दृष्टिकोण (सैमीनार पेपर), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८९.

हरनाम सिंघ शान (प्रो.), गुरु ग्रंथ साहिब दी कोशकारी, भाषा विभाग, पटियाला, १९९४.

तारन सिंघ (डॉ.), गुरबाणी दीआं विआखिआ प्रणालीआं, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८०.

नानक प्रकाश पत्रिका (विशेष अंक), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, जिल्द ८वीं, अंक २, दिसंबर, १९७६.

पंजाबी दुनिया (पंजाबी कोशकारी विशेष अंक), भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, अंक ८, ९, १०, अक्तूबर, २००१ (१६ पेपर कोषकारी बारे)।

Gurnek Singh (Dr.), Guru Granth Sahib : Interpretation, Meaning and Nature, National Book Shop, 32-B, Chandni Chowk, Delhi, 1998.

Rajinder Kaur (Dr.), Sikh Exegetical Writings : A Study in the various Traditions, Punjabi University, Patiala, 1998 (Ph. D. Unpublished).

अनुवादक- बीबा वलविन्दर कौर,
खोज छात्रा, दर्शन शास्त्र-अध्ययन विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

गुरबाणी राग परिचय-१४

राग तिलंग

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का उत्तरार्द्ध राग तिलंग से आरंभ होता है। राग तिलंग एक प्रसिद्ध मनोहर और सरल राग है। इसके आरोह और अवरोह में पांच-पांच स्वर लगते हैं। आरोह में शुद्ध निषाद स्वर लगता है तथा अवरोह में कोमल निषाद स्वर लगता है। गायन का समय रात्रि का दूसरा प्रहर है-

आरोह- सा ग म प नी सा।

अवरोह- सा नी प म ग सा।

राग तिलंग में श्री गुरु नानक देव जी के पांच शबद हैं। प्रथम शबद की भाषा से उत्तरार्द्ध भाग का संदेश मिलता है। इस शबद में विशुद्ध अरबी और फारसी भाषा के शब्द हैं। इसका उच्चारण श्री गुरु नानक देव जी द्वारा मक्का की यात्रा के समय हाजियों के सम्बोधन के सन्दर्भ से किया माना जाता है। हम अल्प-बुद्धि मनुष्य-मात्रों को समझाने हेतु सतिगुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि इस नाशवान संसार में मौत के फरिश्ते ने मेरे सिर के केश पकड़े हुए हैं। मेरे समान कोई अभागा निंदक, लापरवाह, ढीठ और भयहीन नहीं है। दास नानक, प्रभु के चरणों की धूल का इच्छुक है:

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥ . . .
बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ (पन्ना ७२१)

श्री गुरु नानक देव जी का तृतीय शबद माधुर्य के प्रतीकों से युक्त रंगरेज के लोक-जीवन पर आधारित है। हमारे शरीर रूपी वस्त्र में माया की मांड लगी है तथा फिर लोभ में रंगा हुआ है। मेरे प्रभु को इस प्रकार की स्थिति पसंद नहीं है। इसके विपरीत यदि हमारी काया रंगने की मटकी बन जावे और उसमें मजीठ का पक्के रंग का प्रभु का नाम डाला जावे। इसको रंगने वाला रंगरेज स्वयं प्रभु हो। सो यदि जीव-स्त्री मन को प्रेम के रंग से रंगे, तब अभूतपूर्व रंग चढ़ता है। जो गुरमुख प्रभु के प्रेम के लाल रंग में अनुरक्त हैं, प्रियतम प्रभु उनके समीप विद्यमान है। प्रभु स्वयं ही संवारता है, स्वयं कृपा करता है और स्वयं ही प्रेम से पूर्ण करता है। इस प्रकार जीव-स्त्री प्रभु को भली लगती है और प्रभु के चरणों में सम्मान पाती है। इस प्रकार नाम स्मरण करने वालों पर मैं बार-बार बलिहार जाता हूं और उनके चरणों की धूल पाने की प्रार्थना करता हूं :

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥ . . .
काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥
धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥

*C/o S. Gurmeet Singh, H-230/MDC/SEC-5, Shikhar Apartment, Panchkula.

आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥
(पन्ना ७२१-२२)

श्री गुरु नानक देव जी के प्रथम शबद *'दुनीआ मुकामे फानी'* के अनुरूप श्री गुरु अरजन देव जी का प्रथम शबद भी दृश्य-जगत की नश्वरता पर आधारित है। नश्वरता के विचार को ध्यान में न रखकर दुनिया लोभ-लालच में भटकी हुई है और दूसरों की कमाई खाती है। आसमान, पृथ्वी, वृक्ष, पानी सभी कुछ परमात्मा की रचना हैं। प्रभु ने अचेतन मिट्टी में चेतन ज्योति मिला कर यह जगत बना दिया है। मनुष्य जब माया के प्रभाव में भूत-प्रेत और पशुओं के समान हराम खाता है तो परमात्मा उसे नरक की सजा देता है। जब मृत्यु का देवता इसे आकर बांध लेता है तब दुनिया से विदा होते समय पिता, भाई, दरबार, धन-दौलत किस काम आवेंगे? वह पवित्र प्रभु सभी हाल जानता है। अत: संतों के द्वार पर प्रभु से रक्षा हेतु प्रार्थना करता है :

खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥
असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥
बंदे चसम दीदं फनाइ ॥
दुंनीआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥रहाउ॥
गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥
दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥
वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥
जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइ ॥
हवाल मालूमु करदं पाक अलाह ॥
बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥
(पन्ना ७२३)

गुरमति विचार के अनुसार प्रभु के एकंकार स्वरूप का वर्णन है। उसमें प्रभुता के साथ करुणा का भी समन्वय है। राग तिलंग के एक शबद में प्रभु के मेहरबान स्वरूप पर बल दिया गया है। वह सृजनहार प्रभु सभी का पालन करने वाला है। हे प्राणी! तू घबराता क्यों है? जिसने तुझे उत्पन्न किया है वही सारी सृष्टि को आश्रय भी देता है :

तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥
जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥
(पन्ना ७२४)

राग तिलंग में बाणी का विस्तार अधिक नहीं है। इसमें शबदों के बाद अष्टपदियां अलग शीर्षक में नहीं हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी के शबदों से पूर्व श्री गुरु नानक देव जी एवं श्री गुरु रामदास जी की एक-एक पावन रचना दी गई है। श्री गुरु नानक देव जी की पावन रचना में १० पद हैं। हे भाई! जिस परमात्मा ने यह जगत बनाया है वही इसकी रक्षा भी करता है। यह नहीं कहा जा सकता कि वह देख-रेख कैसे करता है। जिसने जगत रूपी उद्यान बनाया है वह आप ही इसकी जरूरतें जानता है और उन्हें पूर्ण भी करता है :

जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥
आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥
(पन्ना ७२४-२५)

श्री गुरु रामदास जी की पावन बाणी रूपी रचना *"हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥"* में २२ पद हैं, जिसमें वे अपने गुरु पर बार-बार बलिहार जाते हैं, जिन्होंने हरि की कथा-कहानी सुनाई है। इस रचना के चार भाग हैं। पांचवें, दसवें और पंद्रहवें पद में 'नानक' शब्द का सम्बोधन है :

तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥ . . .
जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥ . . .
नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥ *(पन्ना ७२५-२६)*

बलिहार होने का उल्लेख पद २० में भी है किन्तु रचना का सारांश अन्तिम दो पदों में होने से 'नानक' शब्द का प्रयोग अन्तिम पद में है। हे प्रभु! तुम मेरे मालिक हो, मेरे साहिब हो, तुम ही मेरे बादशाह हो। यदि तुम्हें उपयुक्त लगे तभी भक्ति संभव है। तुम गुणों के भंडार और गहन गंभीर हो। प्रभु स्वयं ही निरंकार के रूप में एक मात्र सत्ता है और वही अपने विस्तार से अनेक रूप वाला भी है। जो बात प्रभु को भली लगती है उसी में जीवों का भला निहित है :

तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥
तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणी गहीरा ॥
आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ॥
जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥
(पन्ना ७२६)

राग तिलंग में श्री गुरु तेग बहादर जी के तीनों शबद चेतावनी के रूप में हैं। यह जगत स्वप्न के समान है। यहां का लेन-देन इसी जीवन तक सीमित है। हे मन! चेतना में आ, तू क्यों लापरवाह होकर सो रहा है? जिस प्रकार छिद्र वाले घड़े से पानी निरंतर बहता रहता है उसी प्रकार प्रत्येक क्षण आयु बीतती जा रही है। हे मनुष्य! यदि परमात्मा का नाम स्मरण करना है तो शीघ्र ही इसमें प्रवृत्त हो जा :

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥ (पन्ना ७२६)

राग तिलंग में भक्त-बाणी में भक्त कबीर जी का एक शबद तथा भक्त नामदेव जी के दो शबद हैं। इन तीनों शबदों की भाषा में भी अरबी-फारसी है तो दूसरी पंक्ति में सामान्य संत-भाषा।

हे सज्जन प्यारे! तुम्हारी खबर शीतलता देने वाली है। मैं तुम पर बलिहार जाता हूं। तेरा नाम ऊंचा है, तेरी बेगार भी प्यारी है। न तू कहीं से आया, न तू कहीं गया, न तू कहीं जा रहा है, फिर भी द्वारिका नगरी में रास भी तुम्हीं रचाते हो अर्थात कृष्ण भी तुम्हीं, हो। तुम्हारी पगड़ी सुंदर है, तुम्हारे बोल मीठे हैं। तुम सभी जगह हो। केवल द्वारिका नगरी या मुस्लिम स्थान तक सीमित नहीं हो, सृष्टि के हजारों मंडलों के तुम अकेले ही मालिक हो। हे नामदेव के स्वामी! घोड़ों के रथ पर सवार सूर्य और ऐरावत हाथी के स्वामी इन्द्र भी तुम हो। तुम ही नर-नारायण हो :

हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥रहाउ॥
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥
द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥
द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥
चंदीं हजार आलम एकल खानां ॥
हम चिनी पातिसाह सांवले बरनां ॥३॥
असपति गजपति नरह नरिंद ॥
नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥ (पन्ना ७२७)

राग तिलंग में आध्यात्मिक चिंतन के अतिरिक्त सामाजिक प्रतिबद्धता सम्बंधी भी श्री गुरु नानक देव जी का एक शबद है जिसमें बाबर के आक्रमण और आतंक का वर्णन है। इसमें मुगल शासन के बीच में १५२१ से १५४० तक शेरशाह सूरी शासन की भविष्य बाणी है जो संवत् के अनुसार १५७८ और १५९७ है :

आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ (पन्ना ७२३)

आत्मिक बोध और नाम-सुमिरन का उपदेश दिया गया है।

गुरबाणी चिंतनधारा-२५

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

न करमं ॥ न काए ॥ अजनमं ॥ अजाए ॥१००॥

हे वाहिगुरु! न तू किसी कर्म के बंधन में है न तेरी रचना पंच तत्वों से हुई है। तू जन्म-मरण से रहित है। तू जन्म देने वाली (मां) से भी रहित है।

गुरु कलगीधर पातशाह सौवें बंद में उस ईश्वर के अनुपम गुणों एवं विलक्षणताओं का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं, हे परमात्मा! न तू कर्मों के अधीन है और न ही कर्मों के वश में पड़ कर तुझे शरीर धारण करना पड़ता है, जैसा कि जपु जी साहिब में जीव के लिए कर्मों के सन्दर्भ में पावन संदेश है :

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ *(पन्ना ४)*

अर्थात् पुण्य और पाप कर्म कहने मात्र के लिए नहीं बने। जीव अपने कर्मों का फल संस्कार रूप में साथ ले जाता है और उसे अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की दरगाह में लेखे भोगने पड़ते हैं। लेकिन वह परमेश्वर इन सब कर्मों के लेखों-जोखों से मुक्त है। अत: हे प्रभु! कर्मों के अधीन न ही तू स्त्री से पैदा हुआ है, जैसा कि समस्त जीवों की उत्पत्ति स्त्री से मानी गई है, जैसा कि 'आसा की वार' बाणी में गुरु नानक पातशाह ने स्पष्ट किया है :

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥
(पन्ना ४७३)

न चित्रै ॥ न मित्रै ॥ परे हैं ॥ पवित्रै ॥१०१॥

हे अकाल पुरख! तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती। तेरा कोई मित्र नहीं। तू सब जीवों से परे (निर्लेप) है।

इस बंद में गुरु पातशाह उस परवरदिगार के गुणों का गान करते हुए फरमान करते हैं कि हे ईश्वर! तू निराकार है, इसलिए तेरी कोई मूर्ति नहीं बनाई जा सकती। किसी विशेष रूप में तुझे कथन नहीं किया जा सकता। तेरा कोई मित्र नहीं क्योंकि तेरे बराबर का कोई नहीं। ज्ञानी जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा ने नित्तनेम बोध में 'मित्रै' शब्द का अर्थ 'मित' रूप में किया है अर्थात् न ही तेरा कोई अनुमान अंदाजा (मित) लगाया जा सकता है। तू सबसे परे (दूर) रहने वाला है अर्थात् सबसे निर्लिप्त भाव से रहता है इसलिए तेरा किसी से कोई विशेष प्रयोजन नहीं है। तेरी हस्ती परम पवित्र है।

प्रिथीसै ॥ अदीसै ॥ आद्रिसै ॥ अक्रिसै ॥१०२॥

हे प्रभु! तू पृथ्वी का मालिक है। तू आरंभ से ही मालिक है। तू किसी को दिखाई नहीं देता। तू कभी कमजोर नहीं होता।

इस बंद में कलगीधर पातशाह प्रभु के शक्तिशाली आदि एवं सदा कायम रहने वाले स्वरूप को बयान करते हुए स्पष्ट करते हैं कि हे वाहिगुरु! सारी रचना तेरी ही है। तू समस्त रचना का मालिक है और यह मलकियत प्रारंभ से ही कायम है। तू प्रत्यक्ष रूप से इन आंखों से दिखाई नहीं देता क्योंकि हे परमात्मा! तू ज्ञान-इन्द्रियों की पहुंच से परे है और तू कभी

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०९३१४-६०९२९३*

भी क्षीण नहीं होता जैसा कि समयानुसार तथा आयु अनुसार यह शारीरिक बल कम होता जाता है और प्रत्येक प्राणी पर यह नियम लागू होता है लेकिन उस ईश्वर का बल (शक्ति) सदैव एक रूप अटल व कायम रहती है।

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

अर्थात् तेरी कृपा से यह छंद उच्चारण करता हूं।

कि आछिज्ज देसै ॥ कि आभिज्ज भेसै ॥
कि आगंज करमै ॥ कि आभंज भरमै ॥१०३॥

हे वाहिगुरु! तेरा देश अखंड (नाशरहित) है। तेरा वेश भी नाशरहित है। तू धार्मिक रस्मों से जीता नहीं जा सकता। कोई भ्रम-वहम तुझे हिला नहीं सकता।

अर्थात् वह परमेश्वर अखंड स्वरूप है जिसे कोई ताकत खण्डित नहीं कर सकती। हे प्रभु! तेरा पहरावा भी कदाचित नष्ट होना वाला नहीं है। किसी धार्मिक कर्मकांड द्वारा तुझे किसी तरह के क्रिया-कलापों, रस्मों-रिवाजों द्वारा तुझे जीता अर्थात् प्रसन्न नहीं किया जा सकता। तू भ्रम-भुलेखों से रहित है अत: कोई वहम-भ्रम तुझे अपने अटल नियमों से विचलित नहीं कर सकता।

कि आभिज लोकै ॥ कि आदित सोकै ॥
कि अवधूत बरनै ॥ कि बिभूत करनै ॥१०४॥

हे मालिक! तेरा देश अखंड तथा अविनाशी है। तू सूर्य के तेज को भी सुखाने वाला है। तेरा स्वरूप माया के प्रभाव से परे है। तू धन-सम्पदा (ऐश्वर्य) का प्रमुख स्रोत है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस बंद में उस प्रखर बल वालों की शक्ति को भी नष्ट करने की समर्थता वाला तथा सुख-सम्पदा के परमधाम स्वरूप का वर्णन करते हुए कथन करते हैं कि हे परवरदिगार! तेरा ठिकाना अविनाशी अथवा कभी नष्ट न होने वाला है। तू प्रचण्ड सूर्य के तेज प्रकाश को भी सुखाने अर्थात् नष्ट करने की समर्थता वाला है। तेरी हस्ती माया के प्रभाव से रहित है, अत: त्रिगुणी माया तेरी ही रचना है। वह तुझ पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकती जबकि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी इसके प्रभाव से नहीं बच सकते। अत: शक्तिशाली माया भी तेरे ही अधीन है। तू धन-दौलत समृद्धि का भंडार है।

कि राजं प्रभा हैं ॥ कि धरमं धुजा हैं ॥
कि आसोक बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥१०५॥

हे वाहिगुरु! तू राजाओं की शोभा है। तू धर्म का झण्डा है। तेर स्वरूप शोकरहित है। तू सबका शृंगार है।

कलगीधर पातशाह के चिन्तानुसार परमेश्वर का ही तेज राजाओं में भी दिखाई दे रहा है अर्थात् उस ईश्वर का देवीप्यमान स्वरूप राजाओं की शोभा बढ़ा रहा है। हे प्रभु! तू धर्म की शोभा है अर्थात् धर्म की राह दिखाने वाला है। तेरा स्वरूप चिन्ता, दुख, तकलीफों से रहित है। समस्त जीवों की शोभा तुझ से ही है अर्थात् तू सब जीवों का गहना है।

कि जगतं क्रिती हैं ॥ कि छत्रं छत्री हैं ॥
कि ब्रहमं सरूपै ॥ कि अनभउ अनूपै ॥१०६॥

हे प्रभु! तू सृष्टि का कर्त्ता है, सूरमों का सूरमा है। तेरा स्वरूप सौन्दर्य का मूल है। तू ऐसा ज्ञान स्वरूप है जो उपमा से रहित है।

गुरु पातशाह इस बंद में ईश्वर के विविध गुणों का बखान करते हुए फरमान करते हैं कि हे परमेश्वर! तू जगत की सृजना करने वाला है। तू महान योद्धा है। तेरी हस्ती सर्वोच्च है। तू ज्ञान का अथाह भंडार है। तेरी उपमा अवर्णनीय है। तू स्वयं से प्रकाशवान है। तू बेमिसाल है। तेरी महिमा को बयान करना नामुमकिन है।

कि आदि अदेव हैं ॥ कि आपि अभेव हैं ॥

कि चित्तरं बिहीनै ॥ कि एकै अधीनै ॥१०७॥

हे परमेश्वर! तू आरंभ से ही है। तुझसे ऊपर और कोई देवता नहीं है। तेरे जैसा तू ही है, इसलिए तेरा कोई भेद नहीं पा सकता। तेरी कोई तस्वीर नहीं बन सकती, तू स्वयं अपने आप के वश में है।

इस पावन बंद में गुरु पातशाह का फरमान है कि हे वाहिगुरु! तू सब का मूल है, अत: सबको अस्तित्व में लाने वाला केवल तू ही है। तेरे से ऊपर कोई पूजने योग्य हस्ती नहीं है, अत: तुझे ही सब पूजते हैं। तुझे किसी इष्ट देवता की अधीनगी नहीं है। तेरा प्रकाश स्वयं से ही है इसलिए तेरा भेद नहीं पाया जा सकता। तू पांच भौतिक स्वरूप (तस्वीर) से रहित है। तू केवल खुद के ही वश में है। तू किसी के अधीन नहीं है, क्योंकि समस्त शक्तियां तेरे ही अधीन हैं।

कि रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै रिहाकै ॥
कि पाक बिऐब हैं ॥ कि ग़ैबुल ग़ैब हैं ॥१०८॥

हे रहमतों के सागर! तू सबको रोजी देने वाला है। तू सबको धन-वैभव तथा मुक्ति देने वाला है। तू पवित्र एवं कलंक रहित है। तू पूर्णतया अदृश्य है।

इस बंद में गुरु कलगीधर पातशाह उस ईश्वर के विविध गुणों को बयान करते हुए फरमान करते हैं कि हे परमेश्वर! तू सब जीवों को रिजक देने वाला दाता है। तू सब जीवों पर तरस खाने वाला रहमदिल है। तू पवित्र स्वरूप है तथा दोषों-विकारों से पूर्णतया रहित है। कोई विकार, कोई ऐब, कलंक तुझे छू भी नहीं सकता। तू पूर्णतया अदृश्य शक्ति है। तू पूर्णतया गुप्त होते हुए भी सब जगह अस्तित्व में है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र प्रमाण है :

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
(पन्ना ६८४)

कि अफवुल गुनाह हैं ॥ कि शाहान शाह हैं ॥
कि कारन कुनिंद हैं ॥ कि रोज़ी दिहंद हैं ॥१०९॥

हे वाहिगुरु! तू जीवों के पाप काटने वाला है। तू बादशाहों का बादशाह है। तू सब विधियों का विधाता है। तू सबको रोजी देने वाला है।

प्रस्तुत बंद में गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि हे परमेश्वर! तू जीवों के गुनाहों को माफ करने वाला है। तू राजाधिराज है अर्थात् सम्राटों का सम्राट है। तू सभी तरह के संयोग बनाने वाला है और समस्त कारणों का कर्त्ता है। तू अनन दाता सभी जीवों को रोजी-रोटी देने वाला है। यहां विचारणीय पहलू है कि जैसे माता-पिता अपने बच्चों की अनेकों गलतियों पर उन्हें क्षमा कर देते हैं लेकिन वह परमेश्वर तो जीव के कोटिश-कोटिश अपराधों, पापों को नजरअंदाज कर उन्हें माफ कर देता है। उस ईश्वर के पाप-खंडन स्वरूप पर भी गुरदेव कुर्बान जाते हैं।

कि राज़क रहीम हैं ॥ कि करमं करीम हैं ॥
कि सरबं कली हैं ॥ कि सरबं दली हैं ॥११०॥

हे वाहिगुरु! तू सबको रिजन देने वाला है। तू सब पर दया करने वाला है। तू रहमत करने वाला है। तू समस्त ताकतों का मालिक है। तू सब जीवों को नष्ट करने वाला है।

गुरदेव इस बंद में उस सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के विविध गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि हे परवरदिगार! तू समस्त जीवों का अन्न-दाता है। तू दया का सागर है। 'सरबं कली' अर्थात् सबको शक्ति (बल) देने वाला है। 'दली' अर्थात् तू मलियामेट तहस-नहस करने वाला है। उस ईश्वर के जलाल और जमाल रूप का वर्णन इस बाणी में बहुतायता से किया गया है।

कि सरबत्तर मानियै ॥ कि सरबत्तर दानियै ॥
कि सरबत्तर गउनै ॥ कि सरबत्तर भउनै ॥१११॥

हे परवरदिगार! सर्वत्र तेरी ही पूजा-प्रतिष्ठा हो रही है। सब जीवों को सब जगह दान देने वाला तू ही है। तेरी समस्त स्थानों तक पहुंच है। तू समस्त भवनों में मौजूद है।

इस बंद में गुरु पातशाह उसी परमेश्वर का गुणगान करते हुए फरमान करते हैं कि हे वाहिगुरु! तू ही सब जीवों द्वारा सब स्थानों पर पूजनीय है। सारी सृष्टि के जीवों को दातें बखशने वाला भी तू ही है। तेरे लिए कोई भी स्थान अगम्य नहीं है अर्थात् कहीं भी कोई स्थान ऐसा नहीं है जहां तेरी पहुंच न हो, अत: तू सब लोकों में समाया हुआ है। गुरबाणी में अन्यत्र प्रमाण है :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥ (पन्ना ९८८)

अर्थात् वह परमात्मा ही चींटी से हाथी तक सभी जीवों में तथा सभी स्थानों में स्वयं समाया हुआ है।

कि सरबत्तर देसै ॥ कि सरबत्तर भेसै ॥
कि सरबत्तर राजै ॥ कि सरबत्तर साजै ॥११२॥

हे वाहिगुरु! प्रत्येक देश में हर स्थान पर तू ही मौजूद है। प्रत्येक पहरावे में तू ही तो है। सर्वत्र तू ही अपना वेश दिखा रहा है। हर जगह तेरी ही सृजना है।

उपरोक्त बंद में भी गुरु पातशाह उसी परमेश्वर की सर्व-व्यापकता का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि तू सभी देशों में तथा सभी पहनावों में व्यापक है। तू सर्वत्र अपना प्रकाश करने वाला है, क्योंकि तू स्वयं से प्रकाशवान हस्ती है। सभी सृजन-रचना का मूल तू ही है।

कि सरबत्तर दीनै ॥ कि सरबत्तर लीनै ॥
कि सरबत्तर जाहो ॥ कि सरबत्तर भाहो ॥११३॥

हे वाहिगुरु! तू सबको दान देने वाला है। तू सर्वत्र व्यापक है। हर जगह तेरा ही नूर है। सब जगह तेरा ही प्रकाश है।

इस बंद में गुरदेव उस प्रकाश स्वरूप परमेश्वर का गुणगान करते हुए कथन करते हैं कि वही एक दातार पिता सबको दान देने वाला है और सब जगह समाया हुआ है। 'लीनै' शब्द का अर्थ कुछ विद्वानों के अनुसार वापिस लेना में आया है अर्थात् वह ईश्वर ही दातें देने वाला और फिर अपनी ही अमानत को वापिस लेने वाला है। वही ईश्वर सब जगह प्रतिभा वाला है। गुरबाणी मे अन्यत्र भी प्रमाण है :

अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥ (पन्ना ७९५)

कि सरबत्तर देसै ॥ कि सरबत्तर भेसै ॥
कि सरबत्तर कालै ॥ कि सरबत्तर पालै ॥११४॥

हे वाहिगुरु! तू सब जगह मौजूद है, प्रत्येक वेश में भी तू ही है। सब जगह काल स्वरूप, सबको मारने वाला और सब की प्रतिपालना करने वाला भी तू ही है।

उस ईश्वर के प्रतिपालक एवं संहारक रूप का वर्णन करते हुए गुरदेव का फरमान है, हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! समस्त देशों का निवासी, समस्त पहरावों को धारण करने वाला तू ही है। तू सबको नाश करने वाला है तथा तू ही सब की रक्षा करने वाला है, जैसा कि जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है:

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको

वेसु ॥ *(पउड़ी ३०)*

ऐसे अनंत बेअंत प्रभु का युगों से एक ही वेश अर्थात् सत्य-स्वरूप है।

कि सरबत्तर हंता ॥ कि सरबत्तर गंता ॥
कि सरबत्तर भेखी ॥ कि सरबत्तर पेखी ॥११५॥

हे वाहिगुरु! तू सब जीवों को नष्ट करने वाला है। तेरी सब जगह पहुंच है। हर पहरावे में तू ही है। सब जगह के जीवों की देख-रेख भी तू ही करता है।

अर्थात् हे परमेश्वर! तू ही सब का संहारकर्त्ता है। तेरे लिए कोई भी स्थान अगम्य नहीं है। कुछ विद्वानों ने 'गंता' शब्द के अर्थ 'कल्याण' करने वाला माना है। इस आशय से स्पष्ट होता है कि वह परमेश्वर सब की गति अर्थात् कल्याण करने वाला है। व्यापक रूप में तू समस्त वेशों का धारणी है। तू आदि काल से समस्त जीवों की देखभाल करने वाला है अर्थात् समस्त जीवों हेतु सब रूपों में तू ही तू है।

कि सरबत्तर काजै ॥ कि सरबत्तर राजै ॥
कि सरबत्तर सोखै ॥ कि सरबत्तर पोखै ॥११६॥

हे वाहिगुरु! तू समस्त कर्मों को करने वाला है। सर्वत्र तेरा ही प्रकाश है। हर जगह तू ही सब जीवों को मारने वाला और सब जगह तू ही सबको पालने वाला है।

अर्थात् हे ईश्वर! समस्त कार्यों के होने में तेरा ही हाथ है, अत: सारी सृष्टि के कारज तेरे ही कारण संवर रहे हैं। सर्वत्र तेरा ही प्रकाश (शोभा) है। सब जीवों का संहारकर्त्ता एवं पालनकर्त्ता तू ही है। सबको सुखाने वाला और सबको हरा-भरा करने वाला एक तू है।

कि सरबत्तर त्राणै ॥ कि सरबत्तर प्राणै ॥
कि सरबत्तर देसै ॥ कि सरबत्तर भेसै ॥११७॥

हे परवरदिगार! समस्त स्थानों पर तेरा ही बल कार्य कर रहा है। हर जीव तेरी दी हुई जिंदगी जी रहा है। तू हर देश में व्यापक है। समस्त पहरावों में भी तू ही है।

अर्थात् हे वाहिगुरु! तुझ से बाहर कुछ भी नहीं है। सर्वस्व में तेरी ही दी हुई प्राण-वायु का प्रवाह चल रहा है। श्री गुरु नानक देव जी ने बहुत सुंदर वर्णन इस सन्दर्भ में किया है। गुरदेव का फरमान है :

कैसी आरती होइ ॥
भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ *(पन्ना १३)*

अर्थात् कुदरत में तेरी कैसी सुंदर आरती हो रही है! समस्त प्राणियों में चल रही जीवन-रौ (प्राण-वायु अर्थात् हृदय की धड़कनें) मानों तेरी आरती में नगाड़े बज रहे हैं। ठीक यही भाव गुरु कलगीधर पातशाह जापु साहिब के इस बंद में दर्शा रहे है कि समस्त प्राणियों में उसी की पावन ज्योति जग रही है। वे उस ईश्वर का ही गुणगान करते हुए उसी में अभेद हो जाने की प्रेरणा कलयुगी जीवों को दे रहे हैं।

कि सरबत्तर मानियैं ॥ सदैवं प्रधानियैं ॥
कि सरबत्तर जापियै ॥ कि सरबत्तर थापियै ॥११८॥

हे परमेश्वर! तू सब जगह पूजनीय हस्ती है। तू सब जगह प्रमुख है। सर्वत्र तेरी ही आराधना हो रही है। तू हर जगह कायम है।

गुरदेव इस बंद में भी उस परमेश्वर की सर्वोच्यता सिद्ध करते हुए फरमान करते हैं कि दुनिया का प्रत्येक जीव तेरा ही उपासक है। सभी जगह सभी के द्वारा तेरी ही पूजा-अर्चना हो रही है। तू सबका मुखिया अर्थात् प्रधान है। हर चीज अस्थिर है, परिवर्तनशील है, एक तू ही सदैव स्थिर, अटल, अपरिवर्तनशील, सदैव कायम रहने वाला है। उसी ईश्वर की बंदगी सुमिरन, सिफत-सालाह से सदैव कायम रहने वाले सुखों की प्राप्ति हो सकती है।

गुरु-गाथा-४

जड़ाऊ कंगन

*-डॉ. अमृत कौर**

एक बार एक सिख ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लिए एक जोड़ी कंगन बनाए। असीम प्यार और श्रद्धा से शहर के सबसे बड़े सुनियार से अनेक कीमती मोती, माणिक, हीरे, जवाहरात जड़वा कर ये कंगन बनवाए। बड़ी श्रद्धा से उन्हें एक सुंदर रुमाल में लपेटा और चल पड़ा श्री अनंदपुर साहिब की ओर।

श्री अनंदपुर साहिब पहुंचा तो गुरु जी के दरबार के राजसी ठाठ-बाठ, शानो-शौकत को देखकर चकरा गया। पता चला, जब गुरु जी दरबार लगाते हैं तो आलीशान तख्त पर बैठते हैं, घोड़े की सवारी करते हैं, कलगी लगाते हैं और शाही जाहो-जलाल वाले वस्त्र पहनते हैं। उसके मन में संशय उत्पन्न हुआ, इतने राजसी ठाठ-बाठ में रहने वाले गुरु संत कैसे हो सकते हैं? गुरु जी के बारे में पूछा तो पता चला कि वे भ्रमण के लिए शहर के बाहर नदी के तट पर गए हुए हैं। दर्शनों की अधीरता उसे गुरु जी के पीछे ले गई। शहर के बाहर पहुंचा तो देखा कि गुरु जी नदी के किनारे बैठे सामधिलीन हैं। उसने चुपचाप माथा टेका और बैठ गया। थोड़ी देर के बाद गुरु जी ने आंखें खोलीं। सिख ने मस्तक निवाया और जड़ाऊ कंगन उनके चरणों में रख दिए, "गुरु जी! विशेष रूप से आपके लिए बनवा कर लाया हूं। कृप्या स्वीकार कीजिए। मेरा जीवन धन्य हो जाएगा।" परन्तु संशय अब भी मन में बना हुआ था। गुरु जी मुस्करा पड़े और कहने लगे, "भाई गुरसिखा! कंगन तो वाकई बहुत ही सुंदर और कीमती हैं, बड़े प्यार से बनवाए लगते हैं।"

गुरु जी ने एक कंगन उठाया और बड़ी मस्ती से उसे घुमाते हुए नदी में फेंक दिया। सिख अधीर होकर कहने लगा, "गुरु जी! आपने यह क्या किया? ये कंगन तो अत्यन्त कीमती हैं। मैं तो आपके लिए विशेष रूप से बनवा कर लाया हूं। गुरु जी बताइए कि आप ने इसे कहां फेंका है? मैं इसे ढूंढ कर बाहर निकाल लाता हूं।"

गुरु जी ने दूसरा कंगन भी उठाया और निशाना लगाते हुए बताया कि यहां फेंका है। गुरु जी ने सिख के संशय का प्रतीकात्मक शब्दों में उत्तर दे दिया था कि वे संसार के कीचड़ में कमल की तरह पवित्र ढंग से जीते हैं। संसार के ऐश्वर्यों का भोग करते हुए भी उनमें लिप्त नहीं होते। सिख के नेत्र खुल गए और वह उनके चरणों पर गिर पड़ा:

हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, ज़ीरकपुर-१४०५०३*
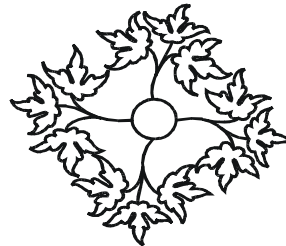
दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-१४

'वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला' के उद्‌घोषक : कवि भाई गुरदास सिंघ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवियों में एक विशेष नाम कवि भाई गुरदास सिंघ का भी है। आप एक आध्यात्मिक प्रवृत्ति के साधू स्वभाव व्यक्ति थे। आपका सारा जीवन रूहानी किरत-कमाई में ही बीता।

कवि गुरदास सिंघ का जन्म संभवत: सियालकोट जिले के एक गांव 'दोबुरजी' में १६५० ई के आस-पास हुआ। आपके पिता भाई दुरगू गुरु-घर के बड़े प्रेमी गुरसिख थे। इसलिए कवि भाई गुरदास सिंघ को बचपन से ही गुरु-घर के प्रति प्रेम एवं समर्पण विरासत में मिला। प्राप्त सूत्रों के अनुसार आपके पूर्वज पहले जिला गुजरांवाला के गांव 'सोधरा' में रहते थे। बाद में वे 'दोबुरजी' में आकर बस गये। आपका जन्म इसी गांव में हुआ।

कवि भाई गुरदास सिंघ अत्यंत ज्ञानवान् और सात्यिक अभिरुचि वाले व्यक्तित्व थे। आपकी तीन रचनाओं के विषय में जानकारी मिलती है। ये तीन रचनायें हैं-

१. वार पातशाही दसवीं की
२. बारहमाह श्री रामचंद्र जी का
३. पर्याय श्री गुरु ग्रंथ साहिब के

'वार पातशाही दसवीं की' कवि भाई गुरदास सिंघ की सबसे महत्वपूर्ण रचना है। आप ऐसे पहले कवि हैं जिन्होंने दशमेश पिता के महान कार्यों को साक्षात् देखा और फिर उन पर 'वार' लिखी। आपकी वार की एक-एक पंक्ति लोकोक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी है। दशमेश पिता की स्तुति, गुरु साहिब के 'गुरु-सिख सिद्धांत' एवं 'खंडे की पाहुल' की महानता के विषय में आपका कथन है :

हरि सचे तखत रचाइआ सति संगति मेला।
नानक निरभउ निरंकार विचि सिधां खेला।
गुरु दास मनाई कालका खंडे की वेला।
पीओ पाहुल खंड धार होइ जनम सुहेला।
संगति कीनी खालसा मनमुखी दुहेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१॥४१॥

कवि भाई गुरदास सिंघ ने अपनी इस 'वार' को पंचम पातशाह के समकालीन एवं श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लिपिकार भाई गुरदास जी की ४० वारों के बाद ४१वीं वार के रूप में जोड़ दिया। बाद में इस वार में और भी अंश जुड़ते चले गये। प्रारंभ में इस वार में १४ पउड़ियां थीं, बाद में सिख मिसलों के उत्कर्ष के समय किसी कवि ने इसमें छह और पउड़ियां जोड़ दीं। इसके पीछे प्रमुख उद्‌देश्य साकारात्मक ही महसूस होता है। इससे मूल रचना की ऊंची कीमत परिलक्षित होती है। परन्तु इन पउड़ियों और मूल पउड़ियों में स्पष्ट फर्क मौजूद है। बाद वाली प्रक्षिप्त पउड़ियों की लय भी अलग है और इनकी तुकों की संख्या भी भिन्न है। मूल पउड़ियों में छह-छह तुकें हैं जबकि बाद वाली पउड़ियों में १८-१८, २०-२० तुकें हैं।

इस वार में कवि भाई गुरदास सिंघ ने जिस प्रकार खालसा पंथ के मूल सिद्धांत,

१/३३८ 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)। मो. ०९४१७२-७६२७१

दशमेश पिता के 'अमृत' और 'अमृत-पान' की महानता का वर्णन किया है वह उनकी तत्संबंधी स्पष्ट सोच एवं दृष्टि का परिचायक है।

कवि भाई गुरदास सिंघ की दूसरी उपलब्ध रचना 'बारहमाह श्री रामचंद्र जी का' है। इसमें वनवास पर चले जाने वाले श्री रामचंद्र जी के वियोग में तड़पने वाले भाई भरत का मार्मिक वर्णन किया गया है। यह काव्य कवि की उत्कृष्ट काव्य-कला का सुंदर नमूना है।

आपने गुरु ग्रंथ साहिब के पर्यायों की रचना भी की है परंतु ये अभी तक किसी भी रूप में प्रकाशित नहीं हुए हैं।

कवि भाई गुरदास सिंघ पहले लम्बे समय तक दशमेश पिता की सेवा में रहते रहे। गुरु साहिब के दक्षिण चले जाने और बाद में ज्योति-जोत समाने के बाद कवि भाई गुरदास सिंघ साधू बन गये और सिंध प्रांत के एक गांव शिकारपुर में जाकर रहने लगे। शिकारपुर में खट वाली धर्मशाला है जहां भाई गुरदास सिंघ रहा करते थे। यहां प्रचलित है कि कवि भाई गुरदास सिंघ ने लगभग १५० वर्ष की आयु भोग कर शरीर का त्याग किया।

कवि भाई गुरदास सिंघ के जद्दी गांव 'दोबुरजी' (सियालकोट) में भी कवि का स्थान बना हुआ है। यहां हर वर्ष २९ जेठ को कवि भाई गुरदास सिंघ की बरसी मनाई जाती थी। देश-विभाजन के समय यह इलाका पाकिस्तान में रह गया और बरसी के आयोजन की परंपरा और आगे न बढ़ सकी। परन्तु *"वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला"* के उद्घोषक कवि भाई गुरदास सिंघ आज भी जन-मानस में अमर हैं।

कविता

श्री गुरु नानक देव जी

जब-जब गहन विषमताओं ने, जग में डाला डेरा।
तब-तब पीड़ित मानवता को, मिला सहारा तेरा।
अत्याचार अनाचारों के, दावानल का हुआ न अंत।
जग के संतापों को हरने, हुए अवतरित नानक संत।
तृप्ता माता के सपूत, बेबे नानकी के भ्राता।
भारत भूतल के अमर प्रणेता, सत् श्री अकाल विधाता।
धन्य हुई ननकाणा धरती, हम उसे शीश झुकाते।
जगतारक गुरु नानक के, चरणों में सुमन चढ़ाते।
हे अवतारी संत शिरोमणि, तेरी अद्‌भुत काया।
वृक्षावरण हट जाने पर, नाग ने की थी छाया।
सब जग तेरा, मानव तेरा, सबका तू निर्माता।
व्यापार में जिनको ध्येय बनाया, तूने सच्चा सौदा।
आहार दान की धनिक और निर्धन ने ठानी।
खून-पसीने की कमाई के, भेद की अमर कहानी।
जलाभाव में गुरु नानक का, हुआ पंजा ललाम।
जल का झरना बहा जहां, उसका पंजा साहिब है नाम।
जब गुरु नानक को 'बाबर' ने, जेल-यातना दी थी।
तब ईश-शक्ति ने आटा पीस, उनकी रक्षा की थी।
आश्चर्यचकित होकर बाबर ने, शरण उन्हीं की ली थी।
गुरु नानक साहिब के चरणों में, पड़ क्षमा-याचना की थी।
गुरु नानक की बाणी गाता, विस्मत सिख समाज।
भवसागर से पार उतारे, नानक नाम जहाज।

-श्री प्रेमचंद्र विद्यार्थी, कार्यालय पी. के. प्रिंटर्स, पंलदी चौक, दमोह।

आनन्द का पात्र

–डॉ. दादूराम शर्मा 'कोविद'*

आनन्द का पात्र शतच्छिद्र हो गया है!
आती उषाएं लिये स्वर्णिम उपहार,
झूमती लताएं पहन नवल सुमनहार,
मन्थर है गंधवह लिये सुरभिभार,
करती अविराम प्रकृति नूतन श्रृंगार,
हमारा प्रभात किन्तु कहां खो गया है?
आनन्द का पात्र शतच्छिद्र हो गया है!
जाते वसन्त मौन ग्रीष्म दुर्निवार,
वर्षा की सरसता पर नीरस संसार,
आती उल्लास लिये शारदो बहार,
नवजीवन शस्यहीन क्षेत्र हैं निस्सार,
कटुता का बीज यहां कौन बो गया है?
आनंद का पात्र शतच्छिद्र हो गया है।
घिस रहा जीवन कलपुर्जा बन हाय,
विचलित-उद्देश्य मनुज कितना निरुपाय!
विश्रृंखल समाज, विजित मानव समुदाय,
विजयी है अर्थ, प्राप्य क्षणिक सुख-निकाय।
जीवन का साधन अब साध्य हो गया है!
आनंद का पात्र शतच्छिद्र हो गया है।
पीसता मनुष्यता को स्वार्थों का चक्र,
निगलता सुरत्व को है असुरता वक्र,
उड़ रहा झंझा में आज विश्व यह समग्र,
आश्रय को खोकर असहाय दीन व्यग्र,
आत्मा का मन्द नाद मौन हो गया है।
आनंद का पात्र शतच्छिद्र हो गया है!
श्रद्धा विश्वास अभय जीवन के मूल,
अनास्था-जड़ीभूत मानव उन्हें भूल!
भौतिकता की बाढ़ में उखड़कर समूल,
बहता अविराम नहीं पाता कहीं कूल!
धर्म का जीवन्त स्रोत शुष्क हो गया है!
आनन्द का पात्र शतच्छिद्र हो गया है।
परस्पर संघर्षजन्य विनाशकता आज,
करती बीभत्स नृत्य त्याग लोक लाज,
गर्वोन्नत भौतिकता, ग्राहय धर्म त्याज्य,
जब सहर्ष स्वीकार हमें निशाचरता-राज्य!
तभी तो कृपालु हमसे रुष्ट हो गया है।
आनन्द का पात्र शतच्छिद्र हो गया है।

शब्दार्थ– *आनन्द का पात्र = मानव शरीर, मानव जीवन। मथर = बहुत धीमा। गंधवह = पवन, वायु। विश्रृंखल = विखरा हुआ, बंटा हुआ। सुख-निकाय = सुख का सम्रह। साध्य = जिसे पाना है, लक्ष्य। जीवन का साधन = धन जीवन का साधन है। नक्र = मगरमच्छ, घड़ियाल। मन्द्र = गम्भीर। नाद = ध्वनि। शतच्छिद्र = सैंकड़ों या अगणित छेदों वाला। उभय = दोनों। कूल = किनारा। बीभत्स = घिनौना। ग्राहव धर्म त्याज्य = ग्रहण करने या अपनाने योग्य धर्म त्यागने योग्य हो गया है।*

*****प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)–४८०६६१

कविताएं

गाथा सिखों के बलिदान की

सिखों ने दुखी लोगों की रक्षा हेतु,
देश के सम्मान की रक्षा हेतु,
बहुत बड़ा सहयोग किया है।
बहुत बड़ा बलिदान दिया है।
जब देश पर आक्रांताओं के हमले
हो रहे थे बार-बार,
दबे-कुचले लोगों का जीना था दुश्वार।
उनके धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज,
हो रहे थे प्रतिबंधित,
धर्म बदलने का दबाव था,
देश की संस्कृति पर संकट के बादल थे,
तब सिखों ने पीड़ितों की रक्षा हेतु
सैनिक बन रक्षा की, देश के सम्मान की,
संस्कृति की, स्वाभिमान की।
संस्कृति का सम्मान बनाये रखने हेतु
हंस-हंस शीश कटाये
आक्रांताओं से डटकर टक्कर ली,
सिर दिया पर झुके नहीं तनिक भी
लोगों की रक्षा हेतु स्वयं ढाल बन गये
सिख रक्षक हैं देश के सम्मान के
सिख रक्षक हैं देश की संस्कृति के
किन शब्दों में करें प्रशंसा?
आपने रक्षा की देश के स्वाभिमान की।
गति रोकी आक्रांताओं के अभिमान की।
लाट प्रज्वलित सदा रहेगी,
बलिदानों की मशाल की।
सारे जहां में अमर रहेगी,
गाथा सिखों के बलिदान की।

-श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, अग्रवाल न्यूज एजेन्सी हटा, दमोह (म. प्र.)-४७००७५

आह्वान

उठो मेरे देशवासियो,
जागो!
गुरमति की ओट लेकर, गुरबाणी से दिशा पाकर,
नवयुग का सूत्रपात करो।
पारस्परिक वैमनस्य भुलाकर,
अन्याय, अधर्म का प्रतिकार करो।
अज्ञान-तिमिर भगा,
ज्ञान की उजास भरो।
मूल्यविहीन, दिशाहीन हो रहे समाज को,
मूल्यबोध, दिशाबोध कराने का प्रयास करो।
शून्य हो रही,
पारस्परिक रिश्तों की ऊष्णता का,
पुनः अहसास करो।
हृदयों का परिष्कार करो।
स्वहितों के साथ
देश-हित का भी मान करो।
उठो, मेरे देशवासियो,
जागो!
नवयुग का सूत्रपात करो।

-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', एस. ए जैन कॉलेज, अम्बाला शहर।

सिखों के केशों के साथ छेड़-छाड़ कदापि सहन् नहीं की जा सकती : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : २९ अगस्त। सिख धर्म 'किरत करो, नाम जपो, वंड छको' जैसे सुनहरी उसूलों पर आधारित है। केश सिख के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग हैं। परंतु दुख से कहना पड़ता है कि लोकतंत्र के अलंबरदार अमेरिका जैसे देश में जेल अधिकारियों की ओर से बल-प्रयोग द्वारा किसी सिख के केश कत्ल किये जाने की घटना अत्यंत दुखदायक एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। कभी विदेशों में हवाई अड्डों पर सिखों को सुरक्षा के बहाने दस्तार उतारने के लिए विवश किया जाता है, कहीं स्कूलों में सिख बच्चों द्वारा सजाई दस्तार को घृणा की दृष्टि के साथ देखा जाता है, जो बहुत ही दुखदायक रुझान है। सिखों को न्याय दिलाने के लिए केंद्र सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए। इन विचारों का प्रगटावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने यू. एस. ए में फलोरीडा स्टेट की डयूवल काऊंटी जेल के अधिकारियों की ओर से कारावास में बंद एक सिख स. जगमोहन सिंघ (आहूजा) के केश कत्ल किये जाने संबंधी प्रकाशित समाचार पर प्रतिक्रिया के तौर पर यहां से जारी एक प्रेस नोट में किया। उन्होंने कहा कि यह घटना बहुत दुखदायक तथा निंदनीय है और इस घटना से समस्त सिख-जगत में रोष पाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी भी सिख के केशों का अपमान या कत्ल किया जाना सिख का अपमान है और धार्मिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप है जिसको किसी भी कीमत पर सहन् नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि इस घटना के संबंध में मानव अधिकार आयोग को भी लिखा जा रहा है।

उन्होंने कहा कि और भी अधिक दुख की बात यह है कि स. आहूजा की ओर से पेश किये पक्ष की मान्यवर न्यायाधीश ने अवहेलना कर दी। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएं नस्ली भेदभाव एवं घृणा को जन्म देती हैं जो कि मानवता के लिए घातक हैं। ऐसा रुझान अत्यंत दुखदायक एवं दुर्भाग्य वाला है। उन्होंने कहा कि किसी भी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य की भावनाओं को आघात पहुंचाने का अधिकार नहीं। उन्होंने दिल्ली स्थित यू. एस. ए के दूतावास और भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ को अपील की कि उपर्युक्त घटना का नोटिस लिया जाए। उन्होंने भारत सरकार को सिखों की पहचान और धार्मिक चिन्हों को विश्व स्तर पर जाहिर करने के प्रयास करने और भारत में दिल्ली तथा अन्य प्रमुख नगरों में स्थित विभिन्न देशों के दूतावासों को पत्र लिखे जाने के लिए भी कहा है।

फतेहगढ़ साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी का शिलान्यास किया गया

फतेहगढ़ साहिब : १ सितंबर। फतेहगढ़ साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम प्रकाश दिवस के शुभ अवसर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरतागद्दी की तीसरी शताब्दी को समर्पित श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी का नींव-पत्थर स. प्रकाश सिंघ बादल मुख्यमंत्री पंजाब ने रखा। इस अवसर पर स. प्रकाश सिंघ बादल ने कहा कि यह यूनीवर्सिटी खोज की एक विलक्षण संस्था होगी जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सरबत्त के भले का संदेश दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाएगी। उन्होंने कहा कि इसमें सिख धर्म के साथ-साथ अन्य धर्मों के बारे में भी शिक्षा प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि यूनीवर्सिटी स्थापना के बड़े उद्यम का श्रेय स. अवतार सिंघ प्रधान शिरोमणि गु: प्र: कमेटी को जाता है और इसकी स्थापना से जत्थेदार गुरचरण सिंघ टौहड़ा का सपना मूर्तिमान हुआ है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि गुरुद्वारा प्रबंध के साथ-साथ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने विद्या के क्षेत्र में पहले ही महत्वपूर्ण कदम उठाये